

न्यू इंडिया

समाचार

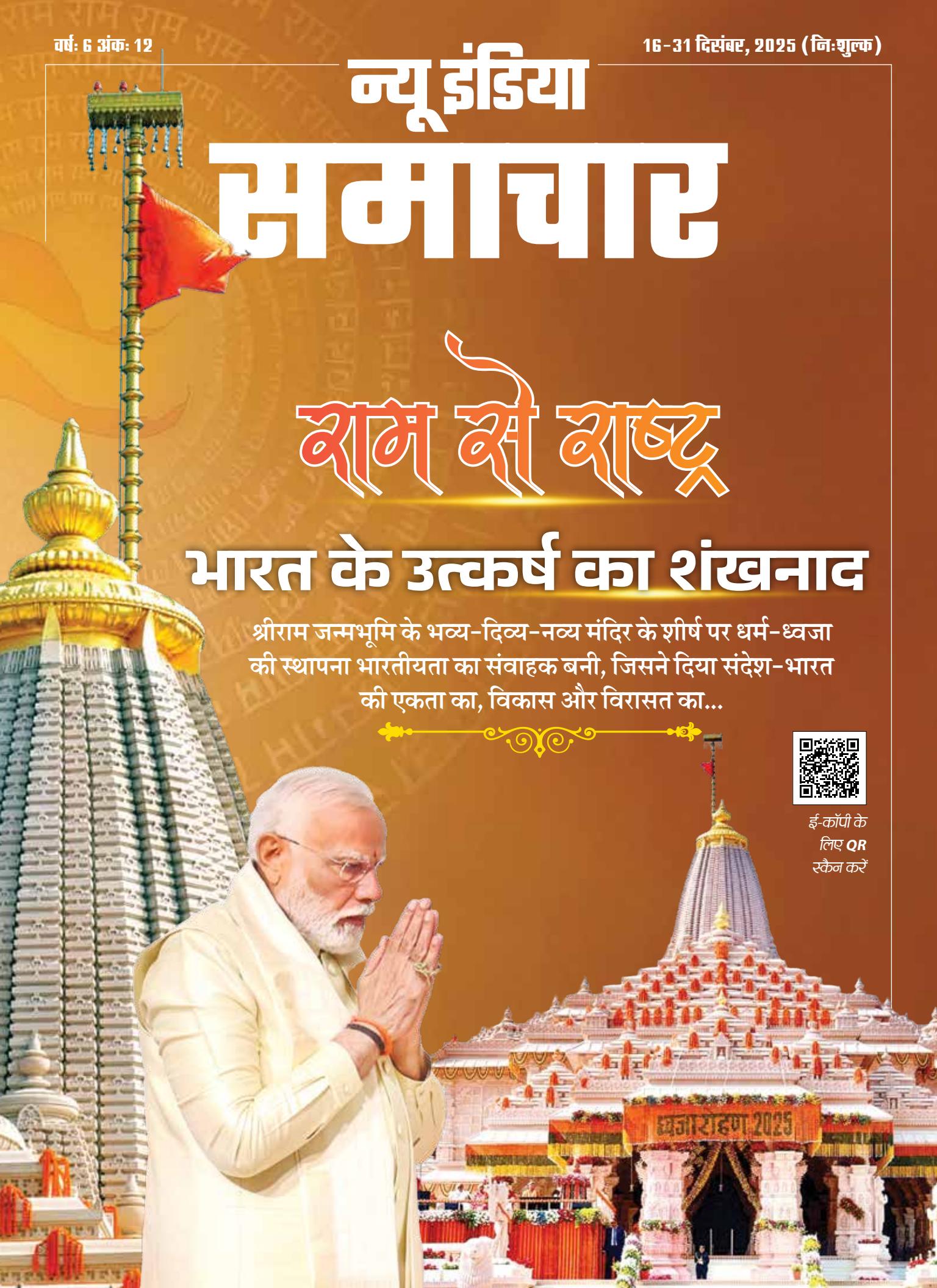
कानून की वार्षिक

भारत के उत्कर्ष का रंगनाम

श्रीराम जन्मभूमि के भव्य-दिव्य-नव्य मंदिर के शीर्ष पर धर्म-ध्वजा की स्थापना भारतीयता का संवाहक बनी, जिसने दिया संदेश-भारत की एकता का, विकास और विरासत का...



इ-कॉपी के
लिए QR
स्कैन करें



मन की बात

सामूहिक प्रयासों को जन-सामान्य तक लाने का बेहतरीन मंच



‘मन की बात’ कार्यक्रम वह मंच है जिसके जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत और विदेश में रहने वाले लोगों से सीधे जुड़ते हैं। इस कार्यक्रम में वे राष्ट्रीय मुद्दों पर अपने विचार साझा करते हैं। समाज में सकारात्मक बदलाव लाने वाले लोगों की कहानियों को सामने लाते हैं और विकास एवं सामाजिक अभियानों में जनता की भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। ‘मन की बात’ देश के लोगों की उपलब्धियों, सामूहिक प्रयासों को जन-सामान्य के सामने लाने का एक बेहतरीन मंच है। 30 नवंबर के ‘मन की बात’ कार्यक्रम के संपादित अंश...

- **प्रेरणादायक पलों का साक्षी :** 26 नवंबर को संविधान दिवस पर सेंट्रल हॉल में विशेष कार्यक्रम हुआ। वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर देशव्यापी उत्सवों की शुरुआत हुई। अयोध्या में राम मंदिर पर पवित्र धर्म ध्वजा का ऐतिहासिक आरोहण हुआ। कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में पांचजन्य स्मारक का लोकार्पण हुआ। नवंबर का महीना आस्था, संस्कृति, संविधान और राष्ट्र गौरव का अद्वितीय संगम बन गया।
 - **भारत की नई सोच :** हैदराबाद में दुनिया की सबसे बड़ी लीप इंजन MRO फैसिलिटी के उद्घाटन के साथ, भारत ने एयरक्राफ्ट मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल सेक्टर में एक बड़ा कदम उठाया है। INS ‘माहे’ को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। यह भारत की नई सोच, इनोवेशन और यूथ पावर का प्रतिबिंब बना है।
 - **ऐतिहासिक रिकॉर्ड :** कृषि क्षेत्र में देश ने बड़ी उपलब्धि हासिल की। भारत ने 357 मिलियन टन अनाज उत्पादन के साथ एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया है। 10 साल पहले की तुलना में, भारत का अनाज उत्पादन 100 मिलियन टन बढ़ा है।
 - **विश्वास की सफलता :** चंद्रयान-2 की असफलता ने वैज्ञानिकों को रोका नहीं। उसी दिन उन्होंने चंद्रयान-3 की सफलता की कहानी लिखनी शुरू कर दी। यही कारण है कि जब चंद्रयान-3 ने सफल लैंडिंग की तो वो सिर्फ एक मिशन की सफलता नहीं थी। वो तो असफलता से निकलकर बनाए गए विश्वास की सफलता थी।
 - **नए रिकॉर्ड :** आज, भारत शहद प्रोडक्शन में नए रिकॉर्ड बना रहा है। 11 साल पहले, देश में शहद का प्रोडक्शन 76,000 मीट्रिक
- टन था। यह बढ़कर अब 1.5 लाख मीट्रिक टन से अधिक हो गया है। बीते कुछ वर्षों में शहद का एक्सपोर्ट भी तीन गुना बढ़ा है।
- **नवानगर के जाम साहब :** दक्षिणी इजराइल के मोशाव नेवातिम में गुजरात के नवानगर के जाम साहब की प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह बहुत ही विशेष सम्मान था। पिछले वर्ष पोलैंड के वारसो में मुझे जाम साहब के स्मारक पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने का सौभाग्य मिला था।
 - **प्राकृतिक कृषि :** पढ़े-लिखे प्रोफेशनल युवा अब प्राकृतिक कृषि को अपना रहे हैं। प्राकृतिक कृषि भारत की प्राचीन परंपराओं का हिस्सा रही है और हम सभी का कर्तव्य है कि धरती मां की रक्षा के लिए इसे निरंतर बढ़ावा दे।
 - **काशी-तमिल संगमम :** काशी-तमिल संगमम उन सभी लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है जिन्हें तमिल भाषा से लगाव है। काशी के लोग हमेशा बताते हैं कि काशी-तमिल संगमम का हिस्सा बनना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। इस बार काशी-तमिल संगमम 4.0 की थ्री-*Learn Tamil*-तमिल करकलम् है।
 - **आत्मनिर्भरता :** जब भारत के सुरक्षा तंत्र को मजबूती मिलती है तो हर भारतीय को गर्व होता है। यह हम सबके लिए गर्व की बात है कि हमारी नौसेना बहुत ही तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही है।
 - **वोकल फॉर लोकल :** मुझे खुशी है कि देश के लाखों लोगों ने ‘वोकल फॉर लोकल’ की भावना को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। मैं हमेशा आप सभी से ‘वोकल फॉर लोकल’ के मंत्र को आगे बढ़ाने का आग्रह करता हूं।



न्यू इंडिया

समाचार

वर्ष: 6, अंक: 12 | 16-31 दिसंबर, 2025

प्रधान संपादक

धीरेन्द्र ओझा

प्रधान महानिदेशक

पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

मुख्य सलाहकार संपादक

संतोष कुमार

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक

पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक

अखिलेश कुमार

चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन

सुमित कुमार (अंग्रेजी)

रजनीश मिश्रा (अंग्रेजी)

नदीम अहमद (उर्दू)

सीनियर डिजाइनर

फूलचंद तिवारी

डिजाइनर

अभय गुप्ता

सत्यम सिंह



13 भाषाओं में उपलब्ध
न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने
के लिए क्लिक करें।

<https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx>

न्यू इंडिया समाचार के पुराने
अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें

<https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx>

X न्यू इंडिया समाचार के बारे में
लगातार अपडेट के लिए फॉलो
करें: @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर...

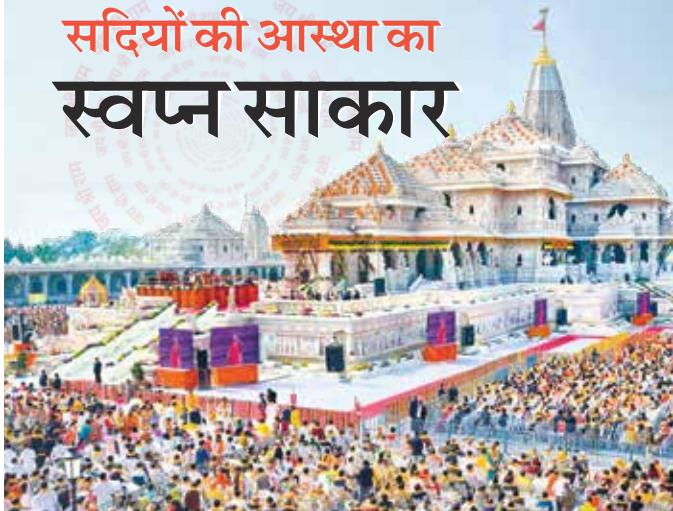
आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

धर्म-ध्वजारोहण के साथ अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण पूर्ण

सदियों की आस्था का

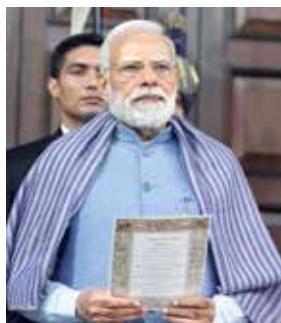
स्वप्न साकार



वर्ष-2025, जिसकी
शुरुआत आध्यात्मिक
समागम भाषाकुम्भ से
हुई, जिसने तमाम रिकॉर्ड
बनाए। सांस्कृतिक
गैरिक से भरे इस वर्ष का
समापन अयोध्या में श्रीराम
जन्मभूमि मंदिर निर्माण
की पूर्णता के प्रतीक
बने धर्म ध्वजारोहण के
पैसे पुनीत कार्य से हुआ
जिसका इंतजार सदियों
से था। लीटे 11 लर्डों के
सेवाकाल में सांस्कृतिक
विरासत का पुनरुत्थान
समग्र विकास का माध्यम
बना है और 140 करोड़
नागरिक बने हैं इसके
साथी... | 10-33

संविधान दिवस

भारतीय संविधान : राष्ट्र
के वर्तमान और भविष्य
का मार्गदर्शक



26 नांवर को संविधान दिवस
के अवसर पर संविधान सळन
के केंद्रीय लक्ष्य में संविधान
दिवस समारोह का किया गया
आयोजन। | 7-9



समानता, सहयोग और
समाधान का शिखर सम्मेलन

पीएम मोदी ने जी-20 के
शिखर सम्मेलन के कई सारों
को संबोधित किया। | 52-55

समाचार सार

व्यक्तित्व : रामानंद सागर

घर-घर तक धारावाहिक के जरिये पहुंच रामायण की कहानी

गुरुओं की परंपरा, राष्ट्र के चरित्र, संस्कृति और मूल भावना का आधार
नौवें सिख गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें बलिदान दिवस पर नमन | 34-35

भारत का उभरता विकास मॉडल विश्व के लिए नई प्रेरणा

छठे रामनाथ गोयनका व्याख्यान में पीएम मोदी का संबोधन | 36-37

श्रम की चौगुनी शक्ति...सबका सम्मान, सबकी सुरक्षा

पीएम मोदी के 'श्रमेव जयते' के मंत्र से चाक-चौबंद 4 श्रम संहिताएं लागू | 38-41

भारत में अब लगेंगी आरईपीएम की एकीकृत स्वदेशी फैक्ट्री

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रेलवे की दो मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना को भी दी मंजूरी | 42-43

आधुनिकतम सुरक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ता राष्ट्र

डीजीपी कॉफेस बदलते दौर में तकनीक के साथ चलने का बना मंच | 44-45

एविएशन और शिपिंग सेक्टर को मिलेगी नई गति

सफ्रान एवरक्रोफ्ट इंजन सर्विसेज केंद्र का पीएम मोदी ने किया उद्घाटन | 46

प्राकृतिक खेती...ग्लोबल हब बनने के रास्ते पर भारत

पीएम मोदी ने दिवा वन एकड़, वन सीजन का मंत्र | 47-49

विकसित भारत की नई शक्ति 'परमाणु ऊर्जा'

भारत वैज्ञानिक परमाणु ऊर्जा शक्ति वाले राष्ट्रों की श्रेणी में बढ़ रहा है आगे | 50-51

युगों-युगों तक जगमगाती रहेगी सिनेमा की रोशनी

56वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का समापन | 56-57

भारत का Gen Z हर क्षेत्र में दे रहा नया समाधान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्काईर्डल इन्फिनिटी कैंपस का किया उद्घाटन | 58

खेल के मैदान में भारत का परचम, बढ़ाया देश का मान

पीएम मोदी ने भारतीय महिला क्रिकेट की विजयी टीम के साथ किया संवाद | 59

श्रद्धांजलि: भारतीय सिनेमा के एक युग का अंत

अभिनेता धर्मेंद्र के निधन पर राष्ट्र की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि | 60

संपादक की कलम द्ये...

सांस्कृतिक विरासत पर गर्व का अमिट अध्याय बना वर्ष- 2025

सादर नमस्कार।

नववर्ष की शुरुआत जहां नए संकल्प लेने का अवसर होता है, वहीं उसका आखिरी महीना, यानी दिसंबर, उसकी समीक्षा के लिए महत्वपूर्ण होता है। संकल्प अगर सिद्धि में बदलता है तो मन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है जो अगले वर्ष की ओर अधिक उत्साह से आगे बढ़ने का जोश प्रदान करता है। वर्ष 2025 की शुरुआत विश्व के सबसे विशाल आध्यात्मिक समागम महाकुम्भ के साथ हुई थी तो समापन की ओर बढ़ता यह वर्ष अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण की पूर्णता के शंखनाद का साक्षी बना है। यह ऐसा वर्ष बना है जो भारत की गौरवमयी सांस्कृतिक विरासत के लिए सदियों तक याद किया जाएगा। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर 25 नवंबर को धर्म-ध्वजा के आरोहण ने संदेश दिया है- भारत की एकता का, विकास और विरासत का। यह ध्वज भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक बना है तो 140 करोड़ नागरिक भी राम राज्य की नीति-सिद्धांतों के अनुरूप नया भारत बनाने को तत्पर हैं।

आजादी के इस अमृत काल में भगवान् श्रीराम जैसी संकल्प शक्ति ही देश को नई ऊंचाई पर ले जाएगी। भगवान् राम ने अपने वचन में, अपने विचारों में जिन मूल्यों को गढ़ा, वही सबका साथ-सबका विकास की प्रेरणा है और सबका विश्वास-सबका प्रयास का आधार है। सही अर्थों में वही संकल्प शक्ति बीते कुछ वर्षों में विकसित भारत का आधार बनी है।

निःसंदेह, राष्ट्रीय एकता हो या फिर नागरिक कर्तव्य बोध, सांस्कृतिक विरासत एक कड़ी का काम करती है जो देश को ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को भी भारत से जोड़ती है। इसी सोच से सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करता भारत अपने अद्भुत गौरवशाली इतिहास के साथ वर्तमान में नए आयाम जोड़ रहा है। साथ ही, विकास और विरासत को आत्मसात करते सुनहरे भविष्य की पटकथा लिख रहा है। सांस्कृतिक विरासत पर गर्व का अमिट अध्याय बना वर्ष 2025 का हमारा अंतिम अंक इसी सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रयासों को ही समर्पित है।

इसके अलावा व्यक्तित्व की कड़ी में धारावाहिक के माध्यम से रामायण की कहानी घर-घर तक पहुंचाने वाले रामानंद सागर, संविधान दिवस, चार श्रम संहिता के लागू होने, जी-20, इफ्फी, परमाणु ऊर्जा पर विशेष सामग्री, केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पखवाड़े भर के कार्यक्रमों को इसमें शामिल किया गया है।

साथ ही, पत्रिका के इनसाइड पेज पर मन की बात और बैक कवर पर सुशासन दिवस पर विशेष सामग्री को समाहित किया गया है।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहें।

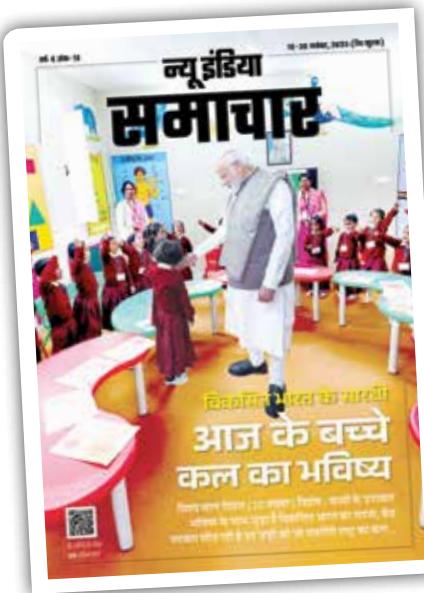
(धीरेन्द्र ओझा)



हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।

<https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx>

आपकी बात...



देश के विकास और समसामयिकी की मिलती है जानकारी

मेरा नाम शक्तिदासन एम है और मैं तमिलनाडु के निदामंगलम शहर का रहने वाला हूं। मैं इस पत्रिका से बहुत प्रभावित हुआ हूं और यह देश के विकास और समसामयिक मुद्दों के बारे में जानकारी देती है। यह पत्रिका प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों और नौकरी चाहने वालों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ की तरह है।

sakthidasan87@gmail.com

देश भर की जानकारी के संग्रह से हमारा ज्ञानवर्द्धन

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका देश भर की जानकारी के संग्रह से हमारा ज्ञानवर्द्धन करती है। तेलुगु भाषा में कॉपी अच्छी है। केंद्र सरकार आदिवासी विकास के लिए सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक न्याय लाकर अच्छा काम कर रही है। पत्रिका में प्रकाशित योजनाएं और नीतियां सारगर्भित होती हैं। यह पत्रिका देश की तरक्की का एक बहुत अच्छा प्रारूप प्रस्तुत करती है।

eswarao.rayavarapu@gmail.com

नवीन योजना से करा

रही है परिचित

मैं लगभग एक साल से न्यू इंडिया समाचार पढ़ रहा हूं। संयोग से मुझे यह पत्रिका महाविद्यालय में मिली। तब से मैं इसे लगातार पढ़ रहा हूं। इस पत्रिका के संबंध में मैं यह कहना चाहूंगा कि यह पत्रिका मुझे नवीन योजना और उससे जुड़ी जानकारी से परिचित करा रही है। इसकी भाषा बहुत सरल है, इसमें दी गई जानकारी और आंकड़े सटीक होते हैं। सरकार के द्वारा अप्रूव इस पत्रिका में जानकारी पूर्ण लेख प्रकाशित करने के लिए मैं धन्यवाद देता हूं।

bidyanand1101@gmail.com

बेहतरीन प्रस्तुतिकरण...

मुझे न्यू इंडिया समाचार पत्रिका नियमित मिलती रही है। मुझे यह बहुत ज्यादा सूचना देने वाली लगती है। साथ ही इसे अच्छे से पेश किया जाता है। मैं आपसे आग्रह करना चाहूंगा कि कृप्या कम्युनिटी रेडियो पर एक फीचर कवर करने पर विचार करें, क्योंकि यह एक उभरता हुआ और असरदार सेक्टर है। यह पूरे देश में स्थानीय संचार को मजबूत कर रहा है। ऐसी स्टोरी जमीनी मीडिया की भूमिका और सामाजिक विकास में इसके योगदान को हाईलाइट करने में बहुत मदद करेगी।

एन.ए. शाह अंसारी

ansari.youngindia@gmail.com

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-1077,
सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003.
ईमेल- response-nis@pib.gov.in



न्यू इंडिया समाचार को आकाशवाणी के एफएम गोल्ड पर हर शानिवार-रविवार को दोपहर 3:10 से 3:25 बजे तक सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।



राष्ट्रीय नियन्त्रण विभाग

भारत सरकार ने 'युवा एआई फॉर ऑल' का किया शुभारंभ

हर नागरिक तक एआई पहुंचाने की दिशा में बड़े परिवर्तन की शुरुआत

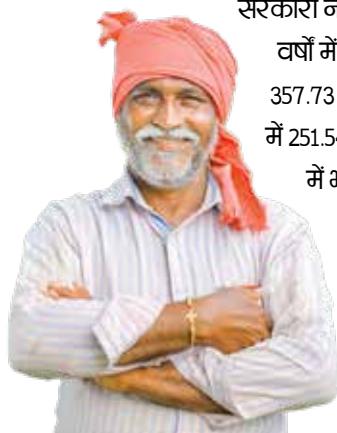
सभी भारतीय, विशेष रूप से युवाओं को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की दुनिया से परिचित कराने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने 'युवा एआई फॉर ऑल' का शुभारंभ किया है। भारत एआई मिशन के अंतर्गत शुरू किया गया यह अपनी तरह का पहला निःशुल्क पाठ्यक्रम है। इस प्लेटफॉर्म पर 4.5 घंटे में कहीं भी, कभी भी सीखने की सुविधा उपलब्ध है। सीखने के बाद सरकार की ओर से प्रमाणपत्र भी मिलता है। इस पहल का उद्देश्य 1 करोड़ नागरिकों को मूलभूत एआई कौशल से सशक्त बनाना है। यह पाठ्यक्रम वैश्विक ज्ञान को भारत के संदर्भ के साथ जोड़ता है और नैतिक, द्वितीय पूर्ण एवं समावेशी एआई के उपयोग पर केंद्रित है।



खाद्यान्न उत्पादन में टूटे सारे रिकॉर्ड कृषि क्षेत्र में जुड़े सफलता के नए अध्याय

सफलता के नए अध्याय जोड़ते हुए देश में खाद्यान्न उत्पादन फसल वर्ष 2024-25 में 8% बढ़कर रिकॉर्ड 35.77 करोड़ टन हो गया जो फसल वर्ष 2023-24 (जुलाई-जून) में 33.23 करोड़ टन था। केंद्रीय कृषि मंत्री

शिवराज सिंह चौहान का मानना है कि रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन किसानों के प्रयासों और व्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि एवं सरकारी गतियों का नतीजा है। खाद्यान्न उत्पादन बीते 10 वर्षों में 106 मिलियन टन बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में 357.73 मिलियन टन हो गया है। यह वित्त वर्ष 2015-16 में 251.54 मिलियन टन था। सरकार के तिलहन मिशन में भी आशानुकूल उपलब्धि मिली है। वर्ष 2023-24 में 39.67 मिलियन टन के मुकाबले 8% से भी ज्यादा वृद्धि दर्ज की गई है।



ई-जागृति से उपभोक्ता सशक्त: 1.27 लाख मामलों का निपटारा

उपभोक्ता अधिकार संरक्षण को मजबूत करने के लिए ई-जागृति प्लेटफॉर्म तेजी से एक प्रभावी डिजिटल शिकायत निवारण प्रणाली के रूप में उभरा है। उपभोक्ता मंत्रालय के मुताबिक, 1 जनवरी 2025 को लॉन्च होने के बाद से इस प्लेटफॉर्म पर 1,388 अनिवारी भारतीयों सहित अब तक 2.75 लाख से ज्यादा उपभोक्ता रजिस्टर हो चुके हैं। 13 नवंबर तक प्लेटफॉर्म पर 1.30 लाख से अधिक शिकायतें दायर की गई जिनमें से 1.27 लाख से ज्यादा मामलों का निपटारा हो चुका है। यह प्लेटफॉर्म विदेशों से शिकायत दर्ज करने, वर्चुअल सुनवाई और वास्तविक समय ट्रैकिंग की सुविधा प्रदान करता है जिससे सभी के लिए सुलभ व्याय सुनिश्चित हो रहा है। एआई-संचालित बहुभाषी सुलभ इंटरफेस से उपभोक्ताओं को वास्तविक समय पर ट्रैकिंग करने में भी आसानी हुई है।





राष्ट्रीय पहचान डेटाबेस की सबसे बड़ी सफाई...

मृतकों के 2 करोड़ आधार आईडी बंद

सटीक और विश्वसनीय डेटा से बेहतर निर्णय लेने, दक्षता बढ़ाने और समस्याओं को हल करने में मदद

मिलती
है। यहीं
वजह है
कि भारतीय
विशिष्ट



पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) ने राष्ट्रीय डेटाबेस की सबसे बड़ी सफाई प्रक्रिया के तहत 2 करोड़ से ज्यादा मृत व्यक्तियों के आधार नंबर बंद कर दिए हैं। इसका उद्देश्य पहचान की सुरक्षा बढ़ाना, धोखाधड़ी रोकना और सब्सिडी के दुरुपयोग को समाप्त करना है।

यूआईडीएआई ने भारत के महापंजीयक, राज्य और विभिन्न केंद्रीय सरकारी विभागों से मिले डाटा के आधार पर यह फैसला किया है। यूआईडीएआई ने यह भी स्पष्ट किया है कि किसी भी व्यक्ति को आधार संख्या कभी भी पुनः आवंटित नहीं की जाती। यूआईडीएआई ने

MyAadhar पोर्टल पर मृत व्यक्ति की सूचना देने की एक पहल भी शुरू की है। इसमें परिवार का सदस्य जरूरी साक्ष्य, स्वयं एवं मृत व्यक्ति का आधार नंबर के साथ प्रमाणीकरण करने के साथ ही मृत व्यक्ति की पंजीकरण संख्या देकर आधार नंबर बंद करने की सूचना दे सकता है।



myAadhar पोर्टल पर
जाने के लिए रुकेन करें।



भारतीय नौसेना के युद्धपोत माहे का जलावतरण, प्रतीक चिन्ह का अनावरण

स्वदेशी जहाज निर्माण यात्रा में एक और मील का पत्थर स्थापित करते हुए भारतीय नौसेना ने मुंबई के नौसेना डॉक्यार्ड में माहे श्रेणी के पहले पनडुब्बी रोधी युद्धक उथले जलायन (एसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी) माहे का जलावतरण किया। इससे पहले इसका प्रतीक चिन्ह का अनावरण किया गया। जहाज के शिखर पर 'उरजी' अंकित है जो कलारीपर्यटू की लचीली तलवार है। यह चपलता, सटीकता एवं घातकता का प्रतीक है। माहे का निर्माण कोच्चि स्थित कोचीन शिपर्यार्ड लिमिटेड (सीएसएल) में किया गया है। यह आत्मनिर्भर भारत पहल का एक अत्याधुनिक उदाहरण है। जहाज का आदर्श वाक्य "साइलेंट हंटर्स" है जो इसकी गोपनीयता, सतर्कता और अटूट संकल्प का प्रतीक है। यह जहाज छोटा होते हुए भी शक्तिशाली है। इसे पनडुब्बियों का पता लगाने, तटीय गश्त करने और देश के महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसका निर्माण 80 प्रतिशत से ज्यादा स्वदेशी सामग्री से हुआ है।



“नई चेतना - पहल बदलाव की” अभियान के चौथे संस्करण का शुभारंभ

जेंडर समानता और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने “नई चेतना - पहल बदलाव की” अभियान के चौथे संस्करण का शुभारंभ किया है। यह राष्ट्रीय अभियान ग्रामीण भारत में महिलाओं की सुरक्षा, गरिमा और आर्थिक भागीदारी को मजबूत करने की दिशा में एक जनआंदोलन का रूप ले चुका है। साथ ही, नई चेतना अभियान महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है। इसमें संपत्ति, ऋण, कौशल और बाजार तक महिलाओं की पहुंच बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि उनके लिए उद्यमिता और आजीविका के अवसरों का विस्तार हो। यह देशव्यापी अभियान, ग्रामीण विकास मंत्रालय के अंतर्गत दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा आयोजित की जा रही है। अभियान 23 दिसंबर 2025 तक देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में चलेगा।

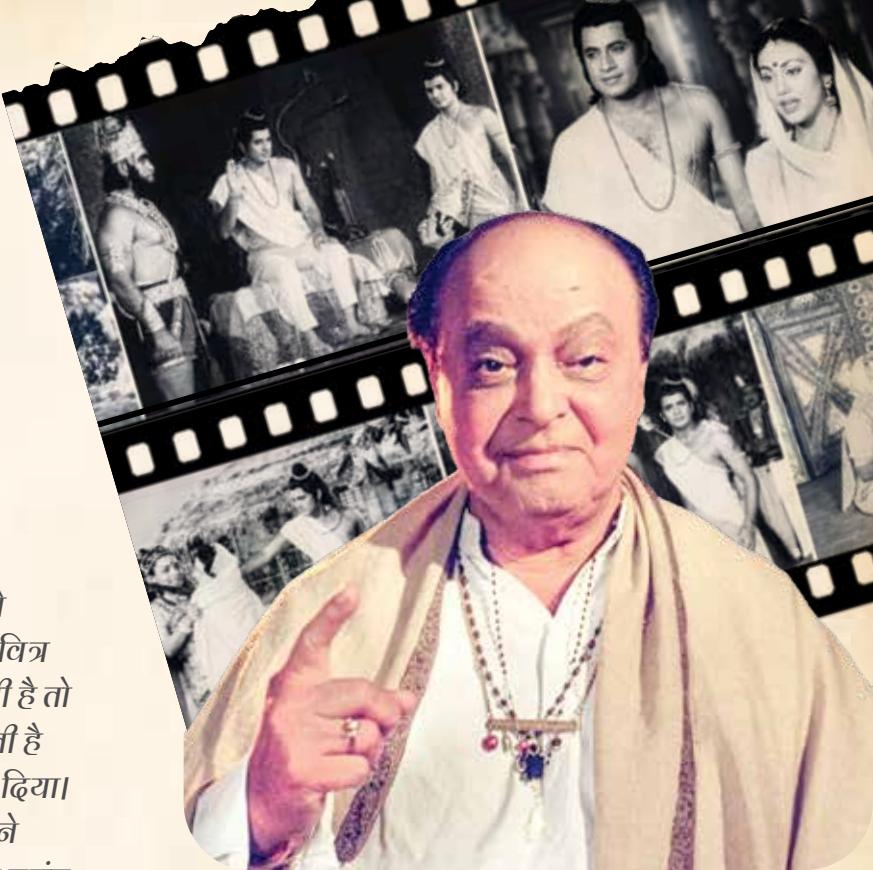


घर-घर तक पहुंचाई रामायण की कहानी

भारतवर्ष और हिंदू धर्म-संस्कृति के दृष्टिकोण से रामायण बहुत ही महत्वपूर्ण महाकाव्य और पवित्र ग्रंथ है। भारत में जब-जब रामायण की बात होती है तो मन-मस्तिष्क में रामानंद सागर की छवि उभरती है जिन्होंने इसकी कहानी को घर-घर तक पहुंचा दिया। 80 के दशक में जो रामायण धारावाहिक उन्होंने स्नपहले पर्दे पर उतारा, उसे दर्शक आज भी खूब पसंद करते हैं। इस धारावाहिक के हर कलाकार अपने किरदार की बजह से हमेशा के लिए हो गए हो अमर...

पहली बार वर्ष 1987 में दूरदर्शन पर रामायण धारावाहिक का प्रसारण शुरू हुआ तो यह देश की धड़कन बन गया। लोगों को बेसब्री से इसका इंतजार रहता था। इस धारावाहिक के दौरान लोग इतने उत्साहित रहते थे कि रविवार की सुबह देश की सड़कें बीरान हो जाती थी। राम-सीता के किरदार स्क्रीन पर आते ही लोग श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़ लेते थे। इस धारावाहिक को बनाने वाले व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि रामानंद सागर थे। उन्होंने न सिर्फ इसका निर्देशन किया बल्कि उन्होंने की प्रोडक्शन कंपनी सागर आर्ट ने इसका निर्माण भी किया था। रामायण की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसके 78 एपिसोड पूरे होने के बाद दर्शकों ने लव-कुश की कहानी बनाने की मांग की।

29 दिसंबर 1917 को लाहौर में जन्मे बच्चे का नाम मां ने चंद्रमौली रखा। बाल्यावस्था में ही बच्चे ने अपनी मां को खो दिया। मां के निधन के कारण जब नानी ने गोद लिया तो उस बच्चे का नाम बदलकर रामानंद रख दिया। इस तरह चंद्रमौली चोपड़ा को दुनिया रामानंद सागर के नाम से जानने लगी। उनका बचपन सामान्य नहीं रहा। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था जिसमें लगातार व्यवधान आता रहा। बाद में वह फिल्मी दुनिया से जुड़ गए और सफलता के नित नए आयाम गढ़ते रहे। रामायण को टीवी धारावाहिक का स्वरूप



जन्म : 29 दिसंबर 1917, मृत्यु : 12 दिसंबर 2005

देकर इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से जन-जन तक भगवान् श्रीराम की मर्यादा, आदर्श और शिक्षाओं को पहुंचाने वाले रामानंद सागर ने धारावाहिक के क्षेत्र में कदम रखने से पहले चरस, जलते बदन और रोमांस जैसी एक से एक बेहतरीन फ़िल्में भी बनाई। उनके द्वारा बनाए गए प्रसिद्ध टीवी धारावाहिकों में विक्रम और बेताल, दादा-दादी की कहानियां, रामायण, कृष्ण, अलिफ लैला और जय गंगा मैया जैसे बेहद लोकप्रिय धारावाहिक शामिल हैं।

वर्ष 2020 में देश में कोरोना वायरस की स्थिति और 21 दिन के लॉकडाउन के दौरान घर में रहने वाले लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए, सूचना और प्रसारण मंत्रालय और प्रसार भारती ने 28 मार्च 2020 से रामानंद सागर के रामायण धारावाहिक का दूरदर्शन पर एक बार फिर प्रसारित करने का निर्णय लिया था। ऐसा इस धारावाहिक में लोगों की भारी रुचि और इसके दोबारा प्रसारण की जनता की मांग को ध्यान में रखते हुए किया गया था। रामायण के आते ही इस शो ने एक बार फिर अपनी लोकप्रियता को साबित कर दिखाया। जैसे ही यह शो शुरू हुआ इसकी टीआरपी ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए।

कला के क्षेत्र में योगदान के लिए रामानंद सागर को साल 2000 में भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया था। भारतीय संस्कृति और धार्मिक मूल्यों को सहेजने और बढ़ाने के प्रतीक रहे रामानंद सागर का 12 दिसंबर 2005 को निधन हो गया। ■

भारतीय संविधान : राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक

भारत का संविधान, देश के वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक है। बीते 76 वर्षों में देश के सामने जो भी चुनौतियां आई, हमारे संविधान ने हर उस चुनौती का समाधान करने के लिए उचित मार्ग दिखाया। भारत आज, परिवर्तन के बहुत बड़े दौर से गुजर रहा है। आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनने के मार्ग पर अग्रसर है। ऐसे अहम समय में भारत का संविधान ही हमें रास्ता दिखा रहा है। 26 नवंबर को संविधान दिवस के अवसर पर संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में भव्य राष्ट्रीय समारोह के साथ राष्ट्रव्यापी संविधान दिवस समारोहों का किया गया आयोजन...

आ जादी के लिए जीने-मरने वाले लोगों ने कई सपने देखे थे। उन सपनों और हजारों साल की भारत की महान परंपरा को संजोते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें संविधान दिया। भारत को 'लोकतंत्र की जननी' कहा जाता है। 'लोकतंत्र की जननी' के रूप में भारत को और मजबूती प्रदान करने में हमारे संविधान की भूमिका बहुत बड़ी है। आज हम भारत के जिस संविधान पर गौरव का अनुभव करते हैं, उसके निर्माण में बाबा साहेब अंबेडकर के कुशल नेतृत्व की अमिट छाप दिखती है। उन्होंने सुनिश्चित किया कि समाज के हर तबके का कल्याण हो। सभी के लिए समानता और सभी के प्रति संवेदनशीलता, हमारे संविधान की पहचान है। यह हर नागरिक, गरीब, दलित, पिछड़ा, वंचित, आदिवासी, महिला सभी के मूलभूत अधिकारों की रक्षा करता है और उनके हितों को सुरक्षित रखता है। संविधान की इसी महत्ता को देखते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने 2010 में 'संविधान गौरव यात्रा' की थी। इसके बाद प्रधानमंत्री बनने पर वर्ष 2015 में 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। उन्होंने 'संविधान दिवस' की शुरुआत कर लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति देशवासियों को अधिक सजग बनाने का कार्य किया।





संविधान दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नागरिकों को एक पत्र लिखा। प्रस्तुत है उनका पत्र...

मेरे प्रिय देशवासी,
नमस्कार!

26 नवंबर हर भारतीय के लिए बहुत गौरवशाली दिन है। इसी दिन 1949 में संविधान सभा ने भारत के संविधान को अंगीकार किया था। इसलिए एक दशक पहले, साल 2015 में NDA सरकार ने 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था।

हमारा संविधान एक ऐसा पवित्र दस्तावेज़ है, जो निरंतर देश के विकास का सच्चा मार्गदर्शक बना हुआ है। ये भारत के संविधान की ही शक्ति है जिसने मुझे जैसे गरीब परिवार से निकले साधारण व्यक्ति को प्रधानमंत्री के पद पर पहुंचाया है। संविधान की वजह से मुझे 24 वर्षों से निरंतर सरकार के मुखिया के तौर पर काम करने का अवसर मिला है। मुझे याद है, साल 2014 में जब मैं पहली बार संसद भवन में प्रवेश कर रहा था, तो सीढ़ियों पर सिर झुकाकर मैंने लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर को नमन किया। साल 2019 में जब चुनाव परिणाम के बाद मैं संसद के सेंट्रल हॉल में गया था, तो सहज ही मैंने संविधान को सिर माथे लगा लिया था।

संविधान दिवस पर हम डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद समेत उन सभी महान विभूतियों का स्मरण करते हैं, जिन्होंने भारत के संविधान के निर्माण में अपना अहम योगदान दिया है। डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर की भूमिका को भी हम सभी याद करते हैं, जिन्होंने असाधारण दूरदृष्टि के साथ इस प्रक्रिया का निरंतर मार्गदर्शन किया। संविधान सभा में कई प्रतिष्ठित महिला सदस्य भी थीं, जिन्होंने अपने प्रखर विचारों और दृष्टिकोण से हमारे संविधान को समृद्ध बनाया।

साल 2010 में जब संविधान के 60 वर्ष हुए थे, तब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था। हमने संविधान के प्रति कृतज्ञता और निष्ठा प्रकट करने के लिए एक प्रयास किया। 2010 के उस साल में गुजरात में 'संविधान गौरव यात्रा' निकाली गई थी। इस पवित्र ग्रंथ की प्रतिकृति को एक हाथी के ऊपर

रखकर मैंने उस भव्य यात्रा की अगुवाई की थी।

जब संविधान के 75 वर्ष पूरे हुए, तो ये हमारी सरकार के लिए ऐतिहासिक अवसर बनकर आया। हमें देशभर में विशेष अभियान चलाने का सौभाग्य मिला। संविधान के 75 वर्ष होने पर हमारी सरकार ने संसद का विशेष सत्र आयोजित किया और राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान भी चलाया। ये अभियान जन-भागीदारी का बड़ा उत्सव बन गया।

इस वर्ष का संविधान दिवस कई कारणों से विशेष है:

यह वर्ष सरदार पटेल जी और भगवान बिरसा मुंडा जी की 150वीं जयंती का है। सरदार पटेल जी के नेतृत्व और सूझाबूझ ने देश का राजनीतिक एकीकरण सुनिश्चित किया। ये सरदार पटेल जी की ही प्रेरणा है जिसने हमारी सरकार को जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल 370 की दीवार गिराने के लिए प्रेरित किया। आर्टिकल 370 हटाने के बाद वहां भारत का संविधान पूरी तरह लागू हो गया है और लोगों को संविधान प्रदत्त सभी अधिकार मिले हैं।

भगवान बिरसा मुंडा जी का जीवन आज भी हमें जनजातीय समुदाय के लिए न्याय, गरिमा और सशक्तीकरण सुनिश्चित करने की प्रेरणा देता है।

इस साल हम वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने का उत्सव भी मना रहे हैं। वंदे मातरम हर दौर में प्रासंगिक रहा है। इसके शब्दों में हम भारतीयों के सामूहिक संकल्प की गूंज निरंतर सुनाई देती रही है। इस वर्ष हम श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के 350वें वर्ष को भी मना रहे हैं। उनका जीवन और शहादत की गाथा आज भी हमें प्रेरित करती है।

इन सभी का जीवन हमें उस कर्तव्य को सर्वोपरि रखने की प्रेरणा देता है, जिसे हमारे संविधान ने भी सबसे अहम बताया है। हमारे संविधान का आर्टिकल 51A मौलिक कर्तव्यों को समर्पित है। ये कर्तव्य हमें सामाजिक और आर्थिक प्रगति प्राप्त करने का रास्ता दिखाते हैं। महात्मा गांधी ने हमेशा नागरिकों के कर्तव्यों पर बल दिया था। वे मानते थे कि जब हम ईमानदारी से कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं, तो हमें अधिकार भी स्वतः मिल जाते हैं।

11वें संविधान दिवस के मौके पर पूरे देश ने इस अवसर को बड़े उत्साह और उमंग के साथ उत्सव के तौर पर मनाया। भारत की राष्ट्रपति ने 'संविधान दिवस' के मौके पर संसद के दोनों सदनों के सदस्यों को संबोधित किया। भारत के उपराष्ट्रपति और राज्यसभा

देखते ही देखते इस सदी के 25 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अब आने वाला समय हमारे लिए और भी महत्वपूर्ण है। साल 2047 तक आजादी के 100 वर्ष हो जाएंगे। साल 2049 में संविधान निर्माण के 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। हम आज जो नीतियां बनाएंगे, जो निर्णय लेंगे, उसका प्रभाव आने वाले वर्षों पर... आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा। हमारे सामने विकसित भारत का लक्ष्य है इसलिए हमें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि रखते हुए ही आगे बढ़ना है।

हमें राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना होगा। देश ने हमें कितना कुछ दिया है। इसके लिए हम सबके मन में कृतज्ञता का भाव होना चाहिए। जब हम इस भावना से जीवन जीते हैं, तो कर्तव्य अपने आप जीवन का स्वभाव बन जाता है। अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए हमें अपने हर काम को पूरी क्षमता और पूरी निष्ठा से करने का प्रयास करना होगा। हमारा हर कार्य देशहित से जुड़े उद्देश्यों को पूरा करने वाला हो। हमारा हर कार्य देशहित से जुड़े उद्देश्यों को पूरा करने वाला हो। हमारे संविधान निर्माताओं ने जो सपने देखे थे, उन्हें पूरा करने का दायित्व हम सबका है। जब हम अपने काम को कर्तव्य की भावना के साथ करेंगे तो देश की सामाजिक और आर्थिक प्रगति कई गुना बढ़ जाएगी।

संविधान ने हमें मतदान का अधिकार दिया है। एक नागरिक के तौर पर हमारा कर्तव्य है कि मतदान का कोई अवसर छोड़े नहीं। हमें 26 नवंबर को स्कूलों में, कॉलेजों में उन युवाओं के लिए विशेष सम्मान समारोह आयोजित करने चाहिए, जो 18 वर्ष के हो रहे हैं। हमें उन्हें यह महसूस कराना चाहिए कि वे अब केवल छात्र या छात्रा नहीं, बल्कि नीति निर्माण की प्रक्रिया के सक्रिय सहभागी हैं। स्कूलों में हर वर्ष 26 नवंबर को फर्स्ट-टाइम वोटर्स का सम्मान करने की परंपरा विकसित होनी चाहिए। जब हम इस तरह युवाओं में जिम्मेदारी और गर्व का भाव जगाएंगे, तो वे जीवनभर लोकतंत्र के मूल्यों के प्रति समर्पित रहेंगे। यही समर्पण एक सशक्त राष्ट्र की नींव बनता है।

आइए, इस संविधान दिवस पर हम अपने महान राष्ट्र के कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में अपने दायित्वों का पालन करने का संकल्प दोहराएं। ऐसा करके ही हम विकसित और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपना अहम योगदान दे सकेंगे।

आपका,
नरेंद्र मोदी

समारोह में हिस्सा लिया। इस मौके पर, उन्होंने भारत का संविधान बनाने वालों के विजय को याद किया और संवैधानिक आदर्शों को मजबूत करने के लिए देश की

पेरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय में डॉ. बी. आर. अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण

संविधान दिवस के अवसर पर पेरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय में डॉ. बी. आर. अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया गया। अस अनावरण पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह अत्यंत गौरव की बात है कि संविधान दिवस पर, पेरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय में डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह डॉ. अंबेडकर और हमारे संविधान निर्माण में उनकी भूमिका के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। उनके विचार और आदर्श असंख्य लोगों को शक्ति और उम्मीद प्रदान करते हैं।

प्रधानमंत्री कार्यालय में पढ़ी गई भारत के संविधान की प्रस्तावना

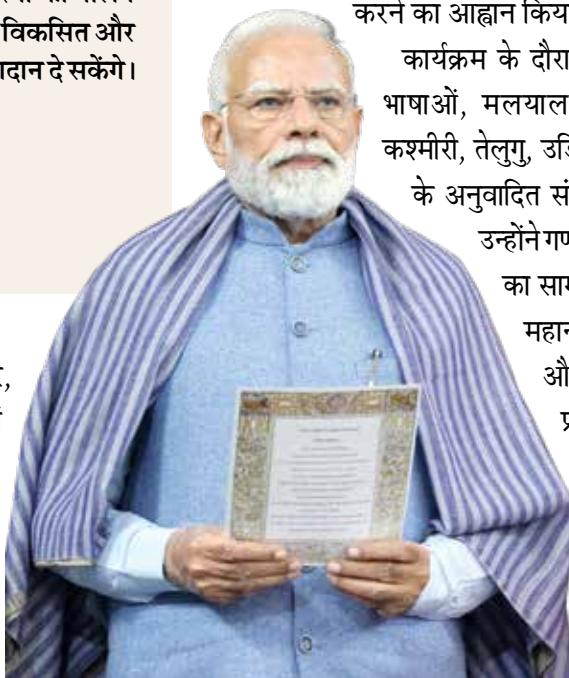
संविधान दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री कार्यालय में भारत के संविधान की प्रस्तावना पढ़ी गई। प्रस्तावना वाचन में वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इनमें प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव-2 शक्तिकांत दास, प्रधानमंत्री के सलाहकार तरुण कपूर और प्रधानमंत्री के विशेष सचिव अतीश चंद्रा के साथ-साथ प्रधानमंत्री कार्यालय के अन्य अधिकारी शामिल थे।

सामूहिक जिम्मेदारी को दोहराया। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि भारत का संविधान मानव की गरिमा, समानता और स्वतंत्रता को सर्वोच्च महत्व देता है। उन्होंने कहा कि संविधान जहां नागरिकों को अधिकारों से सशक्त करता है, वहां उन्हें उनके कर्तव्यों की याद भी दिलाता है, जिन्हें पूरी ईमानदारी और प्रतिबद्धता के साथ निभाया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह कर्तव्य एक मजबूत और जीवंत लोकतंत्र की नींव है। राष्ट्र के संकल्प को दोहराते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों से अपने कार्यों के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों को मजबूत करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति द्वारा पढ़ी मुर्मु ने नौ भारतीय भाषाओं, मलयालम, मराठी, नेपाली, पंजाबी, बोडी, कश्मीरी, तेलुगु, उड़िया और असमिया में भारतीय संविधान के अनुवादित संस्करणों का डिजिटल विमोचन किया।

उन्होंने गणमान्य हस्तियों को संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ भी करवाया, जिससे देश के महान संवैधानिक सिद्धांतों में गहरी आस्था और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने की प्रतिबद्धता जाहिर होती है।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।



आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

धर्म-ध्वजारोहण के साथ अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण पूर्ण

सदियों की आस्था का स्वप्नसाकार





वर्ष 2024 सिद्धि की निरंतरता के युग का आधार वर्ष बना, जब 6 दशक बाद कोई सरकार तीसरी बार लगातार सत्ता में जनता के अदृढ़ विधास के साथ आई। इसी विधास का एक अमिट अध्याय बना है वर्ष-2025, जिसकी शुरूआत आध्यात्मिक समागम महाकुम्भ से हुई जिसने तमाम रिकॉर्ड बनाए। सांस्कृतिक गौरव से भरे इस वर्ष का समापन अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण की पूर्णता के प्रतीक बने धर्म ध्वजारोहण के ऐसे पुनीत कार्य से हुआ जिसका इंतजार सद्वियों से था। बीते 11 वर्षों के सेवाकाल में सांस्कृतिक विरासत का पुनरुत्थान समग्र विकास का माध्यम बना है और 140 करोड़ नागरिक बने हैं इसके साक्षी...



इस वर्षात् अंक में आङ्गु जानते हैं कैसे अभृत काल में विकसित भारत का सपना साकार करने के लिए राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक विरासत और गौरव को ढे रहा है नई भव्यता...

आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

यह ध्वज एक संकल्प है, यह ध्वज सफलता है। यह ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, यह ध्वज सदियों से चले आ रहे स्वप्नों का साकार स्वरूप है। यह ध्वज संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणीति है। यह हमारी स्मृति की वापसी है। हमारी अस्मिता का पुनर्जागरण है। हमारी स्वाभिमानी सभ्यता का पुनः उद्घोष है। यह ध्वजारोहण मानवता की आत्मा का उद्घोष, सत्य की अजेयता, आस्था की अमरता और संस्कृति के पुनर्जागरण का जयघोष है। सही अर्थों में भारत की अमृत पीढ़ी धन्य है, जो सदियों का इंतजार बीते कुछ वर्षों के अथक प्रयास से ही पूर्ण होते हुए देख रही है। भारत के 140 करोड़ नागरिक अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर के निर्माण की पूर्णता के साक्षी बने हैं। सांस्कृतिक विरासत से जुड़े स्थल हों या धरोहर, सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साक्षी बने हैं। एक दौर ऐसा भी था, जब देश में उस समय की पीढ़ी ने विदेशी आक्रांताओं द्वारा सांस्कृतिक विरासत से जुड़े धार्मिक स्थलों को टूटते देखा था, आजादी के बाद भी अनदेखी को अपनी आंखों के सामने देखा था। यह स्थिति तब थी, जब यह माना जाता है कि किसी भी राष्ट्र की सफलता का परिचायक उसका सांस्कृतिक वैभव होता है। लेकिन 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में प्रभु श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह ने जन-जन के मन में गर्व का भाव भरा तो अब 22 महीने बाद ही 25 नवंबर 2025 को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि निर्माण की पूर्णता का प्रतीक बनी धर्म-ध्वज। इस केसरिया ध्वज के आरोहण के साथ ही सदियों बाद समय का चक्र एक बार फिर धूमा है। ऐसे में अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण की पूर्णता दे रहा है विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि का यह संदेश- “राम सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, राम एक मूल्य हैं, एक मर्यादा हैं, एक दिशा हैं। अगर भारत को साल 2047 तक विकसित बनाना है, अगर समाज को सामर्थ्यवान बनाना है, तो हमें अपने भीतर ‘राम’ को जगाना होगा। हमें अपने भीतर के राम की प्राण प्रतिष्ठा करनी होगी।”



161 फीट ऊँचे शिखर पर

फृहराया गया पवित्र ध्वज

साझज	22 X 11 फीट
फैब्रिक	पूर्ण रूप से स्वदेशी। पैराशूट ग्रेड कपड़ा
झंडे पर निशान	श्री राम के सूर्य वंश का निशान - सूर्य, ऊँ और कोविदारा पेड़
झंडे का रंग	मुख्य रूप से केसरिया

25 नवंबर 2025 को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शीर्ष पर ध्वजारोहण के साथ निर्माण कार्य पूर्ण

**श्री राम जन्मभूमि मंदिर में
392 स्तंभ और 44 प्रवेश द्वार**



- मंदिर के निर्माण में लोहे या स्टील का इस्तेमाल नहीं किया गया है। जमीन की नमी से स्ट्रक्चर को बचाने के लिए ग्रेनाइट का इस्तेमाल करके 21 फीट ऊंचा चबूतरा बनाया गया है।
- मंदिर में 392 स्तंभ और 44 प्रवेश द्वार हैं। स्तंभ और ढीवारों पर हिंदू देवी-देवताओं की उत्कृष्ट नकाशी की गई है।
- श्रीराम जन्मभूमि मंदिर पारंपरिक नागर स्थापत्य शैली में बना है जिसे अहमदाबाद के चंद्रकांत सोमपुरा ने डिजाइन किया है।
- मंदिर की ऊंचाई 161 फीट और मुख्य मंदिर में 12 दरवाजे हैं।
- रामलला की मूर्ति गाउंड प्लॉर पर मुख्य गर्भगृह में रखी है। सिंह द्वार से 32 सीढ़ियों का इस्तेमाल कर पहुंचा जा सकता है।
- इस कॉम्प्लेक्स में पांच मंडप हैं- नृत्य, रंग, सभा, प्रार्थना और कीर्तन मंडप, साथ ही कुबेर टीला पर पुराने शिव मंदिर और ऐतिहासिक सीता कूप कुएं का जीर्णद्वार भी किया गया है।

करीब 500 साल पुराना संघर्ष: आजाद भारत का सबसे बड़ा आंदोलन

- राम जन्मभूमि विवाद में पहला मुकदमा 1853 में दाखिल किया गया।
- 22-23 दिसंबर, 1949 की रात को विवादित ढांचे में रामलला की मूर्ति मिली थी।
- वर्ष 1950 में फेजाबाद सिविल कोर्ट में दो याचिकाएं दाखिल हुईं।
- 1 फरवरी, 1986 को कोर्ट के आदेश से विवादित ढांचे का ताला खोला।
- 6 दिसंबर, 1992 को विवादित ढांचा कार सेवकों ने गिराया।
- 30 सितंबर, 2010 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने विवादित जमीन को सुन्नी वकफ बोर्ड, निर्मोही अखाड़ा और रामलला विराजमान के बीच तीन हिस्सों में बांटने का आदेश सुनाया। फैसला पक्षों को मंजूर नहीं था इसलिए उच्चतम न्यायालय का रुख किया।
- 9 नवंबर, 2019 को पांच जजों की बैठक ने राम मंदिर के पक्ष में

अयोध्या में श्रीराम मंदिर

एक भारत श्रेष्ठ भारत का स्वरूप

आत्मनिर्भर राम मंदिर का निर्माण किया गया है, ताकि संसाधनों के लिए बाहरी निर्भरता न रहे। वहाँ मंदिर निर्माण में पत्थर, लकड़ी, पीतल सहित सभी सामग्री अलग-अलग राज्यों से जुटाई गई जो श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को एक भारत, श्रेष्ठ भारत का स्वरूप बनाता है।

- गुलाबी रंग का बलुआ पत्थर राजस्थान से एवं तेलंगाना और कर्नाटक से ग्रेनाइट के पत्थर लाए गए।
- देशभर से प्रतिभाशाली शिल्पकारों ने उसे तराशा है।
- उच्च गुणवत्ता वाली टीक की लकड़ी महाराष्ट्र से एवं हस्तशिल्प वाले लकड़ी के दरवाजे हैं।
- बासवेयर उत्तर प्रदेश का है। 42 घंटियां तमिलनाडु से आई हैं।

पूर्णतया भारतीय परंपरा एवं स्वदेशी तकनीक से निर्मित

भारतीय संस्कृति की विरासत के तौर पर निर्मित श्रीराम मंदिर और अयोध्या की विकास योजना में स्वस्थ जनभागीदारी पर जोर दिया गया है। सदियों के इंतजार के बाद अयोध्या में साकार हुआ राम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण वर्तमान और भविष्य में मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। संदेश साफ है कि राम मंदिर के निर्माण का कार्य पूर्ण हो गया है और केवल देश के लोग ही नहीं, जब भी कोई विदेशी भारत आए तो वह अयोध्या जाने की हक्का जरूर रखें।

फैसला सुनाया। विवादित जमीन हिंदू को मिली तो वहाँ मरिजद के लिए 5 एकड़ जमीन मुहैया कराने का आदेश दिया।

- 5 फरवरी, 2020 को हुई ट्रस्ट बनाने की घोषणा। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट में 15 ट्रस्टी जिनमें एक दलित अनिवार्य।
- 5 अगस्त, 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीराम जन्मभूमि निर्माण के लिए शिलान्यास किया।
- नवनिर्मित मंदिर में 22 जनवरी 2024 को श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा हुई।
- 25 नवंबर 2025 को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण कार्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शिखर पर धर्म-ध्वजारोहण के साथ पूर्ण हुआ।

आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण



दरअसल, भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के कृत संकल्प में सांस्कृतिक विरासत एक महत्वपूर्ण अध्याय है। सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय एकता और नागरिक कर्तव्य बोध की वह मजबूत कड़ी है, जो देश को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को भी भारत से जोड़ती है। इसी सोच से सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करता भारत बीते 11 वर्ष के सेवाकाल में अपने अद्भुत गौरवशाली इतिहास के साथ वर्तमान में नित नए आयाम जोड़ रहा है। विकास और विरासत को आत्मसात करते हुए सुनहरे भविष्य की पटकथा लिख रहा है। नए भारत ने भारत के तीर्थ और सांस्कृतिक विरासतों के विकास की एक समग्र सोच को यथार्थ में बदला है। अयोध्या में ध्वजारोहण के साथ ही श्रीराम मंदिर निर्माण कार्य की पूर्णाहुति इसमें एक महत्वपूर्ण अध्याय बनी है, तो काशी विश्वनाथ धाम से लेकर श्रीकेदारनाथ धाम, महाकाल-महालोक तक, उपेक्षित रहे आस्था के स्थानों के गौरव को भी पुनर्जीवित किया गया है। एक समग्र प्रयास किस तरह से समग्र विकास का माध्यम बन जाता है, आज देश इसका साक्षात् अनुभव कर रहा है।

ध्वजारोहण: एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण के साथ ही, 25 नवंबर 2025 की तारीख इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गई है। धर्म ध्वजा के पुनर्स्थापना से अयोध्या ने वैश्विक आध्यात्मिक केंद्र का स्वरूप लिया। भव्य श्रीराम मंदिर में 22 जनवरी 2024

राम यानी आदर्श, राम यानी मर्यादा, राम यानी जीवन का सर्वोच्च चरित्र

आज सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व, रामभक्त है। हर रामभक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष है, असीम कृतज्ञता है, अपार अलौकिक आनंद है। आईपू पढ़ते हैं 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर ध्वजारोहण उत्सव पर दिए गए भाषण के मुख्य अंश...

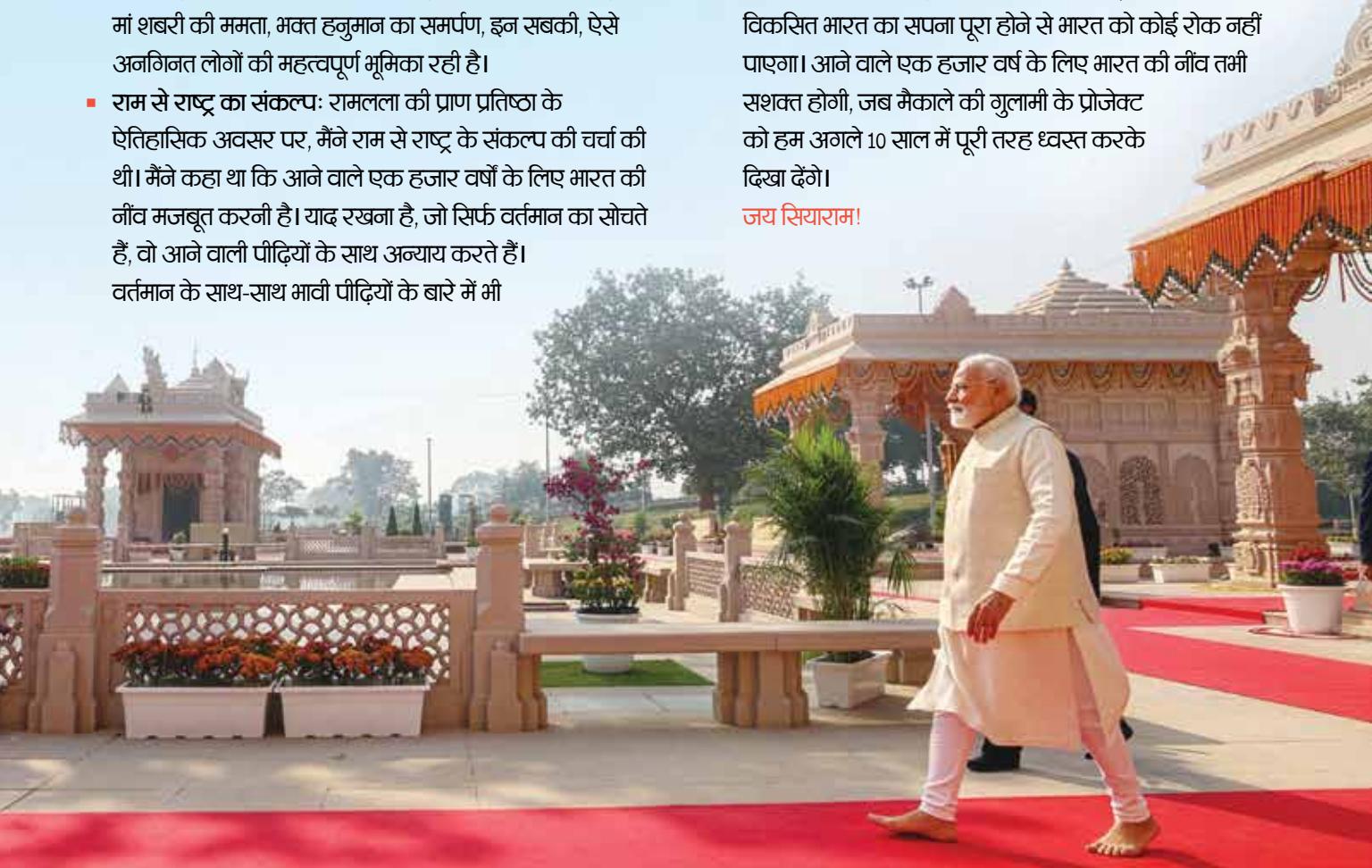


- सदियों के संकल्प की सिद्धि: अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बन रही है। सदियों के धाव भर रहे हैं, सदियों की वेदना आज विराम पा रही है, सदियों का संकल्प आज सिद्धि को प्राप्त हो रहा है। आज उस यज्ञ की पूर्णाहुति है, जिसकी अग्नि 500 वर्ष तक प्रज्वलित रही। जो यज्ञ एक पल भी आस्था से डिगा नहीं, एक पल भी विश्वास से टूटा नहीं।
- संघर्ष से सृजन की गाथा: आज, भगवान् श्रीराम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा, श्रीराम परिवार का दिव्य प्रताप, इस धर्म ध्वजा के रूप में, इस दिव्यतम, भव्यतम मंदिर में प्रतिष्ठापित हुआ है। यह ध्वज संकल्प है, यह ध्वज सफलता है। यह ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, यह ध्वज सदियों से चले आ रहे स्वज्ञों का साकार स्वरूप है। यह ध्वज संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणीति है।
- जहां आदर्श बना आचरण: अयोध्या वह भूमि है, जहां आदर्श, आचरण में बदलते हैं। यहीं वह नगरी है, जहां से श्रीराम ने अपना जीवन पथ शुरू किया था। इसी अयोध्या ने संसार को बताया कि एक व्यक्ति कैसे समाज की शक्ति से, उसके संस्कारों से, पुरुषोत्तम बनता है। जब श्रीराम अयोध्या से बनवास को गए, तो वे युवराज राम थे, लेकिन जब लौटे, तो मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर आए। उनके मर्यादा पुरुषोत्तम बनने में महर्षि वशिष्ठ का ज्ञान, महर्षि विश्वामित्र की दीक्षा, महर्षि अगस्त्य का मार्गदर्शन, निषादराज की मित्रता, मां शबरी की ममता, भक्त हनुमान का समर्पण, इन सबकी, ऐसे अनगिनत लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- राम से राष्ट्र का संकल्प: रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अवसर पर, मैंने राम से राष्ट्र के संकल्प की चर्चा की थी। मैंने कहा था कि आने वाले एक हजार वर्षों के लिए भारत की नींव मजबूत करनी है। यद्यु रखना है, जो सिर्फ वर्तमान का सोचते हैं, वो आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय करते हैं। वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ियों के बारे में भी

सोचना है। क्योंकि, हम जब नहीं थे, यह देश तब भी था, जब हम नहीं रहेंगे, यह देश तब भी रहेगा।

- श्रीराम के व्यवहार को करना होगा आत्मसात: हम एक जीवंत समाज हैं, हमें दूरदृष्टि के साथ ही काम करना होगा। आने वाले दशकों, आने वाली सदियों को ध्यान में रखना ही होगा। इसके लिए भी प्रभु राम से सीखना होगा। उनके व्यक्तित्व को समझना होगा, उनके व्यवहार को आत्मसात करना होगा, याद रखना होगा, राम यानी आदर्श, राम यानी मर्यादा, राम यानी जीवन का सर्वोच्च चरित्र।
- गुलामी की मानसिकता से मुक्ति: अपनी विरासत पर गर्व के साथ-साथ, एक और बात भी महत्वपूर्ण है, और वो है, गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्ति। आज से 190 साल पहले, साल 1835 में मैकाले नाम के एक अंगेज ने भारत को अपनी जड़ों से उखाड़ने के बीज बोए थे। मैकाले ने भारत में मानसिक गुलामी की नींव रखी थी। 10 साल बाद, यानी 2035 में उस अपवित्र घटना को 200 वर्ष पूरे हो रहे हैं। कुछ दिन पहले ही मैंने एक कार्यक्रम में आग्रह किया था कि आने वाले 10 वर्षों तक, उस 10 वर्षों का लक्ष्य लेकर चलना है कि भारत को गुलामी की मानसिकता से मुक्त करके रहेंगे।
- विकसित भारत का सपना: अगर हम ठान लें, अगले 10 साल में मानसिक गुलामी से पूरी तरह मुक्ति पा लेंगे और तब जाकर ऐसी ज्वाला प्रज्वलित होंगी, ऐसा आत्मविश्वास बढ़ेगा कि 2047 तक विकसित भारत का सपना पूरा होने से भारत को कोई रोक नहीं पाएगा। आने वाले एक हजार वर्ष के लिए भारत की नींव तभी सशक्त होगी, जब मैकाले की गुलामी के प्रोजेक्ट को हम अगले 10 साल में पूरी तरह ध्वस्त करके दिखा देंगे।

जय रियाराम!





“

यह राम के स्नप में राष्ट्रीय चेतना का मंदिर है। भगवान् राम भारत की आस्था, नींव, विचार, विधि, चेतना, सोच, प्रतिष्ठा और गौरव हैं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

(अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर, 22 जनवरी, 2024)

को प्राण प्रतिष्ठा के बाद 25 नवंबर 2025 का यह अनुष्ठान एक यज्ञ की पूर्णाहुति ही नहीं, अपितु एक नए युग का आरंभ है। भगवा ध्वजारोहण मंदिर के निर्माण-कार्य की पूर्णता, सांस्कृतिक उत्सव और राष्ट्रीय एकता के एक नए अध्याय की शुरुआत का प्रतीक बन गया है। यह कैलेंडर में लिखी एक तारीख भर नहीं, बल्कि एक नए कालचक्र का उद्घाटन है। श्री राममंदिर जन्मभूमि का धर्मध्वज प्राचीन परंपराओं और आधुनिक तकनीक के मेल से तैयार हुआ है। धर्म ध्वज पर एक चमकते सूरज की तस्वीर है, जो भगवान् श्रीराम की प्रतिभा और वीरता का प्रतीक है। इस पर कोविदारा पेड़ की तस्वीर के साथ ‘ॐ’ अंकित है। पवित्र भगवा ध्वज, राम राज्य के आदर्शों को प्रतिविंबित करते हुए, गरिमा, एकता और सांस्कृतिक निरंतरता का संदेश दे रहा है। भगवान् राम के वंश के लिए कोविदारा वृक्ष एक प्रतीक है। यह पूरी तरह से स्वदेशी सामग्री से बना है। इसका फैब्रिक तीन परतों वाला है, ताकि धूप, बारिश और तेज हवाओं में भी झंडा अपनी मजबूती बनाए रखे। इसके किनारों पर स्वर्णिम फैब्रिक लगाया गया है। झंडे पर हर रेखा और रंग को उभारने के लिए पारंपरिक तरीका अपनाया गया है। ध्वजांड का आधार एक खास बॉल-बेरिंग चैंबर पर आधारित है, ताकि यह 360 डिग्री धूम सके और तेज हवा में भी झंडा आसानी से लहराता रहे। ध्वजा की गुणवत्ता को तय करने में सेना की भी सहायता ली गई है। सेना में झंडे का सदैव विशेष महत्व रहा है और इतिहास साक्षी है कि झंडा



श्री केदारनाथ धाम का पुनर्विकास

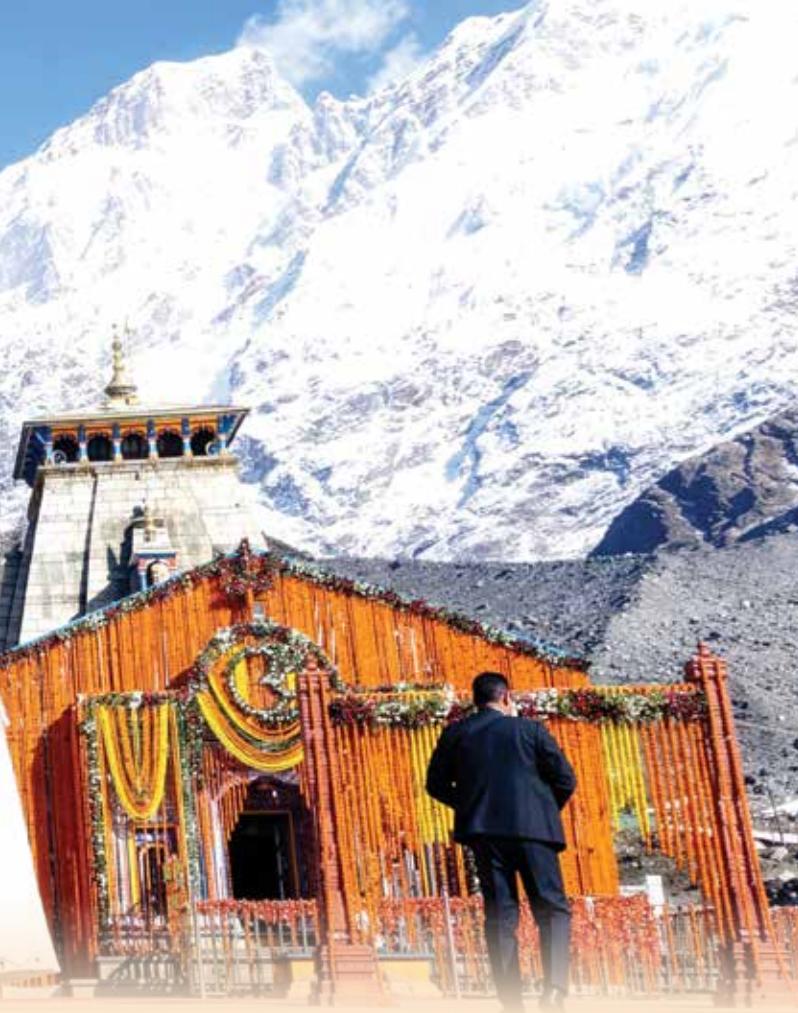
श्री केदारनाथ 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों में से एक है जो उत्तराखण्ड के लूद्धप्रयाग जिले में 11,968 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह मंदिर साल में अक्षय तृतीया (अप्रैल-मई) से दीपावली (अक्टूबर-नवंबर) तक लगभग 6 से 7 महीने तीर्थयात्रियों के लिए खुला रहता है।

- वर्ष 2013 में आई आपदा से तीर्थ नगरी में भारी तबाही हुई थी।
मंदिर परिसर में कई भवन क्षतिग्रस्त हो गए थे।

**1,300
करोड़ रुपये**

की लागत से चार धाम की द्वित्या यात्रा के लिए केदारनाथ-ब्रह्मीनाथ धाम का पुनर्निर्माण किया गया।

- केदारनाथ धाम में 2017 में पीएम मोदी ने आध्यात्मिक गौरव और द्वित्य स्वरूप को पुनः स्थापित करने के लिए श्री केदारनाथ धाम पुनर्निर्माण योजना की परिकल्पना की।
- करीब 30 हजार टन मलबा जो वहाँ फैला था, उससे 840 फीट सीढ़ीदार मंदिर गलियारे के रूप में विकसित किया गया।
- दो नदियों के संगम पर आगमन प्लाजा का निर्माण एवं मंदिर प्लाजा निर्माण में स्थानीय पत्थरों का इस्तेमाल।
- क्षतिग्रस्त श्री आदि गुरु शंकराचार्य समाधि का पुनर्निर्माण, 12 फीट ऊंची प्रतिमा लगाई गई जिसका अनावरण पीएम मोदी ने किया।



ਸਿਰਖ ਧਰਮ ਕੀ ਸਮੂਫ ਸੰਸਕ੍ਰਤਿ ਕਾ ਸਮਾਨ ਬਨਾ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਕਾਂਡਿੱਲੇ

ਵਿਰਾਸਤ ਔਰ ਸੰਸਕ੍ਰਤਿ ਪਰ ਗਰੰਤ ਕਰਨੇ ਔਰ ਉਸਦੇ ਸੀਖਨੇ ਕੀ ਕਢੀ ਮੈਂ ਪਿਛਲੇ 11 ਵਰ੍਷ਾਂ ਕੇ ਢੈਰਾਨ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦੁਰ ਜੀ ਕੇ 400ਵੇਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਰਵ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਸਾਹਿਬ ਕੇ 550ਵੇਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਰਵ, ਗੁਰੂ ਗੋਵਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਕੇ 350ਵੇਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਰਵ, ਲੰਗਰ ਦੇ ਜੀਏਸਟੀ ਹਟਾਨੇ, ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਕਾਂਡਿੱਲੇ ਕੇ ਨਿਰਮਾਣ, ਸੁਲਤਾਨਪੁਰ ਲੋਦੀ ਕੋ ਹੋਰਿਟੇਜ ਸਿਟੀ ਬਨਾਨੇ, ਬਿਟਿਥ ਵਿਸ਼ਵਵਿਦਿਆਲਾਯ ਮੈਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਨਾਮ ਪਰ ਪੀਠ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨੇ, ਗੁਰੂ ਗ੍ਰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਪ੍ਰਤਿਯਾਂ ਅਫਗਾਨਿਸ਼ਤਾਨ ਦੇ ਭਾਰਤ ਲਾਨੇ ਔਰ ਪਾਕਿਸ਼ਤਾਨ ਮੈਂ ਸਿਖ ਧਾਰਿਕਾਂ ਦੇ ਜਾਨੇ ਕੀ ਸੁਵਿਧਾ ਜੈਂਦੇ ਕਿਝ ਮਹਤਵਪੂਰਨ ਕਾਮ ਹੁਏ ਹਨ। ਵਹੀਂ ਸਾਹਿਬਜਾਦੀਆਂ ਦੇ ਬਲਿਦਾਨ ਕੋ ਚਿਨਿਤਾ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਏ 26 ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕੋ ਵੀਰ ਬਾਲ ਦਿਵਸ ਮਨਾਨੇ ਕੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀ ਗਈ।

- ਕੇਦਾਰਨਾਥ ਧਾਮ ਮੈਂ ਏਕ ਧਾਨ ਗੁਫਾ ਹੈ। ਨਵੰਬਰ, 2021 ਮੈਂ ਯਹਾਂ ਪੀਏਮ ਮੌਦੀ ਨੇ 17 ਘੰਟੇ ਬਿਤਾਏ ਥੇ, ਜੋ ਮਕਤੀਂ ਦੀ ਬੀਚ ਆਕਰਣ ਕਾ ਕੇਂਦਰ ਬਣੀ।
- ਮੰਦਕਿਨੀ ਔਰ ਸਰਖਰੀ ਨਦੀ ਦੇ ਤਟ ਪਰ ਸਨਾਨ ਔਰ ਧਾਰਮਿਕ ਅਨੁ਷ਠਾਨਾਂ ਦੇ ਸੁਗਮ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਵਿਸ਼ਾਲ ਸੰਗਮ ਘਾਟ ਕੀ ਨਿਰਮਾਣ।
- ਭਾਰਤ ਦੀ 2,00,000ਵੀਂ 5ਜੀ ਸਾਫ਼ਟ ਗੱਗੋਤੀ ਮੈਂ ਚਾਲੂ ਹੁੰਦੀ ਜੋ ਚਾਰ ਧਾਮ ਫਾਇਬਰ ਕਨੈਕਟਿਵਿਟੀ ਦੇ ਸਮਰਪਿਤ ਹੈ।
- ਕੇਦਾਰਨਾਥ-ਮਾਨਸਖੰਡ ਕਨੈਕਟਿਵਿਟੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰ ਕਾਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਜੋ ਲੋਗ ਕੇਦਾਰਨਾਥ ਵਿਖੇ ਬਾਹਰੋਂ ਧਾਮ ਆਤੇ ਹਨ ਵੀ ਜਾਗੇਥਰ ਧਾਮ, ਆਦਿ ਕੈਲਾਂਸ ਵਿਖੇ ਓਮ ਪਰਵਤ ਆਸਾਨੀ ਦੇ ਜਾ ਸਕੇ, ਇਸਕਾ ਪ੍ਰਯਾਸ ਹੈ।
- ਗੌਰੀਕੁੰਡ-ਕੇਦਾਰਨਾਥ ਔਰ ਗੋਵਿੰਦਿਆਟ-ਹੈਮਕੁੰਡ ਸਾਹਿਬ ਰੋਪਵੇ ਦੇ ਸ਼ਿਲਾਨਿਧਾਸ ਹੋ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਯੇ ਪਰਿਯੋਜਨਾਂ ਤੁਤਾਰਖੰਡ ਮੈਂ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਨਿੱਜ ਗਤਿ ਦੇ ਰਹੀਆਂ ਹਨ।
- ਰੁਕ੍ਤੀ ਪ੍ਰਯਾਸ ਦੇ ਗੌਰੀਕੁੰਡ ਤੱਕ ਏਨਏਚ-107 ਪਰ 17 ਸਥਾਨਾਂ ਦੇ ਮੂਸਖਲਨ ਔਰ ਮੂ-ਧੰਦਾਵ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਦੇ ਕਾਮ 357 ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ ਦੀ ਲਾਗਤ ਦੇ ਕਿਯਾ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ।
- 125 ਕਿਮੀ ਲੰਬੀ ਤ੍ਰਾਣਿਕੇਸ਼-ਕਰਣਪ੍ਰਯਾਸ ਨਿੱਜੀ ਰੇਲ ਲਾਫ਼ਨ ਪਰਿਯੋਜਨਾ ਦੇ ਵੇਖਪ੍ਰਯਾਸ ਔਰ ਕਰਣਪ੍ਰਯਾਸ ਜੈਂਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਔਰ ਪਰਿਟਨ ਸਥਲਾਂ ਦੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਰਾ਷ਟ੍ਰੀਯ ਰਾਜਧਾਨੀ ਦੇ ਸ਼ਾਪਕ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰੇਗੀ।
- ਸ਼੍ਰੀ ਕੇਦਾਰਨਾਥ ਧਾਮ ਮੈਂ 2025 ਮੈਂ ਕਰੀਬ 17 ਲਾਖ ਸ਼੍ਰਦ਼ਹਾਲੂ, ਦੇਵਦਰਸ਼ਨ ਦੇ ਲਿਏ ਆਏ ਹਨ।
- 2014 ਦੇ ਪਹਲੇ ਚਾਰ ਧਾਮ ਧਾਰਿਕਾਂ ਦੀ ਸੱਖਿਆ ਦੇ ਰਿਕਾਰਡ 24 ਲਾਖ ਦਾ ਥਾ, ਜੋ 2024-25 ਮੈਂ ਕਰੀਬ 55 ਲਾਖ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ ਹੈ।

120
ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ

ਕੀ ਲਾਗਤ ਦੇ ਚਾਰ ਲੇਨ 4.2 ਕਿਲੋਮੀਟਰ
ਲੰਬਾ ਰਾਜਮਾਰਾਂ ਡੇਰਾ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਦੀ
ਅਮ੃ਤਸਰ-ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ ਰਾਜਮਾਰਾਂ ਦੇ
ਜੋੜਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਬਣਾਯਾ ਗਿਆ।



“

**ओरछा के राजा राम से लेकर,
रामेश्वरम के भक्त राम तक, और
शबरी के प्रभु राम से लेकर,
मिथिला के पाहुन राम जी तक,
भारत के हर घर में, हर भारतीय
के मन में, और भारतवर्ष के हर
कण-कण में राम हैं।**

-**बरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

केवल पहचान नहीं, बल्कि प्रेरणा, साहस और समर्पण का प्रतीक रहा है। यह एक रस्म अदायगी भर नहीं, बल्कि श्रीराम मंदिर के निर्माण की 500 साल पहले शुरू हुई यात्रा का समापन भी है। सनातन परंपरा में मंदिर तभी पूर्ण माना जाता है, जब उसके शिखर पर ध्वजारोहण हो जाए। इसलिए श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर लहराता भगवा ध्वज युगांतरकारी परिवर्तन का संदेश दे रहा है, जिसकी प्रतीक्षा सदियों से थी और अब अगली कई सदियों तक यह भारतीयता के गौरव को बढ़ाएगा।

भव्य-टिक्य-नव्य स्वरूप में अयोध्या

21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। इसी सोच का परिणाम है कि आज अयोध्या के विकास के लिए हजारों करोड़ों रुपये की नई योजनाएं साकार हुई हैं। सड़कों का विकास हुआ है, चौराहों और घाटों का सौंदर्योंकरण हुआ है। नए इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहे हैं। यानी अयोध्या का विकास नए आयाम छू रहा है। मंदिर निर्माण संबंधी सभी कार्य पूर्ण हो गए हैं अर्थात्- मुख्य मंदिर, परकोटा के 6 मंदिर - भगवान शिव, भगवान गणेश, भगवान हनुमान, सूर्यदेव, देवी भगवती, देवी अन्नपूर्णा तथा शेषावतार मंदिर भी पूर्ण हो चुके हैं। इन पर ध्वजदण्ड

सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर बढ़ाया र्खर्च

- संस्कृति मंत्रालय प्राचीन सांस्कृतिक विरासत में सम्मिलित कला एवं संस्कृति के मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों के परिरक्षण, संरक्षण और संवर्धन के लिए शताब्दी और वर्षांगठ स्कॉम, कला संस्कृति विकास योजना, संग्रहालयों का विकास, पुस्तकालयों का विकास, वैशिक भागीदारी, राष्ट्रीय पाङ्गुलिपि मिशन और राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानविक्रिया और रोडमैप मिशन चला रही है।
- संस्कृति मंत्रालय का बजट जहाँ 2013-14 में 2,164 करोड़ रुपये था, वहाँ वित वर्ष 2025-26 में बढ़कर करीब 3,361 करोड़ रुपये हो गया है।
- 12,41,349 पुरावशेषों और 11,406 निर्मित धरोहरों का दस्तावेजीकरण और प्रकाशन जुलाई, 2025 तक राष्ट्रीय संस्मारक एवं पुरावशेष मिशन की स्थापना के बाद से किया गया है।



655

पुरावशेष 1976 से जुलाई, 2025 तक देश में वापस लाए गए हैं जिनमें 2013 के पहले सिफ्ट 13 लाए गए थे।

3,697

प्राचीन स्मारक, पुरातात्त्विक स्थल और अवशेष देश में राष्ट्रीय महत्व के रूप में घोषित हैं।

श्री उज्जैन महाकाल मंदिर कॉरिडोर का पुनरुद्धार

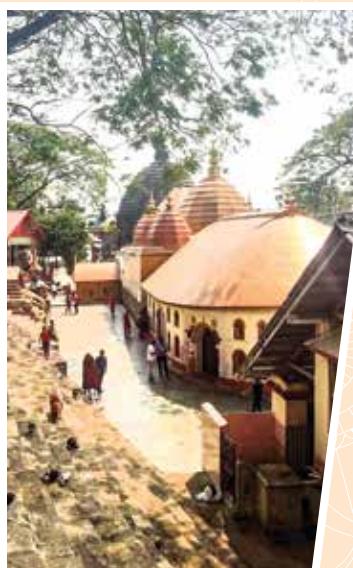
- उज्जैन का महाकाल मंदिर विश्व का एकमात्र ऐसा मंदिर है, जहाँ दक्षिणमुखी शिवलिंग प्रतिस्थापित है। यहाँ वजह है कि भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में 'महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग' विशेष महत्व रखता है।
- कॉरिडोर परियोजना के तहत मंदिर परिसर का करीब 7 गुना विस्तार।





- प्रति वर्ष 1.5 करोड़ मौजूदा पर्यटकों की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य।
- 'महाकाल लोक' में भव्य प्रवेश द्वारा है, वहाँ 384 मीटर लंबी म्यूरल्स वॉल बनाई गई है। यहाँ शिव की 25 कथाओं को प्रदर्शित किया गया है।
- आध्यात्मिकता के इस महान केंद्र को भव्यतम रूप महाकाल लोक परियोजना के जरिये दिया गया है, जिसका प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 अक्टूबर, 2022 को शुभारंभ किया।
- प्लाजा का क्षेत्रफल 2.5 हेक्टेयर का है और एक तरफ से कमल के तालाब से घिरा हुआ है जिसमें फव्वारे के साथ शिव की मूर्ति है।
- 108 स्तंभ महाकाल पथ में हैं, जो भगवान शिव के आनंद तांडव स्वरूप (नृत्य रूप) को दर्शाते हैं। महाकाल पथ के किनारे भगवान शिव के जीवन को दर्शाने वाली धार्मिक मूर्तियां स्थापित की गई हैं।
- महालोक परियोजना में सुविधाएं विकसित करने के साथ ही क्षेत्र का विस्तार किया गया और आर्टिफिशियल हंटेलिंजेस एवं सर्विलांस कैमरों की मदद से इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर द्वारा इस पूरे परिसर की चौबीसों घंटे निगरानी की व्यवस्था है।

कामारख्या मंदिर कॉरिडोर



असम के गुवाहाटी में कामाख्या मंदिर के आसपास के क्षेत्र को 3 हजार वर्ग फीट से बढ़ाकर लगभग एक लाख वर्ग फीट तक किया गया। 6 मंदिरों का जीर्णोद्धार इस परियोजना में शामिल।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण परियोजना ने इतिहास रचा है।
यह विश्व की पहली धार्मिक परियोजना है जिसने ब्रिटिश सेफ्टी काउंसिल का स्वार्ड ऑफ ऑनर तथा भारत की नेशनल सेफ्टी काउंसिल का सर्वोच्च सुरक्षा पुरस्कार प्राप्त किया है।



एवं कलश स्थापित हो चुके हैं। जिन कार्यों का सीधा संबंध दर्शनार्थियों की सुविधा से है अथवा व्यवस्था से है, वे सभी कार्य पूर्णत्व प्राप्त कर चुके हैं। विकास और विरासत से जुड़े अयोध्या में हो रहे प्रत्येक कार्य प्रभु श्रीराम के जीवन मूल्यों से प्रेरित हैं। अयोध्या के वैभव को पुनः स्थापित करने में सदियों के धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या निहित है। 22 जनवरी 2024 को संपन्न प्राण प्रतिष्ठा के लगभग डेढ़ वर्षों में ही 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालु अयोध्या धाम आ चुके हैं। साथ ही, लगभग 50 हजार करोड़ रुपये की परियोजनाएं अयोध्या को नया स्वरूप दे रही हैं। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण परियोजना ने भी इतिहास रचा है। यह विश्व की पहली धार्मिक परियोजना है जिसने ब्रिटिश सेफ्टी काउंसिल का सर्वोच्च सुरक्षा पुरस्कार प्राप्त किया है। यह दर्शाता है कि निर्माण न केवल आस्था से, बल्कि वैश्विक इंजीनियरिंग और सुरक्षा मानकों के अनुरूप भी किया गया है। अयोध्या नगरी अब केवल मंदिर और श्रद्धा का केंद्र नहीं, बल्कि समग्र विकास के साथ जीवन पथ का वह दीपस्तंभ बन रहा है, जो आने वाले युगों को बताता रहेगा कि धर्म केवल पूजा की विधि नहीं, बल्कि आचरण की दृष्टि और समाज का आधार है।

अयोध्या रेलवे स्टेशन के साथ-साथ वर्ल्ड क्लास एयरपोर्ट का निर्माण भी हो चुका है। कनेक्टिविटी और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का लाभ इस पूरे क्षेत्र को मिल रहा है। अयोध्या के विकास के साथ रामायण सर्किट के विकास

“

त्रेता युग की अयोध्या ने मानवता को नीति दी, 21वीं सदी की अयोध्या मानवता को विकास का नया मॉडल दे रही है। तब अयोध्या भर्यादा का केंद्र थी, अब अयोध्या विकसित भारत का मेरुदंड बनकर उभर रही है। भविष्य की अयोध्या में पौराणिकता और नृतनता का संगम होगा।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

पर भी काम चल रहा है। यानी, अयोध्या से जो विकास अभियान शुरू हुआ, उसका विस्तार आसपास के पूरे क्षेत्र में हो रहा है। इस सांस्कृतिक विकास के कई सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय आयाम भी हैं। श्रृंगवरेपुर धाम में निषादराज पार्क का निर्माण, भगवान राम और निषादराज की 51 फीट ऊँची कांस्य की प्रतिमा उस सर्वसमावेशी संदेश को भी जन-जन तक पहुंचाएगी जो समानता और समरसता के लिए संकल्पबद्ध है। इसी तरह, अयोध्या में क्वीन-हो मेमोरियल पार्क का निर्माण भारत और दक्षिण कोरिया अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए, दोनों देशों के सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूत करने का एक माध्यम बनेगा। सरकार ने जो रामायण एक्सप्रेस ट्रेन चलाई है वह आध्यात्मिक पर्यटन की दिशा में एक बेहतरीन शुरुआत है।

अयोध्या विजन 2047 का ध्येय अब तीव्र गति से आकार ले रहा है। नई कनेक्टिविटी, अत्याधुनिक आधारभूत संरचना, तीव्र गति से हो रहे पर्यटन विकास, स्मार्ट सिटी और सोलर सिटी जैसे प्रयासों से वैश्विक स्तर पर अयोध्या एक सतत-समावेशी-आधुनिक शहर के रूप में स्थापित हो रही है। करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए श्रीअयोध्या धाम तक पहुंचना पहले से कहीं अधिक सहज, सुरक्षित

पम्बन पुल, तमिलनाडु



- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 6 अप्रैल 2025 को पम्बन पुल का उद्घाटन किया। यह भारत का पहला वर्टिकल लिफ्ट ब्रिज है जो रामेश्वरम द्वीप को भारत के मंडपम शहर से जोड़ता है।
- इस पुल का गहरा सांस्कृतिक महत्व है। रामायण के अनुसार, राम सेरु का निर्माण रामेश्वरम के पास धनुषकोडी से शुरू हुआ था। रामेश्वरम को मुख्य भूमि से जोड़ने वाला यह पुल वैश्विक मंच पर भारतीय इंजीनियरिंग की उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में खड़ा है।
- इसे 700 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से बनाया गया है। इसकी लंबाई 2.08 किमी है, इसमें 99 स्पैन और 72.5 मीटर का वर्टिकल लिफ्ट स्पैन है जो 17 मीटर की ऊँचाई तक उठता है, जिससे जहाजों की सुचारू आवाजाही की सुविधा मिलती है। साथ ही निर्बाध ट्रेन संचालन सुनिश्चित होता है।
- स्टेनलेस स्टील सुदृढ़ीकरण, उच्च श्रेणी के सुरक्षात्मक पेट और पूरी तरह से वेल्डेड जोड़ों के साथ निर्मित, पुल में अधिक स्थायित्व और कम रखरखाव की आवश्यकता है। इसे भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए दोहरी रेल पटरियों के लिए डिजाइन किया गया है। विशेष पॉलीसिलोक्सेन कोटिंग इसे जंग से बचाती है, जिससे कठोर समुद्री वातावरण में दीर्घायु सुनिश्चित होती है।





कश्मीर में धार्मिक स्थलों की लौटने लगी रौनक

अगस्त, 2019 में कश्मीर से धारा 370 हटाई गई। साथ ही आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति भी अपनाई गई। इसका असर हुआ कि आतंकवाद का डर कम हुआ जिससे खंडहर और वीरान हो चुके धार्मिक स्थलों को आबाद करने का काम शुरू हो सका।

- 300 साल पुराने रघुनाथ मंदिर, डालगेट में चर्च और श्रीनगर की एक मस्जिद को पुराने रूप में लौटाने के लिए स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत सबसे पहले चुना गया।
- रघुनाथ मंदिर की रौनक लौट आई। अब यहां न सिर्फ पूजा अर्चना बल्कि विरासत से युवाओं को परिचित कराने के लिए प्रदर्शनी भी लगती है।
- गुलमर्ग में जून, 2021 में शिव मंदिर का जीर्णोद्धार कर सेना द्वारा मध्य उद्घाटन समारोह के बाद इसे खोल दिया गया।
- मई, 2022 में अनंतनाग जिले में स्थित मार्टड सूर्य मंदिर में भी पूजा अर्चना की गई। इससे पूर्व फरवरी, 2021 में शीतलनाथ मंदिर में भी बसंत पंचमी से पूजा अर्चना शुरू की गई।
- श्रीनगर से करीब 27 किलोमीटर दूर मध्य कश्मीर स्थित खीर भवानी मंदिर में हर साल श्रद्धालु पूजा अर्चना करने पहुंचते हैं।
- कश्मीरी पंडितों के आध्यात्मिक जीवन में यह मंदिर एक पवित्र स्थान रखता है। वर्ष 2022 में ज्योष्ठ अष्टमी के शुभ अवसर पर 18 हजार कश्मीरी पंडित और श्रद्धालुओं ने मां खीर भवानी के दर्शन किए थे।



बौद्ध सर्किट को मिली हवाई मार्ग से कनेक्टिविटी

20 अक्टूबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुशीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा का उद्घाटन किया जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई। साथ ही, स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अधिक अवसर पैदा हो रहे हैं।

- कुशीनगर एक अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थ केंद्र है, जहां भगवान गौतम बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। यह बौद्ध सर्किट का केंद्र बिंदु भी है, जिसमें लुबिनी, सारनाथ और गयाजी के तीर्थ स्थल शामिल हैं।
- भगवान बुद्ध से जुड़े हुए बौद्ध स्थलों के लिए केंद्र सरकार बुद्धिस्त सर्किट विकसित कर रही है। बुद्धिस्त सर्किट के अंतर्गत मुख्य विकास कार्यों में कनेक्टिविटी, डैफारस्ट्रक्चर व लॉजिस्टिक, सांस्कृतिक शोध, विरासत एवं शिक्षा, जन जागरूकता, संचार और पहुंच शामिल हैं।
- हवाई अड्डा होने से देश-विदेश से बौद्ध धर्म के अधिक से अधिक अनुयायी कुशीनगर आ पा रहे हैं। बौद्ध सर्किट के लुबिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, राजगीर, सकिसा और वैशाली की यात्रा अब कम समय में पूरी हो रही है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुबिनी की यात्रा करने वाले पहले पीएम बने।

पंद्रहपुर : पालखी मार्ग से सुगम हुई राह

- पीएम मोदी ने 8 नवंबर 2021 को पंद्रहपुर तक राजमार्गों पर बेहतर कनेक्टिविटी के लिए 223 किमी से अधिक की सड़क परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित की।
- इनमें म्हसवड-पिलाव-पंद्रहपुर, कुरुवाड़ी-पंद्रहपुर, पंद्रहपुर-संगोला, एनएच 561ए का तेम्भुरनी-पंद्रहपुर खंड और एनएच 561ए के पंद्रहपुर-मंगलवेड़ा-उमाड़ी खंड शामिल हैं।

- श्रद्धालुओं के पंद्रहपुर आवागमन को सुविधाजनक बनाने के प्रयास के तहत पीएम मोदी ने श्री संत झानेश्वर महाराज पालखी मार्ग के पांच खंडों और श्री संत तुकाराम महाराज पालखी मार्ग के तीन खंडों को चार लेन बनाने के कार्य की आधारशिला रखी थी।
- यह भारत के युवाओं के बीच वारकरी परंपरा को और लोकप्रिय बनाने के केंद्र सरकार के प्रयासों का एक हिस्सा है।



आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

“

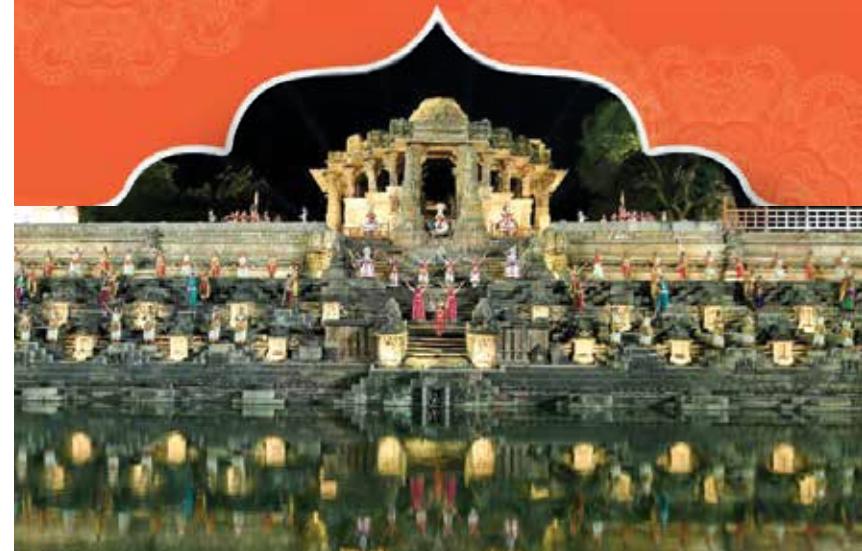
सांस्कृतिक धरोहर सिर्फ इतिहास
नहीं है बल्कि यह मानवता की
साझा चेतना है। जब भी हम
ऐतिहासिक स्थलों को देखते हैं, तो
हमारी सोच मौजूदा भू-राजनीतिक
कारकों से ऊपर उठ जाती है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

और सुगम हुआ है। प्रभु श्रीराम की यह नगरी विश्व मानचित्र पर सांस्कृतिक राजधानी के रूप में उदित हो रही है, जहां विरासत का सम्मान भी है और अभूतपूर्व विकास भी।

विकास और विरासत साथ-साथ

दुनिया में कोई भी देश हो, अगर उसे विकास की नई ऊँचाई पर पहुंचना है तो उसे अपनी विरासत को संभालना ही होगा। हमारी विरासत, हमें प्रेरणा देती है, हमें सही मार्ग दिखाती है। इसलिए आज का भारत, पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहा है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के कृत संकल्प में सांस्कृतिक विरासत एक महत्वपूर्ण अध्याय है। भारत प्राचीन काल से ही इस दुनिया में विज्ञान और तकनीक से जुड़े ज्ञान का केंद्र माना जाता रहा है। बीच में एक दौर ऐसा भी आया जब विदेशी शासकों और औपनिवेशिक युग ने कई प्रमुख संस्थानों को इतना नुकसान पहुंचाया कि उन्हें आज तक फिर जिंदा नहीं किया जा सका। लेकिन ‘देश, काल, परिस्थिति’ के महत्व का यह वर्णन प्राचीन पवित्र ग्रंथों में रहा है और बीते 11 वर्षों में धर्म के प्रति समग्र दृष्टिकोण में बढ़े और स्पष्ट बदलाव होते हम देख रहे हैं। भू-राजनीति से लेकर विदेश नीति तक, ‘भारतीय बोध’ के एकीकरण और ‘हम’ पर जोर ने भारत को देखने वाले दुनिया के नजरिये पर जबरदस्त प्रभाव डाला है। भारत के संविधान की मूल



मोदेरा का सूर्य मंदिर : पूर्णतः सौर ऊर्जा से संचालित पहली विरासत

- कोणार्क सूर्य मंदिर के बाद ख्याति की दृष्टि से दूसरा स्थान रखने वाला मोदेरा का सूर्य मंदिर गुजरात में मंदिर वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। 11वीं शताब्दी में इसका निर्माण किया गया था।
- पाटन शहर से 30 किलोमीटर दूर यह मंदिर रूपेन नदी की सहायक पुष्पावती नदी के बायें किनारे मेहसाणा जिले के बेचराजी तालुका में है।
- 9 अक्टूबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मोदेरा सूर्य मंदिर में हेरिटेज लाइटिंग का उद्घाटन किया जो पूर्णतः सौर ऊर्जा से संचालित भारत का पहला विरासत स्थल है। 3डी प्रोजेक्शन मैपिंग भी शुरू।
- मई 2020 में भारत सरकार ने ओडिशा में ऐतिहासिक कोणार्क सूर्य मंदिर और कोणार्क शहर के शत प्रतिशत सोलराइजेशन की योजना का शुभारंभ। इससे कोणार्क शहर की ऊर्जा संबंधी जरूरतें पूरी होंगी।
- कोणार्क सूर्य मंदिर को ‘सूर्य नगरी’ के रूप में विकसित करने के पीछमे मोदी के विजय को आगे ले जाने के उद्देश्य से यह योजना शुरू की गई।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जी-20 शिखर सम्मेलन के दैरान कोणार्क सूर्य मंदिर और नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतीक दिखाकर दुनिया को भारत की धरोहर और सशक्त इतिहास से अवगत कराया।

स्वदेश दर्शन-प्रशाद योजना से जुड़े स्थल

स्वदेश दर्शन केंद्र सरकार की सहायता वाली योजना है। अभी तक इस योजना में पर्यटन मंत्रालय ने 76 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इसके तहत पर्यटन स्थलों को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया जा रहा है। वहीं प्रशाद योजना में 1594.40 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली 47 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है और 26 नए स्थलों की पहचान की गई है। इसका उद्देश्य देश में चर्यनित तीर्थ स्थलों का समग्र विकास करना है।

- अब पर्यटन मंत्रालय ने अपनी स्वदेश दर्शन योजना को स्वदेश दर्शन 2.0 (एसडी 2.0) के रूप में नया स्वरूप दिया है। इसका उद्देश्य पर्यटक और ग्रांतव्य स्थल केंद्रित दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए स्थायी पर्यटन स्थलों को विकसित करना है।



भारत के सबसे पुराने ज्योतिर्लिंग मंदिर का पुनर्विकास

श्री सोमनाथ मंदिर

सोमनाथ मंदिर को जिन परिस्थितियों में तबाह किया गया और फिर जिन परिस्थितियों में सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ वो राष्ट्र के लिए एक बड़ा संदेश है। देश अतीत से जो सीखना चाहता है, सोमनाथ जैसे आस्था और संस्कृति के स्थल उसके हैं अहम केंद्र...

- सोमनाथ मंदिर में अलग-अलग राज्यों से, देश और दुनिया के अलग-अलग कोनों से दर्शन करने हर साल करीब-करीब एक करोड़ श्रद्धालु आते हैं।
- सर्किंट हाउस : गुजरात के सोमनाथ में 21 जनवरी 2022 को नए सर्किंट हाउस का उद्घाटन किया गया। सर्किंट हाउस के हर कमरे से यात्रियों को समुद्र की लहरें और सोमनाथ का शिखर दिखता है।
- समुद्र दर्शन पथ : सोमनाथ के प्राकृतिक सौर्दृश्य को ध्यान में रखकर केंद्र सरकार की 'प्रशाद' योजना के तहत समुद्र दर्शन पथ बनाया गया। 1.5 किमी लंबा यह समुद्र दर्शन पथ समुद्र के किनारे बनाया गया है।
- सोमनाथ प्रदर्शनी गैलरी : यह गैलरी मंदिर स्थापत्य की थीम पर बनी है। सोमनाथ मंदिर के खंडित अवशेषों को यहां सजोकर रखा गया है। मंदिर की वास्तुकला, स्थापत्य का महत्व एवं अन्य जानकारी हिंदी व अंग्रेजी भाषा के साथ ब्रेल लिपि में भी दी गई है।
- प्राचीन सोमनाथ मंदिर : इंदौर की मराठा महारानी मातो श्री अहिल्याबाई होलकर ने 1783 में प्राचीन सोमनाथ मंदिर स्थापित किया था। इसी मंदिर में सोमनाथ पर हो रहे आकर्मणों के दौर में सोमनाथ महादेव की पूजा होती थी। मर्यादित पूजा परिसर और ढुर्गम प्रवेश द्वारा वाले पुराने मंदिर परिसर का नवनिर्माण कर कुल 1,800 वर्ग मीटर को मंदिर परिसर के क्षेत्र में शामिल किया गया है। मंदिर के प्रवेश मार्ग को सहज बनाया गया है।
- श्री पार्वती मंदिर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अगस्त, 2021 में इस मंदिर के लिए आधारशिला रखी थी। यहां करीब 30 करोड़ रुपये की लागत से सोमपुरा सलात शैली में मंदिर निर्माण, गर्भगृह और गृह्य मंडप विकास के संकल्प को ट्रस्ट सिद्धी के मार्ग पर ले जा रहा है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में 30 अक्टूबर, 2023 को सोमनाथ ट्रस्ट की बैठक हुई। इसमें ट्रस्ट द्वारा पर्यावरण के अनुकूल किए जा रहे उपायों और तीर्थ यात्रा का अनुभव और भी अधिक स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से मंदिर परिसर में किस प्रकार से नवीनतम तकनीक का लाभ उठाया जा सकता है, उसकी समीक्षा की गई।

देवघर

(बाबा बैद्यनाथ धाम) मिली हवाई कनेक्टिविटी

- पीएम मोदी ने जुलाई 2022 में देवघर में 16,800 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया।
- झारखण्ड के देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम में प्रशाद योजना के तहत आधुनिक सुविधाओं का विस्तार हो रहा है।
- 400 करोड़ रुपये की लागत से बाबा बैद्यनाथ धाम से हवाई संपर्क बनाने के लिए देवघर हवाई अड्डा का उद्घाटन।
- 2,000 तीर्थयात्रियों की क्षमता वाले द्वे बड़े तीर्थ मंडली भवन और शिवांगा तालाब का निर्माण।
- मार्च 2018 में देवघर एम्स का शिलान्यास ताकि देवघर समेत पूरे झारखण्ड के मरीजों को बेहतर व आधुनिक इलाज मिले।
- पीएम मोदी ने एम्स में हन-पेण्टेंट विभाग (आईपीडी) और ऑपरेशन थियेटर सुविधाओं की शुरुआत की।



आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

“

भारत एक अद्भुत सांस्कृतिक पुनर्जागरण का साक्षी बन रहा है। अयोध्या में राम मंदिर का पुनर्स्थापन, काशी विश्वनाथ धाम का भव्य पुनर्ख्यात, उज्जैन में महालोक का विस्तार, ये सब हमारे राष्ट्र की उस जागरूकता को प्रकट करते हैं जो अपनी आध्यात्मिक धरोहर को नई शक्ति के साथ उभार रही है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रति में भी मौलिक अधिकारों के खंड पर भगवान् श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण जी का विजय के बाद अयोध्या लौटने का जो चित्र बना हुआ है, वह इस बात का प्रमाण है कि मौलिक अधिकारों के प्रेरणा स्रोत भगवान् श्रीराम हैं। भगवान् श्रीराम मंदिर के पुनर्निर्माण का प्रयास 500 वर्षों से चल रहा था। प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर निर्माण के साथ काशी की छवि बदल गई है। काशी-तमिल संगमम उत्सव की तरह मनाया जाता है। काशी तमिल संगमम केवल संस्कृति का नहीं, विश्वास और विरासत के हृदय-स्पर्शी संवाद का उत्सव है, जहां तमिलनाडु की संवेदनाएं, काशी से जुड़ती हैं। इस अटूट उत्सव काशी तमिल संगमम 4.0 का आयोजन 2 दिसंबर से 15 दिसंबर तक इस वर्ष भी किया गया। दुनिया भर से लोग भारत और उसकी आध्यात्मिक राजधानी काशी की सांस्कृतिक गहराई में डूब कर खुद को भाग्यशाली मानते हैं। इससे बनारस और आसपास के क्षेत्र की आर्थिक प्रगति को भी नए पंख मिल गए हैं। सोमनाथ मंदिर, उज्जैन में महाकाल लोक, गुवाहाटी में कामाख्या मंदिर, ओडिशा में जगन्नाथ मंदिर, चारधाम

पीएम मोदी के नौ संकल्पों में शामिल है विकास और विरासत से जुड़ा यह आग्रह... हम कम से कम देश के 25 ऐसे स्थानों का दर्शन करेंगे जो हमारी विरासत से जुड़े हैं।



हेमकुंड साहिब-रोपवे

- अक्टूबर, 2022 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोविंदघाट को हेमकुंड साहिब से जोड़ने वाले हेमकुंड साहिब रोपवे परियोजना की आधारशिला रखी।
- यह लगभग 12.4 किलोमीटर लंबा होगा। यात्रा में अभी एक दिन का समय लगता है, वो सिर्फ 45 मिनट लगेगा।
- हेमकुंड साहिब के विकट रास्तों पर अब इस रोपवे से पैदल चलने की परेशानी नहीं होगी। यह रोपवे घांघरिया को भी जोड़ेगा, जो फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान का प्रवेश द्वार है।

गिरनार रोपवे

- गिरनार पर्वत पर मां अंबे विराजती हैं। यहां गोरखनाथ शिखर, गुरु दत्तात्रेय का शिखर और जैन मंदिर भी हैं। विश्व स्तरीय रोपवे बनाने से अब यहां सबको सुविधा और दर्शन का अवसर मिल रहा है। पहले मंदिर तक जाने में 5-7 घंटे का समय लगता था। वह दूरी अब रोपवे से 7-8 मिनट में ही तय हो जाती है। इस नई सुविधा के बाद यहां ज्यादा से ज्यादा श्रद्धालु और पर्टिक आ रहे हैं।
- 24 अक्टूबर, 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गिरनार में रोपवे का उद्घाटन किया। भवनाथ की तलहटी से गिरनार पर्वत पर अंबाजी मंदिर तक रोपवे बनाने से यह वैशिक मानचित्र में अपनी जगह बना रहा है।
- शुरुआत में 8 लोगों को ले जाने की क्षमता वाले 25-30 केबिन लगाए गए।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी 2024 को श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा में मुख्य यजमान बनाने से पूर्व 11 दिन के विशेष यमनियम का कठोरता से पालन किया था और श्रीरामलला की गर्भगृह में प्राणप्रतिष्ठा के बाद चरणामृत से अपना उपवास तोड़ा था।



शक्तिपीठ के शहर का पुनर्विकास

ગुजરात का पावागढ़

पावागढ़ में आध्यात्म, इतिहास, प्रकृति, कला-संस्कृति सब कुछ है। यहां एक ओर मां महाकाली का शक्तिपीठ तो दूसरी ओर जैन मंदिर की धरोहर है। पावागढ़ एक तरह से भारत की ऐतिहासिक विविधता के साथ सर्वधर्म सम्भाव का केंद्र रहा है। यूनेस्को ने चंपानेर के पुरातत्व स्थल को विश्व धरोहर वर्ल्ड हैरिटेज के रूप में दर्ज किया है।

- 18 जून 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंचमहल स्थित पावागढ़ में पुनर्विकरित श्री कालिका माता मंदिर का उद्घाटन किया। यहां 5 सदी और आजादी के 75 साल बाद शिखर ध्वज फहराया गया।
- यह क्षेत्र के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है।
- मंदिर का पुनर्निर्माण 2 चरणों में किया गया है। इसके पहले चरण का उद्घाटन प्रधानमंत्री ने अप्रैल 2022 में किया था।

सांझी विरासत और जनजातीय संग्रहालय

- देश के स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय लोगों द्वारा दिए गए बलिदान और योगदान को उचित मान्यता देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के निर्देश पर 'जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के संग्रहालय' स्थापित किए जा रहे हैं।
- आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों का पहला संग्रहालय रांची में भगवान बिरसा मुंडा संग्रहालय है। 10 अन्य जनजातीय संग्रहालय का निर्माण।
- आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित जनजातीय गौरव दिवस।
- राष्ट्रपति भवन संग्रहालय- फेज-2, नई दिल्ली।
- कर्तव्य पथ पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा का अनावरण- लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी। सुभाष चंद्र बोस संग्रहालय, दिल्ली।
- क्रांति मंदिर- स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित संग्रहालय।
- जलियांवाला बाग स्मारक परिसर का जीर्णोद्धार।
- भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय संग्रहालय, मुंबई।
- पूर्व प्रधानमंत्रियों को समर्पित प्रधानमंत्री संग्रहालय, नई दिल्ली।
- 2014 से पहले केवल 13 की तुलना में 2014 के बाद से अब तक 642 पुरावशेषों को भारत ने प्राप्त किया। अमेरिका से 2016 से अब तक 578 सांस्कृतिक कलाकृतियां भारत वापस लाई गईं।



आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

का कायाकल्प से भारत को सांस्कृतिक-आध्यात्मिक रूप से विश्व पटल पर ले जाने में सफलता मिली है। उज्जैन जो हजारों वर्षों से भारतीय कालगणना का केंद्र बिंदु रहा है, वो आज एक बार फिर भारत की भव्यता के एक नए कालखंड का उद्घोष कर रहा है। आज केदारनाथ धाम भी विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। बुद्ध सर्किट का विकास कर भारत एक बार फिर दुनिया को बुद्ध की तपोभूमि पर आमंत्रित कर रहा है। सही अर्थों में अब सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि राष्ट्र की प्राण वायु बनी है।

साथ ही, गुजरात के महसाणा में चालुक्य काल में बनाए गए सूर्य मंदिर का पुनरुद्धार हुआ है। पुणे में तुकाराम महाराज मंदिर, गुजरात में कालिका माता मंदिर जैसे अनेक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्रों के पुनरुद्धार पर सरकार ने काम किया है। आस्था के ये केंद्र सिर्फ एक ढांचा नहीं बल्कि भारत के लिए प्राणशक्ति है, प्राणवायु की तरह हैं। यह हमारे लिए ऐसे शक्तिपुंज हैं जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हमें जीवंत बनाए रखते हैं। इसी सोच से बीते कुछ वर्षों में एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ पुनरोद्धार की पहल हुई है।

देश के विभाजन के समय करतारपुर साहिब सीमा के उस पार रह गए थे, वहीं आज पवित्र गुरुद्वारा करतारपुर साहिब का द्वार खुला है जिसने करोड़ों सिखों की आस्था को पूरा किया गया है। अपने धर्म की रक्षा करने के लिए सिखों के 10वें गुरु श्री गोविंद सिंह के बेटों ने खुद को दीवार में चुनवाना स्वीकार किया था, उन बीर बालकों को स्थायी रूप से सम्मान देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने 26 दिसंबर को बीर बाल दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की। हाल ही में बनी संसद की नई इमारत के निर्माण और इसकी शुरुआत ने भी भारत के स्वर्ण युग की यादें ताजा कर दी हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने 28 मई 2023 को जब नई संसद में चौल राजवंश से जुड़े 'सेनोल' (राजदंड) की स्थापना की तो यह देश के लिए जड़ों से जोड़ने वाला संजोया गया क्षण रहा।

सांस्कृतिक पुनरुद्धार के दौर में देश सभी धर्म के आस्था केंद्रों के पुनरुद्धार पर काम कर रहा है। हिमालयी संस्कृति और बौद्ध संस्कृति का संरक्षण किया जा रहा है। विदेशों में भी भारतीय मंदिरों के पुनरुद्धार और नए मंदिरों



“

आने वाला समय नए अवसरों का है, नई संभालनाओं का है। इस अहम कालरखंड में भी भगवान राम के विचार ही हमारी प्रेरणा बनेंगे।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

का निर्माण भारत की संस्कृति के एक प्रतीक के रूप में उभरा है। गंगा नदी के पुनरुद्धार के लिए मिशन मोड में नमामि गंगे अभियान चलाया जा रहा है। गंगा केवल धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक रूप से भी महत्व रखती है। गंगा किनारे विकसित हुए सांस्कृतिक केंद्रों को विश्व पटल पर लाने, ज्ञान गंगा और अर्थ गंगा के रूप में गंगा को स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। संस्कृति और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव के कारण बीते 11 वर्षों के सेवाकाल में प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं अनेक बार सीमावर्ती क्षेत्रों, केदारनाथ धाम, बद्रीनाथ धाम एवं अन्य संप्रदायों के धार्मिक स्थलों की यात्रा की और भारत की विविध संस्कृतियों के पुनरुद्धार की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति के लिए कदम उठाए। 2014 से अब तक भारत की कई सांस्कृतिक धरोहरों को यूनेस्को से मान्यता मिली है। यह प्रमाणन भारत की संस्कृति को विश्व भर में पहचान, भारतीय सांस्कृतिक विरासतों के पुनरुद्धार की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। आज भारत नए आर्थिक-सामरिक शक्ति केंद्र के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हुए ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति के केंद्र के रूप में पूरे विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर रहा है।

सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना

प्रधानमंत्री मोदी के बीते 11 वर्षों के सेवाकाल में भारतीय सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक गौरव पुनर्स्थापित हुआ है। भारतीय संस्कृति को एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय पहचान



संदेश देती महापुरुषों की प्रतिमाएं

भारतीयों में मूर्ति को लेकर अटूट आस्था और श्रद्धा है। यहीं वजह है कि संस्कृति, धर्म, विरासत से नई पीढ़ी को रूबरू कराने और अपनी विरासत पर गर्व का संदेश देने के लिए देश में महापुरुषों, धर्म गुरुओं की ऊंची प्रतिमाएं स्थापित की जा रही हैं।

■ स्टैच्यू ऑफ यूनियन: दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा

भारत के एकीकरण के शिल्पी सरदार वल्लभ भाई पटेल की गुजरात के केवड़िया में बनी 182 मीटर की प्रतिमा दुनिया में सबसे ऊंची है। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 अक्टूबर 2018 को किया था।

■ स्टैच्यू ऑफ इलेलिटी: दुनिया की सबसे ऊंची बैठी हुई प्रतिमा 11वीं सदी के वैष्णव संत श्रीरामानुजाचार्य की स्मृति में हैदराबाद में दुनिया की सबसे ऊंची 216 फीट की बैठी हुई प्रतिमा स्थापित की गई है। उन्होंने धार्मिक निष्ठा, जाति और पंथ सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में समानता के विचार को बढ़ाया था। 5 फरवरी, 2022 को प्रधानमंत्री मोदी ने पंचधातु से बनी इस प्रतिमा का अनावरण किया।

■ स्टैच्यू ऑफ प्रोस्पेरिटी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 नवंबर, 2022 को बैंगलुरु के संस्थापक नाडप्रभु केम्पेगौडा की 108 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया।

■ सुहेलदेव स्मारक

पीएम मोदी ने उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में फरवरी, 2021 में सुहेलदेव स्मारक का शिलान्यास किया। भारतीयता की रक्षा में सुहेलदेव के योगदान को भी याद किया।

■ संत तुकाराम मंदिर

पुणे के देहू में पीएम मोदी ने जगद्गुरु श्री संत तुकाराम महाराज के मंदिर का उद्घाटन किया। श्रीसंत तुकाराम महाराज के निधन के बाद 36 चोटियों की पत्थर की चिनाई से एक शिला मंदिर बनाया गया था लेकिन इसका संचालन मंदिर के रूप में नहीं होता था। इसमें संत तुकाराम की मूर्ति भी है।



गोवा में श्रीराम की 77 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण

आज का भारत... अपनी सांस्कृतिक पहचान को नए संकल्पों और नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा रहा है। रामायण सर्किट, कृष्ण सर्किट, गयाजी के विकास कार्य, और कुंभ मेले का अभूतपूर्व प्रबंधन, ये सभी उदाहरण छासका प्रमाण हैं। ये जागृति भविष्य की पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा देती है। इसी कड़ी में 28 नंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गोवा के श्री संस्थान गोकर्ण पर्तगाली जीवोत्तम मठ के 550वें वर्ष के 'सार्ध पंचशतामनोत्सव' में शामिल होने पहुंचे, जहां प्रभु श्रीराम की 77 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा सुप्रसिद्ध मूर्तिकार रामसुतार ने बनाई है। यहां 'रामायण थीम पार्क' का उद्घाटन करने के साथ ही विशेष डाक टिकट और एक स्मारक सिक्का भी जारी किया। इस मौके पर, पीएम मोदी ने देश भर के श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि वे यहां आकर इस प्रतिमा के दर्शन करें। यह निश्चित रूप से एक विशेष अनुभव होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने इस समारोह में कर्नाटक के श्रीकृष्ण मठ की तरह अपने 9 आग्रह भी दोहराए जिसमें कहा कि विकसित भारत का सपना तभी पूरा होगा जब हम पर्यावरण की रक्षा को अपना धर्म मानें। धरती हमारी माता है और मठों की शिक्षा हमें प्रकृति का सम्मान करना सिखाती है।

धर्म के साथ-साथ मानवता और संस्कृति की रक्षा करता मठ

दक्षिण गोवा स्थित श्री संस्थान गोकर्ण पर्तगाली जीवोत्तम मठ की एक पहचान, वो सेवा भावना है जिसने सदियों से समाज के हर वर्ग को सहारा दिया है। जब इस क्षेत्र पर विपरीत परिस्थितियाँ आईं, तब इसी मठ ने समुदाय को सहारा दिया। आज शिक्षा से लेकर छात्रावासों तक, वृद्ध सेवा से लेकर जरूरतमंद परिवारों की सहायता तक, इस मठ ने अपने संसाधनों को हमेशा लोक-कल्याण के लिए समर्पित रखा है। पीएम मोदी कहते हैं कि मठ की हर पहल इस बात का प्रमाण है कि अद्यात्म और सेवा जब साथ चलते हैं, तो समाज की स्थिरता भी मिलती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती है। गोवा की पवित्र भूमि पर सदियों से भवित, संत-परंपरा और सांस्कृतिक साधना का सतत प्रवाह बहता रहा है। ये धरती प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ 'दक्षिण काशी' की पहचान भी संजोए हुए हैं। पर्तगाली मठ ने इस पहचान को और गहराई दी है।



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने
के लिए QR कोड स्कैन करें।



आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा पर केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पारित प्रताव में कहा था- 1947 में देरा का शरीर स्वतंत्र हुआ, 22 जनवरी 2024 को हुई प्राण प्रतिष्ठा प्रताव में कहा गया था कि प्रधानमंत्री ने अपने कार्यों से राष्ट्र का मनोबल ऊंचा किया है। देरा का सांस्कृतिक इतिहास मजबूत किया है।



2014 में उस दिन मिली, जिस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव को दुनिया ने स्वीकार कर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को मान्यता दी। आजादी के बाद लगभग 7 दशक तक औपनिवेशिक मानसिकता गाहे-ब-गाहे दिखती ही थी, ऐसे में सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के लिए जो आवश्यक कदम उठाने थे, वह नहीं उठाए गए। औपनिवेशिक काल में विदेशी आक्रान्ताओं ने भारतीय संस्कृति को काफी नुकसान पहुंचाया। भारत से चोरी या लूट कर ले जाई गई सैकड़ों ऐतिहासिक संपदा और धरोहरों को फिर भारत की धरा पर वापस लाया गया है। पूर्णतः भारतीय मानसिकता से ओत प्रोत सरकार के नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय संस्कृति का पुरोधा बनकर न केवल संस्कृति और परंपरा का संरक्षण किया है, बल्कि इसके पुनर्जागरण के लिए भी अभूतपूर्व काम किए हैं। इसका परिणाम हुआ है कि वैश्विक पटल पर हिमालय जितनी ऊंची और समुद्र सी गहराई की तरह भारतीय संस्कृति पुनर्स्थापित हुई है।

जब किसी देश की आर्थिक शक्ति के साथ सांस्कृतिक-ऐतिहासिक विरासत को भी स्वीकारा जाता है, तब सही अर्थों में वैश्विक पटल पर उस देश को सम्मान और पहचान मिलती है। दुनिया में ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में भारत की पहचान थी लेकिन गुलामी के लंबे कालखंड के दौरान भारत

द्वारका और बेट द्वारका का साइंटिफिक इन्वेस्टिगेशन

द्वारका और बेट द्वारका के साइंटिफिक इन्वेस्टिगेशन का काम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंडर वाटर आर्कोलॉजी विंग ने क्रमशः फरवरी 2025 और मार्च, 2025 में फिर से शुरू किया है। इससे पहले वर्ष 2005 से 2007 के बीच भी साइंटिफिक इन्वेस्टिगेशन किया गया था। इसके लिए रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल, अंडर वाटर कैमरे और जीवन रक्षा

जैकेट एवं गोताखोरों की विशेष पोशाकें खरीदी गई हैं।

राम मंदिर के मॉडल और राम दरबार के प्रतीक... 51 लाख रूपये तक बोली लगी

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक महत्व में श्रीराम जन्मभूमि को लेकर लोगों में आस्था और विश्वास का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेट में मिले राम मंदिर के मॉडल और राम दरबार को अपने घर ले जाने के लिए 51 लाख रूपये तक की बोली लगाई गई।

- पीएम मोदी के उपहार-प्रतीकों की नीलामी में सबसे अधिक कीमत वाले टॉप 100 प्रतीक चिन्हों में से 35 धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी हैं। इन सभी की बोली 10 लाख रूपये से अधिक लगाई गई है।
- 9,000 से अधिक उपहार-स्मृति चिन्ह अभी तक नीलाम किए गए हैं, उनमें अधिक कीमत वाले टॉप 15 में एक राम मंदिर का मॉडल भी है।
- 5 लाख रूपये से अधिक जिन 143 चिन्हों की बोली लगी है उसमें राम मंदिर के मॉडल और राम दरबार के 15 स्मृति चिन्ह शामिल हैं।

51 लाख रु. खर्च कर राम मंदिर मॉडल घर लाए

राम मंदिर का लकड़ी का एक मॉडल, जो कांच के बक्से में रखा गया है, उसे भगवान राम की जन्मभूमि पर एक ऊंचे प्लेटफार्म पर दर्शाया गया है। गर्भगृह (पवित्र स्थान) और हिस्से में पांच मंडप दिखाए गए हैं और



शिखर के ऊपर एक छोटा लाल तिकोना झँडा रखा गया है। इसकी नीलामी 2021 में 51 लाख रूपये में हुई जबकि बोली 2.5 लाख रूपये से शुरू हुई थी। वहीं एक अन्य मॉडल के लिए 81 लोगों ने बोली लगाई। यह राम मंदिर के मॉडल 11.85 लाख रूपये से ज्यादा की बोली लगाने वाले व्यक्ति को मिली जिसकी बोली महज 10,800 रूपये से शुरू हुई थी। वहीं एक अन्य मॉडल की बोली 5,400 रूपये से शुरू हुई थी जो 10.85 लाख रूपये से ज्यादा में खरीदी गई। इसके लिए 103 लोगों ने बोली लगाई थी।



राम दरबार के लिए करीब 30 लाख रुपये की बोली

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भगवान राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान की कांच की एक राम दरबार की मूर्ति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक कार्यक्रम में भेट की थी। इसकी नीलामी अक्टूबर, 2022 में की गई। बेस कीमत महज 32,400 रखी गई थी लेकिन इसे घर ले जाने के लिए 131 लोगों ने इच्छा



जाताई और अंत में करीब 30 लाख रुपये की बोली लगाने वाले को यह राम दरबार की मूर्ति मिली।

एक अन्य बोली में मॉडल के साथ राम दरबार के एक प्रतीक को 10 लाख रुपये की बोली लगाकर श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति ने खरीदा। यह महज 7वीं बोली में ही 16,200 से 10 लाख रुपये तक पहुंच गई।

एक अन्य नक्काशीदार मॉडल 55,000 रुपये शुरू होकर 10 लाख रुपये तक पहुंचा। प्रधानमंत्री मोदी को यह केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने भेट की थी जिसकी नीलामी अक्टूबर, 2024 में हुई।

पीएम भोदी के उपहारों से देश की संस्कृति लिंगेश्वरों में छाई

- ऑस्ट्रेलिया पहुंच काशी का गुलाबी मीनाकारी जहाज।
- जयपुर के चंदन से निर्मित बुद्ध जापान पहुंचे।



- गुजरात के कच्छ से रोगन पेंटिंग डेनमार्क पहुंची।
- यहूदी इतिहास को दर्शाने वाली कॉपर प्लेट इजरायल पहुंची।
- पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ब्राक ओबामा, पूर्व जापानी पीएम शिंजो आबे जैसे कई वैशिक नेताओं को पीएम मोदी ने खादी निर्मित हार्डकवर में 'भगवद गीता' उपहार में दी।

“

भारत आज एक निर्णायक ढौर से गुजर रहा है। देश की युवा शक्ति, बढ़ता आत्मविश्वास और सांस्कृतिक जड़ों के प्रति झुकाव, ये सब मिलकर एक नए भारत का निर्माण कर रहे हैं। विकसित भारत का हमारा संकल्प तभी पूरा होगा, जब आध्यात्म, राष्ट्र-सेवा और विकास की तीनों धाराएं साथ चलें।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

की प्रासंगिकता कम हो गई। गुलामी के कालखंड की मानसिकता से पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति को श्रेष्ठ मानने लगे थे। ऐसे में नए भारत के नायक के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकास और विरासत की सोच से भारतीय संस्कृति को नए पुनर्जागरण के दौर में पहुंचाया। वर्ष 2035 तक गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का नया लक्ष्य भी देश के सामने रखा है। आज देश की नई पीढ़ी में भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान बढ़ा है और भारतीयता की अनुभूति से गैरवान्वित हो रहे हैं।

अमृत काल: राम से राष्ट्र, देव से देश

वह कौन-सा विचार है जो भारत को एकजुट करता है? एक राष्ट्र के रूप में भारत क्या है? वह कौन-सा बुनियादी विचार है, जो इन सभी अलग-अलग समाजों, समुदायों और संस्कृतियों को एकजुट करता है? इसका उत्तर स्वयं प्रधानमंत्री मोदी स्पष्टता के साथ देते हैं- भारत की एक सांस्कृतिक पहचान है। हजारों साल पुरानी सभ्यता है। इसकी विशालता देखिए, सौ से अधिक भाषाएं, हजारों बोलियां, कहा जाता है कि हर बीस मील पर बोली बदल जाती है, रिवाज बदल जाते हैं, भोजन बदल जाता है, पहनावा बदल जाता है। दक्षिण से लेकर उत्तर भारत तक, सभी ओर विविधताएं दिखती हैं। लेकिन गहराई में देखेंगे तो पाएंगे कि भगवान राम की चर्चा हर मुंह से सुनने को मिलेगी, राम का नाम हर जगह पर सुनने को मिलेगा। तमिलनाडु से जम्मू-कश्मीर तक, कोई न कोई व्यक्ति ऐसा मिलेगा, जिनके नाम में कहीं न कहीं राम होगा। गुजरात में 'राम भाई', तमिलनाडु में 'रामचंद्रन', तो महाराष्ट्र में 'रामभाऊ' कहा जाता है। यानी, यह विशेषता भारत को संस्कृति से बांध रही है। अब जैसे, स्नान भी करते हैं तो वो पानी बाल्टी से लेते हैं, लेकिन 'गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती', यानी भारत के हर कोने की नदियों का स्मरण करके, 'नमदे, सिंधु, कावेरी जलेस्मिन सन्निधिं कुरु' यानी सभी नदियों के पानी से मैं स्नान कर रहा हूं। इतना ही नहीं, भारत में संकल्प की एक परंपरा होती है कोई संकल्प लेता है या पूजा करता



आवरण कथा

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

“

आज जब राम मंदिर के प्रांगण में कोलिदार फिर से प्रतिष्ठित हो रहा है, यह केवल एक वृक्ष की वापसी नहीं है, यह हमारी स्मृति की वापसी है, हमारी अस्मिता का पुनर्जागरण है, हमारी स्वाभिमानी सभ्यता का पुनः उद्घोष है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

है या मानो शादी हो रही है, तो पहले पूरे ब्रह्मांड से शुरू करते हैं, जंबूद्वीपे, भारतखंडे, आर्यान्त' से शुरू करते-करते, गांव तक आएंगे। फिर उस परिवार तक आएंगे, फिर उस परिवार के जो देवता होंगे, उसका स्मरण करेंगे।

इसी विविधता में एकता का संदेश देती भारतीय संस्कृति अमृत काल में विकसित भारत के संकल्प का आधार बनी है। भगवान राम के आदर्श किस तरह से सुशासन की सीख देते हैं, इस बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, “अयोध्या में राममंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के समय, सभी ने देव से देश और ‘राम से राष्ट्र’ का संकल्प लिया था। राम से राष्ट्र का अर्थ है- रामराज बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका। इसका अर्थ है, सुशासन और जनकल्याण का राज ! इसका अर्थ है, सबका साथ, सबका विकास की भावना से शासन ! राम से राष्ट्र का अर्थ है, नहिं दद्रिं कोउ, दुखी न दीना। जहां कोई न गरीब हो, न कोई दुखी हो, जहां भारत गरीबी से मुक्त होकर आगे बढ़े, राम से राष्ट्र का अर्थ है- अल्पमृत्यु नहिं कवनित पीरा। यानी, बीमारियों से असमय मृत्यु न हो, यानी स्वस्थ और सुखी भारत का निर्माण हो, राम से राष्ट्र का मतलब है- मानउं एक भगति कर नाता। अर्थात हमारा समाज ऊंच नीच के भाव से मुक्त हो और हर समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना हो।” इतना ही नहीं, राम से राष्ट्र का एक अर्थ

विद्वल रुक्मिणी मंदिर

- 14 जून 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के देहु में विद्वल रुक्मिणी मंदिर में पट्टिका का अनावरण किया।
- मंदिर तक 4 लेन कनेक्टिविटी की व्यवस्था केंद्र सरकार की ओर से की गई ताकि मंदिर तक श्रद्धालुओं को पहुंचने में किसी प्रकार की दिक्कत न हो।

स्वर्णिम भारत की साक्षी अमृत वाटिका

- 8,500 से अधिक अमृत कलशों के साथ देशभर से 20 हजार से अधिक प्रतिनिधि 31 अक्टूबर 2023 को दिल्ली पहुंचे।
- 31 अक्टूबर 2023 को ‘मेरी माटी, मेरा देश’ के साथ राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने वाले ‘आजादी का अमृत महोत्सव’ कार्यक्रम का समापन हुआ।
- 23.6 करोड़ से अधिक स्वदेशी पौधे देशभर में वसुधा वंदन थीम के अंतर्गत लगाए गए। 2.63 लाख अमृत वाटिकाएं बनाई गईं।

पीएम मोदी के साथ वैशिक नेताओं की भारत यात्रा

- जापान के प्रधानमंत्री और फ्रांस के राष्ट्रपति ने वाराणसी की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का आनंद उठाया।
- अमेरिका और चीन के राष्ट्रपति के साथ ब्रिटेन, इंजरायल, जापान के पीएम ने साबरमती आश्रम की शांति को महसूस किया। साबरमती आश्रम की अपनी यात्रा को चीनी राष्ट्रपति ने तो जीवन का सबसे यादगार पल कहा था।
- ब्रिटेन-ऑस्ट्रेलिया के पीएम ने दिल्ली स्थित अक्षरधाम मंदिर में दर्शन किए।
- दक्षिण कोरिया की फर्स्ट लेडी अयोध्या पहुंचीं।



विदेशों में बन रहे मंदिर

- वर्ष 2019 में मनामा और अबू धाबी में भगवान श्रीकृष्ण श्रीनाथजी के पुनर्निर्माण के लिए बड़ी राशि देने का ऐलान किया गया।
- फरवरी 2022 में पीएम मोदी ने घोषणा की थी कि बहरीन में एक स्वामीनारायण हिंदू मंदिर का निर्माण किया जाएगा इसके लिए बहरीन सरकार ने जमीन आवंटित कर दी है। यह मंदिर मध्य पूर्व में संयुक्त अरब अमीरात के बाद दूसरा ऐसा मंदिर होगा जो बीएपीएस द्वारा बनाया जाएगा।

अबू धाबी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फरवरी 2024 में बीएपीएस मंदिर का उद्घाटन किया। पीएम मोदी ने इसे मानवीय इतिहास का एक नया और स्वर्णिम अध्याय बताया था।




आवरण कथा
सांस्कृतिक पुनर्जागरण

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से भारत के स्थायी सांस्कृतिक व धार्मिक संबंध

भारत सरकार के विभिन्न अभिलेख और शोध संग्रह बताते हैं कि कंबोडिया, इंडोनेशिया, म्यांमार, फ़िलीपींस, सिंगापुर और वियतनाम जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से भारत के स्थायी सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध हैं। सदियों से चले आ रहे यह संबंध इस पूरे क्षेत्र में भारतीय दार्शनिक प्रणालियों, धार्मिक प्रथाओं, महाकाव्य, मंदिर वास्तुकला, प्रतिमा विज्ञान और प्रदर्शन कलाओं से प्रमाणित होते हैं। कंबोडिया रिथ्ट अंकोर वाट मंदिर परिसर दक्षिण पूर्व एशियाई वास्तुकला और कला पर भारतीय प्रभाव का एक उदाहरण है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने विदेश मंत्रालय के सहयोग से विदेशों में धार्मिक और सांस्कृतिक जुड़ाव के लिए किया संरक्षण और जीर्णोद्धार का काम...

धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र	देश
माई सन मंदिर और नेहान टॉवर	वियतनाम
वट फू मंदिर	लाओस
भूकंप से क्षतिग्रस्त मंदिर और पगोडा	म्यांमार
प्रीत विहार और ता प्रोम	कंबोडिया
फ्रिदा मस्जिद	मालदीव

- दक्षिण पूर्व एशिया (इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया और लाओस) में रामायण परंपराओं पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन।
- दक्षिण पूर्व एशिया में रामायण पर प्रदर्शनी जिसमें कंबोडिया के रीमकर, इंडोनेशिया के काकाविन रामायण और थाईलैंड के रामकियन को दर्शया गया।
- साझा बौद्ध विरासत पर सम्मेलन के साथ ही इन देशों में भारत महोत्सव का आयोजन।

यह भी है कि, “निसिचर हीन करउं महि भुज उठाइ पन कीन्ह”। यानी, मानवता विरोधी ताकतों का, आतंक के विनाश की प्रतिज्ञा ! और यही देश ने ऑपरेशन सिंदूर में देखा है। भारत, आतंक के विनाश की प्रतिज्ञा करके आतंकियों की कमर तोड़ रहा है। भारत आज नक्सलवाद, माओवादी आतंक को भी समाप्त करने की तरफ बढ़ रहा है। भारत आज अभूतपूर्व विजय के गर्व से भरा हुआ है।

यह भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूँजी और ऊर्जा से भरा हुआ है। आज के युवा भारत की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं... जो चांद पर तिरंगा लहरा रही है, जो 15 लाख किलोमीटर की यात्रा करके, सूर्य के पास जाकर मिशन आदित्य को सफल बना रही है, जो आसमान में तेजस... सागर में विक्रांत का परचम लहरा रही है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए अमृत पीढ़ी को भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी कहते भी हैं, “राम के विचार, ‘मानस के साथ ही जनमानस’ में भी हों, यही राष्ट्र निर्माण की सीढ़ी है।” विकसित भारत बनाने के लिए समाज की सामूहिक शक्ति की आवश्यकता है और राम मंदिर का दिव्य प्रांगण, भारत के सामूहिक सामर्थ्य की भी चेतना स्थली बन कर उभरा है। त्रेता युग की अयोध्या ने मानवता को नीति दी, 21वीं सदी की अयोध्या मानवता को विकास का नया मॉडल दे रही है। तब अयोध्या मर्यादा का केंद्र थी, अब अयोध्या विकसित भारत का मेरुदंड बनकर उभर रही है। भविष्य की अयोध्या में पौराणिकता और नूतनता का संगम होगा। प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर आगे बढ़ने के संकल्प भाव के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, “राम भेद से नहीं, भाव से जुड़ते हैं। उनके लिए व्यक्ति का कुल नहीं, उसकी भक्ति महत्वपूर्ण है। उन्हें वंश नहीं, मूल्य प्रिय हैं। उन्हें शक्ति नहीं, सहयोग महान लगता है। आज हम भी उसी भावना से आगे बढ़ रहे हैं। पिछले 11 वर्षों में, महिला, दलित, पिछड़े, अति-पिछड़े, आदिवासी, वंचित, किसान, श्रमिक, युवा, हर वर्ग को



विकास के केंद्र में रखा गया है। जब देश का हर व्यक्ति, हर वर्ग, हर क्षेत्र सशक्त होगा, तब संकल्प की सिद्धि में सबका प्रयास लगेगा। सबके प्रयास से ही 2047, जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, हमें 2047 तक विकसित भारत का निर्माण करना ही होगा।” विकास और विरासत के भाव से भरा भारत स्वयंहित से पहले, राष्ट्रहित को रखते हुए रामराज्य की पुनर्स्थापना को तैयार है।

विदेश मंत्रालय में अलग से विभाग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार आने के बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने सांस्कृतिक विरासत के जीर्णोद्धार, नवीनीकरण और समर्थन की देखभाल के लिए एक अलग विभाग बनाया है। केंद्र सरकार की सांस्कृतिक कूटनीति पूरी दुनिया के लाभ के लिए भारत की समृद्ध परंपराओं को बनाने, उनके पुनर्निर्माण और उन्हें पुनर्स्थापित करने पर केंद्रित है। दुनिया में भारत की संस्कृति अमिट छाप छोड़ रही है। आज भारत आने वाले विदेशी मेहमान अयोध्या या अन्य विरासत से जुड़े स्थलों पर जाने की इच्छा जरूर जताते हैं। जी-20 की अध्यक्षता के समय भी भारत ने संस्कृति, विविधता और सभ्यता का परिचय दिया। जी-20 के नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में आए विदेशी मेहमानों को प्रधानमंत्री मोदी ने जो उपहार दिए, वह भी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का परिचायक था। इन उपहारों को चुनने की सोच भी सराहनीय थी। भारत आने वाले विदेशी मेहमानों को सांस्कृतिक विरासत से जुड़े स्थलों पर ले जाना हो या उन्हें उपहार में भारत की संस्कृति और विचार से जुड़े सामान देना, भारतीय संस्कृति को नई पहचान दिला रहा है।

बीते 11 वर्षों के सेवाकाल में इतिहास का पहिया घूमा है और भारत का नया सांस्कृतिक उदय हो रहा है। केंद्र सरकार न सिर्फ देश बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी भारतीय आस्था, संस्कृति और विरासत को पहचान दिलाने की दिशा में काम कर रही है। वर्ष 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अबू धाबी में एक हिंदू मंदिर की आधारशिला रखी तो 2019 में मनामा और अबू धाबी

विदेशी मेहमानों ने धार्मिक स्थलों में की अराधना

- जुलाई 2025 में पीएम मोदी ने त्रिनिदाद और टोबैगो के पीएम कम्ला प्रसाद बिसेसर को अयोध्या स्थित राम मंदिर की प्रतिकृति मेंट की। साथ ही सरयू नदी और प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ का पवित्र जल भी दिया।
- सितंबर 2025 में पीएम मोदी ने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे और उनकी पत्नी को प्रार्थना करते देखकर प्रसन्नता व्यक्त की थी और कहा था कि प्रभु श्रीराम के आदर्श दुनिया भर में लाखों लोगों को शक्ति और प्रेरणा देते हैं।
- फरवरी 2024 में फिजी के उप प्रधानमंत्री बिमान प्रसाद ने रामजन्मभूमि मंदिर में दर्शन किए।
- मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीन चंद्र रामगुलाम 12 सितंबर 2025 को पत्नी के साथ रामलला की आरती उतारी और दर्शन-पूजन किए।
- श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को समर्पित छह विशेष स्मारक डाक टिकट जारी किए गए। आस्ट्रेलिया, कंबोडिया, अमेरिका, न्यूजीलैंड समेत विश्व के कई देशों ने श्रीराम के जीवन प्रसंगों पर डाक टिकट जारी किए हैं।
- केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय ने तमिलनाडु सरकार की मूर्ति शाखा को भगवान राम, लक्ष्मण और देवी सीता की कांस्य मूर्तियां सौंपी। सितंबर 2020 को लंदन की मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने ये कांस्य मूर्तियां भारतीय उच्चायोग को सौंपी थी। ये मूर्तियां नवंबर 1978 को राजगोपल विष्णु मंदिर से चोरी कर ली गई थीं।
- भारत अपनी समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को वैशिक मंच पर संरक्षित और प्रदर्शित करने में लगातार प्रगति कर रहा है। राष्ट्रीय गौरव के इस क्षण में, देश भर के सात प्राकृतिक विरासत स्थलों को यूनेस्को की विश्व विरासत स्थलों की संभावित सूची में शामिल किया गया है।
- यूनेस्को की इस संभावित सूची में भारत के विरासत स्थलों की संख्या 62 से बढ़कर 69 हो गई है। अब भारत के पास यूनेस्को द्वारा विचाराधीन कुल 69 स्थल हैं, जिनमें 49 सांस्कृतिक, 17 प्राकृतिक और 3 मिश्रित विरासत स्थल शामिल हैं। यह उपलब्धि भारत की असाधारण प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।



- यूनाइटेड किंगडम के तत्कालीन प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, पत्नी के साथ 10 सितंबर 2023 को दिल्ली स्थित रवामीनारायण अक्षराधाम मंदिर पहुंचे। दंपति ने यहां पूजा-अर्चना भी की।



भगवद् गीता कराती है जीवन संकल्पों का बोध

श्रीकृष्ण मठ से 9 संकल्प का आग्रह...

भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश, उनकी शिक्षा, हर युग में व्यवहारिक हैं। गीता के शब्द सिर्फ व्यक्ति ही नहीं, राष्ट्र की नीति को भी दिशा देते हैं। कर्नाटक के उद्घाटन में उसी भगवान कृष्ण को समर्पित श्रीकृष्ण मठ में गर्भगृह के सामने सुवर्ण तीर्थ मंडप का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 नवंबर को किया उद्घाटन और पवित्र कनकना किंदी के लिए स्वर्ण कवच समर्पित किया। साथ में, एक लाख लोगों के साथ श्रीमद्भागवद्गीता का किया पाठ, जहां से नागरिकों के लिए पेश किए नौ संकल्प...

प्रधानमंत्री मोदी के संबोधन के मुख्य बिंदु

- श्रीकृष्ण ने गीता का संदेश युद्ध की भूमि से दिया था जो सिखाती है कि शांति और सत्य की स्थापना के लिए अत्याचारियों का अंत भी आवश्यक है। राष्ट्र की सुरक्षा नीति का मूल भाव यही है, भारत वसुधैव कुटुंबकम भी कहता है तो धर्मो रक्षति रक्षितः का मंत्र भी दोहराता है।
- लाल किले से श्रीकृष्ण की करुणा का संदेश देता है तो उसी प्राचीर से मिशन सुदर्शन चक्र की उद्घोषणा भी करता है।
- अभी पिछले वर्ष मैं समुद्र के भीतर श्री द्वारका जी का दर्शन करने गया था, वहां से भी आशीर्वाद ले आया। इस प्रतिमा के दर्शन ने मुझे एक आत्मीय आध्यात्मिक आनंद दिया है।

पीएम मोदी ने देशवासियों से ऐसे 9 संकल्प का आग्रह किया जो हमारे वर्तमान और भविष्य के लिए है बहुत आवश्यकः

1. हमें जल संरक्षण करना है।
2. हम पेड़ लगाएंगे। एक घर में एक पेड़ मां के नाम।
3. हम देश के कम से कम एक गरीब का जीवन सुधारने का प्रयास करें।
4. जिम्मेदार नागरिक के रूप में हम सब स्वदेशी को अपनाएं।
5. हमें नैचुरल फार्मिंग को बढ़ावा देना है।
6. हम **healthy lifestyle** और मिलेट्स अपनाएंगे, खाने में तेल की मात्रा कम करेंगे।
7. योग को अपनाएं, इसे जीवन का हिस्सा बनाएं।
8. मैन्युस्क्रिप्ट...पांडुलिपियों के संरक्षण में सहयोग करें।
9. कम से कम देश के 25 ऐसे स्थानों का दर्शन करेंगे जो हमारी विरासत से जुड़े हैं।



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।



“

भगवान श्रीकृष्ण का पूरा जीवन, गीता का हर अध्याय - कर्त्ता, कर्तव्य और कल्याण का संदेश देता है। हम भारतीयों के लिए 2047 का काल सिर्फ अमृत काल ही नहीं, विकसित भारत के निर्माण का कर्तव्यकाल भी है। हमारा हर प्रयास देश के लिए होना चाहिए।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

में भगवान श्रीकृष्ण श्रीनाथजी के मंदिर पुनर्निर्माण के लिए बड़ी राशि देने का ऐलान किया। मंदिरों के विश्व स्तर पर संरक्षण की जरूरत है और अब सरकार इसके लिए प्रतिबद्ध है कि भारतीय आस्था को सशक्त किया जाए। आज, जब देश भारतीय सभ्यता का पुनर्निर्माण, पुनर्स्थापन और पुनर्जीवन कर रहा है, हमारा कार्य केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने कंबोडिया और अन्य देशों में भारतीय मंदिरों के जीर्णोद्धार की दिशा में काम किया है।

निश्चित रूप से 25 नवंबर 2025 को केसरिया धर्म-ध्वजा का आरोहण भारत की महान सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब बना है, जो सदियों तक प्रत्येक भारतीय की चेतना में अंकित होकर मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। प्रत्येक भारतीय में भक्ति, सेवा और समर्पण का यह भाव समर्थ, सक्षम, भव्य-दिव्य-नव्य भारत का आधार बनेंगे क्योंकि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर धर्म-ध्वजा के पुनर्स्थापन से शांति-समृद्धि के नए युग का आरंभ हुआ है। रामराज्य के आदर्शों से प्रेरित राष्ट्र विकसित भारत के संकल्पों की सिद्धि में जुट चुका है। ■



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

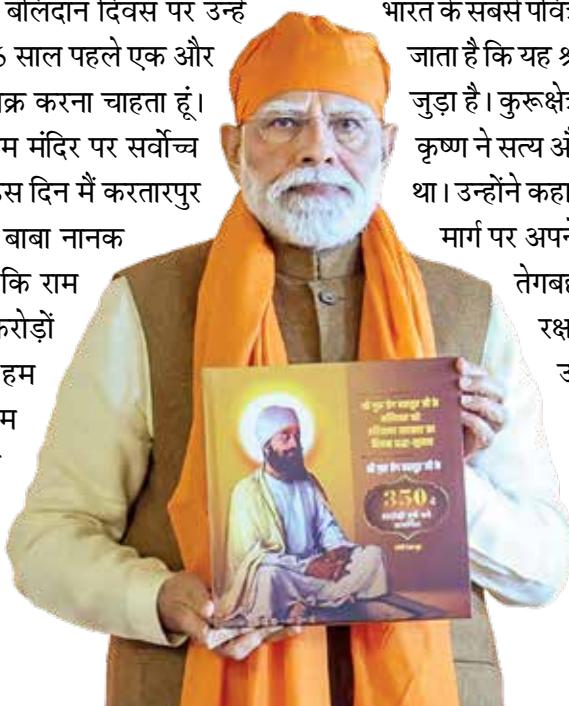
◆◆◆
गुरुओं की परंपरा...
◆◆◆

राष्ट्र के चरित्र, संस्कृति और मूल भावना का आधार

भारतीय धर्म-संस्कृति की ध्वजा ऊंची करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25 नवंबर की सुबह श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का कार्य पूर्ण होने पर धर्मध्वजा की स्थापना करने रामायण नगरी अयोध्या पहुंचे तो शाम को गीता उपदेश की नगरी कुरुक्षेत्र में थे। यहां भगवान् कृष्ण के पवित्र शंख के सम्मान में नवनिर्मित ‘पाञ्चजन्य स्मारक’ का उद्घाटन किया और ‘महाभारत अनुभव केंद्र’ का दौरा किया। साथ ही साथ नौवें सिख गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें बलिदान दिवस पर उन्हें नमन कर कार्यक्रम को किया संबोधित...



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 नवंबर के दिन को भारत की विरासत का अद्भुत संगम करार दिया। सुबह रामायण की नगरी अयोध्या, फिर गीता की नगरी कुरुक्षेत्र आने के साथ ही श्री गुरु तेगबहादुर जी के 350वें बलिदान दिवस पर उन्हें नमन करने का उल्लेख किया, “5-6 साल पहले एक और अद्भुत संयोग बना था, मैं उसका जिक्र करना चाहता हूं। साल 2019 में 9 नवंबर को जब राम मंदिर पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आया था, तो उस दिन मैं करतारपुर कॉरिडोर के उद्घाटन के लिए डेरा बाबा नानक में था। मैं यही प्रार्थना कर रहा था कि राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो, करोड़ों राम भक्तों की आकांक्षा पूरी हो और हम सभी की प्रार्थना पूरी हुई, उसी दिन राम मंदिर के पक्ष में निर्णय आया। अब आज अयोध्या में जब धर्म ध्वजा की स्थापना हुई है, तो फिर मुझे सिख



संगत से आशीर्वाद लेने का मौका मिला है।”

कुरुक्षेत्र की भूमि पर पीएम मोदी ने पाञ्चजन्य स्मारक का लोकार्पण भी किया और ब्रह्म सरोवर में दर्शन और पूजा की, जो भारत के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। इसके बारे में कहा जाता है कि यह श्रीमद् भगवद् गीता के दिव्य रहस्योद्घाटन से जुड़ा है। कुरुक्षेत्र की इसी धरती पर खड़े होकर भगवान् श्री कृष्ण ने सत्य और न्याय की रक्षा को सबसे बड़ा धर्म बताया था। उन्होंने कहा था - स्वधर्मे निधनं श्रेयः। अर्थात्, सत्य के मार्ग पर अपने धर्म के लिए प्राण देना भी श्रेष्ठ है। श्रीगुरु तेगबहादुर जी ने भी सत्य, न्याय और आस्था की रक्षा को अपना धर्म माना और इस धर्म की रक्षा उन्होंने अपने प्राण देकर की। इसी त्याग के कारण, श्रीगुरु तेग बहादुर साहिब को हिंदी चादर कहकर पूजा जाता है।

कार्यक्रम के दौरान भारत सरकार ने श्रीगुरु तेग बहादुर जी से जुड़ा एक स्मृति



श्रीराम जन्मभूमि मंदिर पर धर्म ध्वजा स्थापना का कार्यक्रम मार्गशीर्ष महीने के शुक्ल पक्ष की शुभ पंचमी तिथि को हुआ, जो श्रीराम और मां सीता की विवाह पंचमी के अभिजीत मुहूर्त के साथ मेल खाता है। यह दिन दिव्य मिलन का प्रतीक है। यह दिन नौवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर जी के शहीदी दिवस को भी दर्शाता है। उन्होंने 17वीं सदी में अयोध्या में लगातार 48 घंटों तक ध्यान किया था, जिससे इस दिन का आध्यात्मिक महत्व और बढ़ जाता है।



डाक टिकट और विशेष सिक्का जारी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कार्यक्रम में कहा- “मेरी कामना है, हमारी सरकार गुरु परंपरा की इसी तरह निरंतर सेवा करती रहे।” गुरु तेग बहादुर जी के 350वें बलिदान दिवस के सम्मान में, भारत सरकार एक वर्ष तक चलने वाला स्मरणोत्सव मना रही है।

कुरुक्षेत्र में पीएम मोदी ने श्री गुरु तेग बहादुर जी के अदम्य साहस, त्याग और हमारी सांस्कृतिक विरासत की प्रदर्शनी भी देखी। उन्होंने कहा कि आज हिंदुस्तान का जो सशक्त स्वरूप है, उसमें श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जैसे युगपुरुषों का त्याग और समर्पण भी समाहित है। श्री गुरु तेग बहादुर जी जैसे व्यक्तित्व... इतिहास में विरले ही होते हैं। उनका जीवन, उनका त्याग, उनका चरित्र बहुत बड़ी प्रेरणा है। मुगल आक्रान्ताओं के उस काल में, गुरु साहिब ने वीरता का आदर्श स्थापित किया। पिछले महीने, एक पावन यात्रा के रूप में गुरु महाराज के ये पावन ‘जोड़ा साहिब’ दिल्ली से पटना साहिब ले जाए गए। वहां भी मुझे इन पवित्र ‘जोड़ा साहिब’ के सामने अपना शीश नवाने का अवसर मिला। पीएम मोदी ने कुछ समय पहले अफगानिस्तान से गुरु ग्रंथ साहिब के तीन मूल स्वरूपों की भारत वापसी को हर देशवासी के लिए गैरव का क्षण बताने के साथ ही कहा कि हमारी सरकार ने गुरुओं के हर तीर्थ को आधुनिक भारत के स्वरूप से जोड़ने का प्रयास किया है।

करतारपुर कॉरिडोर का काम पूरा कराना हो, हेमकुंड साहिब में रोपवे प्रोजेक्ट का निर्माण करना हो, आनंदपुर साहिब में विरासत-ए-खालसा संग्रहालय का विस्तार हो, देश ने गुरुजनों की गौरवशाली परंपरा को अपना आदर्श मानकर इन सारे कामों को पूरी श्रद्धा से पूरा करने का प्रयास किया है। सभी जानते हैं कि कैसे मुगलों ने वीर साहिबजादों के साथ भी क्रूरता की सारी सीमाएं पार कर दी थीं। वीर साहिबजादों ने दीवार में चुना जाना स्वीकार किया लेकिन अपने कर्तव्य और धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा। इन्हीं आदर्शों के सम्मान के लिए अब हर साल 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाया जाता है। सिख परंपरा के इतिहास और गुरुओं की शिक्षाओं को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बनाया गया है, ताकि सेवा, साहस और सत्य के यह आदर्श नई पीढ़ी की सोच का आधार बनें। ■



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

भारत का उभरता विकास मॉडल विश्व के लिए नई प्रेरणा



“

हमने सोशल सिक्योरिटी नेट का दायरा ही नहीं बढ़ाया, हम लगातार ‘सैचुरेशन मिशन’ पर काम कर रहे हैं। यानी किसी भी योजना के लाभ से एक भी लाभार्थी छूटे नहीं। जब कोई सरकार इस लक्ष्य के साथ काम करती है, हर लाभार्थी तक पहुंचना चाहती है तो किसी भी तरह के भेदभाव की गुंजाइश भी खत्म हो जाती है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

ऐसे समय में जब दुनिया अवरोधों को लेकर आशंकित है तब भारत निर्बाध और तीव्र गति से उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहा है। आज भारत न केवल एक उभरता हुआ बाजार है बल्कि उभरता हुआ मॉडल भी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में 17 नवंबर को छठे रामनाथ गोयनका व्याख्यान में बताया कि आज दुनिया भारत के विकास मॉडल को मान रही है आशा का मॉडल...

पूरी दुनिया के लिए बीते चार-पांच साल चुनौतियों से भरे रहे हैं। 2020 में कोरोना महामारी का संकट आया, पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था अनिश्चितताओं से घिर गई। ग्लोबल सप्लाई चेन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और सारा विश्व निराशा की ओर जाने लगा। इन सारे संकटों के बीच, भारत की इकोनॉमी ने उच्च विकास दर हासिल करके दिखाया। साल 2022 में यूरोपियन क्राइसिस के कारण पूरी दुनिया की सप्लाई चेन और एनर्जी मार्केट प्रभावित हुआ। इसके बावजूद, 2022-23 में देश की इकोनॉमी की ग्रोथ तेजी से होती रही। छठे रामनाथ गोयनका व्याख्यान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के इस विकास और उसका लाभ हर व्यक्ति तक पहुंचाने की बात की। पीएम मोदी कहते हैं कि साल 2023 में वेस्ट एशिया में स्थितियां बिगड़ीं, तब भी ग्रोथ रेट तेज रही। इस साल भी जब दुनिया में अस्थिरता है, तब भी हमारी ग्रोथ रेट सात प्रतिशत के आसपास है। एक से बढ़कर एक चुनौतियां आईं लेकिन वो भारत की रफ्तार को रोक नहीं पाई।

देश के विकास के लिए बहुत जरूरी है कि विकास का लाभ सभी तक पहुंचे। दलित-पीड़ित-शोषित-वंचित, सभी तक जब सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचता है तो सामाजिक न्याय सुनिश्चित होता है। जब समाजिक न्याय सुनिश्चित होता है तो देश तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ता है। यही कारण है कि आज का भारत विकसित और आत्मनिर्भर होने के लिए उत्सुक है। पीएम मोदी बीते 11 वर्षों में सोशल सिक्योरिटी पर हुए काम

हमेशा कर्तव्य को सर्वोपरि रख, देशहित को दी प्राथमिकता

गीता के एक श्लोक, सुख दुःखे समे कृत्वा, लाभा-लाभौ जया-जयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व, नैवं पापं अवाप्यसि॥ से रामनाथ गोयनका बहुत प्रेरणा लेते थे। इस श्लोक का अर्थ है सुख-दुख, लाभ-हानि और जय-पराजय को समान भाव से देखकर कर्तव्य-पालन के लिए युद्ध करो, ऐसा करने से तुम पाप के भागी नहीं बनोगे। उनकी विचारधारा कोई भी रही हो लेकिन उन्होंने देशहित को हमेशा प्राथमिकता दी। आजादी के बाद जब हैदराबाद और राजाकारों के अत्याचार का विषय सामाने आया तो उन्होंने सरदार वल्लभभाई पटेल की मदद की। इतना ही नहीं, सतर के दशक में जब बिहार में छात्र आंदोलन को नेतृत्व की जरूरत थी तो उन्होंने नानाजी देशमुख के साथ मिलकर जयप्रकाश नारायण को उस आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए तैयार किया। इमरजेंसी के दौरान भी वह झुके नहीं। सामने कितनी ही बड़ी ताकत क्यों न हो, उन्होंने हमेशा सत्य का साथ दिया और कर्तव्य को सर्वोपरि रखा।

मैकाले की सोच पर 2035 तक लगाना है ताला

प्रधानमंत्री मोदी ने आह्वान किया... हमारा विरोध अंग्रेजी भाषा से नहीं है। हम भारतीय भाषाओं के समर्थन में हैं। मैकाले द्वारा 1835 में जो अपराध किया गया, उसके 2035 में 200 साल हो जाएंगे, इसलिए मैं पूरे देश से एक आह्वान करना चाहता हूं कि अगले 10 साल में हमें संकल्प लेकर चलना है कि मैकाले ने भारत को जिस गुलामी की मानसिकता से भर दिया है, उस सोच से मुक्ति पाकर रहेंगे। 10 साल हमारे पास बहुत महत्वपूर्ण हैं। 1835 में शुरू हुई यात्रा, 2035 तक हमें खत्म करके रहना है। मेरा सपना-इस सोच पर ताला लगाना है।



को अद्भुत बताया है। 10 साल पहले सिर्फ 25 करोड़ लोग सोशल सिक्योरिटी के दायरे में थे। अब ये संख्या बढ़कर 94 करोड़ पहुंच चुकी है और यहीं तो सच्चा सामाजिक न्याय है।

रामनाथ गोयनका ने जन आंदोलन की शक्ति को दी नई ऊंचाई

पत्रकारिता, अभिव्यक्ति और जन आंदोलन की शक्ति को रामनाथ गोयनका ने भारतीय लोकतंत्र में नई ऊंचाई दी। एक दूरदर्शी, एक संस्था निर्माता, एक राष्ट्रवादी और एक मीडिया



सच्चाई में बदल रहा सामाजिक न्याय

- खुले में शौच से मुक्ति के लिए 12 करोड़ शौचालयों का निर्माण। यह गरीब लोगों के जीवन में गरिमा लेकर आया।

57

करोड़ जनधन बैंक खातों ने उन लोगों का फाइनेंशियल इंवलूजन किया।

4

करोड़ गरीबों को पक्के घरों ने गरीबों को नए सपने देखने का साहस दिया, उनकी रिस्क टेकिंग कैपेसिटी बढ़ाई।

25

करोड़ लोगों ने पिछले 11 साल में गरीबी को परास्त करके दिखाया।

लीडर के रूप में इंडियन एक्सप्रेस ग्रुप को सिर्फ एक अखबार नहीं, बल्कि एक मिशन के रूप में भारत के लोगों के बीच स्थापित किया। रामनाथ गोयनका को याद करते हुए पीएम मोदी ने उल्लेख किया कि उनके नेतृत्व में यह समूह, भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय हितों की आवाज बना। इसलिए 21वीं सदी के इस कालखंड में जब भारत विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है तो उनकी प्रतिबद्धता, प्रयास, विजन हमारी बहुत बड़ी प्रेरणा है। ■



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

चार श्रम संहिताएं हुई लागू

श्रम की चौगुनी शक्ति... सबका सम्मान, सबकी सुरक्षा

जितनी ताकत सत्यमेव जयते की है, उतनी ही ताकत राष्ट्र के विकास के लिए श्रमेव जयते की है क्योंकि किसी की मेहनत, किसी की सोच, किसी के जोश और हर श्रमिक के योगदान से नया भारत आत्मनिर्भर बन रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'श्रमेव जयते' के इसी मंत्र से चाक-चौबंद चार श्रम संहिताएं 21 नवंबर 2025 को लागू कर दी गई। ये सुधार देश के हर श्रमिक को सशक्त, सुरक्षित और सम्मानित बनाने की दिशा में है बड़ा कदम...

श्रम करने वाला श्रमिक एक श्रमयोगी है। वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के कई समस्याओं का समाधान और आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उनके प्रति देखने का दृष्टिकोण और प्रतिष्ठा देने की जरूरत के साथ ही शासन की व्यवस्थाओं में समयानुकूल परिवर्तन की आवश्यकता रही। सामाजिक जीवन में श्रम एवं श्रमिक की प्रतिष्ठा, श्रम योगी का गौरव राष्ट्र की सामूहिक जिम्मेदारी है। उसी दिशा में एक प्रयास के तहत एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए भारत सरकार ने चार श्रम संहिताओं - वेतन संहिता, 2019, औद्योगिक संबंध संहिता, 2020, सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 और व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य



संहिता 1 वेतन संहिता 2019

वेतन संहिता, 2019 का उद्देश्य चार मौजूदा कानूनों के प्रावधानों को सरल और तर्कसंगत बनाना है। इसका लक्ष्य श्रमिकों के अधिकारों को मजबूत करना है।



- ✓ वेतन संहिता, 2019 के तहत नियमों की संख्या 163 से घटाकर 58, फॉर्मों की संख्या 20 से घटाकर 6 और रजिस्टरों की संख्या 24 से घटाकर 2 कर दी गई है।
- ✓ **न्यूनतम मजदूरी :** यह संहिता संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों के सभी कर्मचारियों के लिए न्यूनतम मजदूरी का अधिकार सुनिश्चित करती है।
- ✓ **मजदूरी निर्धारण :** सरकार श्रमिकों के कौशल स्तर भौगोलिक क्षेत्रों और जौकरी की स्थितियों पर विचार कर न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करेंगी। पहले, न्यूनतम वेतन केवल अनुसूचित रोजगारों पर लागू होता था, जो कर्तीब 30% कार्यबल को कवर करता था।
- ✓ **लैंगिक समानता :** समान कार्य के लिए भर्ती, मजदूरी और रोजगार की शर्तों में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं होगा।
- ✓ **मजदूरी भुगतान :** पहले केवल 24,000 रुपए प्रति माह तक वेतन पाने वाले कर्मचारियों के संबंध में लागू थे, अब वेतन सीमा से परे सभी कर्मचारियों पर लागू होंगे।
- ✓ **ओवरटाइम मुआवजा :** नियोक्ता नियमित कार्य धंटों से अधिक किए गए किसी भी कार्य के लिए, सामान्य मजदूरी के दोगुने से कम दर पर ओवरटाइम वेतन का भुगतान नहीं कर सकता।
- ✓ **एक राष्ट्र, एक वेतन संहिता :** चार मौजूदा वेतन कानूनों को एक में समाहित करती है, जिसमें वेतन, श्रमिक, कर्मचारी आदि की एक समान परिभाषा है।



“ श्रमेव जयते! हमारी सरकार ने चार लेबर कोड लागू कर दिए हैं। आजादी के बाद यह श्रमिकों के हित में किया गया सबसे बड़ा रिफॉर्म है। यह देश के कामगारों को बहुत सशक्त बनाने वाला है। इससे जहां नियमों का पालन करना बहुत आसान होगा, वहीं ‘ईज ऑफ ड्रूइंग बिजनेस’ को बढ़ावा मिलेगा। ”

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

के लिए श्रम सुधारों को आगे बढ़ाएंगे।

15 अगस्त 2015 को लाल किले के प्राचीर से श्रमेव जयते का आह्वान करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चार श्रम संहिताओं के कार्यान्वयन का स्वागत करते हुए कहा कि ये कोड श्रमिक भाई-बहनों के लिए सामाजिक सुरक्षा, समय पर वेतन और सुरक्षित कार्यस्थल की व्यवस्था सुनिश्चित करती हैं। इसके साथ ही, ये बेहतर और लाभकारी

शर्त संहिता, 2020 को 21 नवंबर, 2025 से लागू करने की घोषणा की है। इसने मौजूदा 29 श्रम कानूनों की जगह ली है। यह श्रम नियमावली को आधुनिक बनाती है और मजदूरों की भलाई एवं श्रम इकोसिस्टम को काम की बदलती दुनिया के साथ जोड़ती है। यह ऐतिहासिक कदम भविष्य के लिए कार्यबल को तैयार करने के साथ ही उद्योग-अनुकूल बनाने की भी नींव रखेगा। यह आत्मनिर्भर भारत

संहिता 2

ऑद्योगिक संबंध
संहिता, 2020

ऑद्योगिक संबंध संहिता इस तथ्य को स्वीकार करती है कि श्रमिक का अस्तित्व उद्योग के अस्तित्व पर निर्भर करता है। यह सौहार्द एवं ईज ऑफ फ्लूइंग बिजनेस को बढ़ावा देता है।



- ✓ अनुपालन बोझ घटा : नियमों की संख्या 105 से घटकर 51, फार्म की संख्या 37 से घटकर 18 और रजिस्टरों की संख्या 3 से घटकर शून्य हो गई है।
- ✓ निश्चित अवधि का रोजगार : मजदूरी और लाभों में पूर्ण समानता, समय-सीमा वाले अनुबंधों की अनुमति। एक वर्ष के बाद ग्रेचुटी की पात्रता।
- ✓ पुनः कौशल निधि : छंटनी किए गए प्रत्येक कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए 15 दिनों की मजदूरी के बराबर राशि का योगदान कर निधि स्थापित।
- ✓ ट्रेड यूनियन की मान्यता : 51% सदस्यता वाले यूनियन को समझौताकारी यूनियन के रूप में मान्यता मिलेगी।
- ✓ श्रमिक की विस्तारित परिभाषा : कर्मचारियों, पत्रकारों और 18,000 रुपये प्रतिमाह तक कमाने वाले कर्मचारी शामिल।
- ✓ महिलाओं का प्रतिनिधित्व : लैंगिक-संवेदनशील मामले निपटारे के लिए शिकायत समितियों में महिलाओं का आनुपातिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित।
- ✓ घर से काम का प्रावधान : पारस्परिक सहमति से सेवा क्षेत्रों में अनुमति।
- ✓ न्यायाधिकरण : विवाद निपटारे के लिए न्यायिक और प्रशासनिक सदस्य से बने दो-सदस्यीय न्यायाधिकरण।
- ✓ सीधा न्यायाधिकरण पहुंच : पार्टियां 90 दिनों के भीतर विफल सुलह के बाद सीधे न्यायाधिकरणों से संपर्क कर सकती हैं।

संहिता 3

सामाजिक सुरक्षा
संहिता, 2020

सामाजिक सुरक्षा संहिता में मौजूदा नौ सामाजिक सुरक्षा आधिनियमों को शामिल किया गया है। यह संहिता सभी श्रमिकों को जीवन, स्वास्थ्य, मातृत्व और भविष्य निधि लाभों को कवर करते हुए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है।



- ✓ समयबद्ध ईपीएफ जांच : ईपीएफ जांच और वस्तुली कार्यवाही शुरू करने के लिए पांच साल की समय सीमा निर्धारित।
- ✓ घटी हुई ईपीएफ अपील जमा राशि : ईपीएफओ के आदेशों के खिलाफ अपील करने वाले नियोक्ताओं को अब आकलन की गई राशि का केवल 25% जमा करना होगा।
- ✓ निर्माण उपकर के लिए स्व-मूल्यांकन : नियोक्ता अब बिल्डिंग और अन्य निर्माण कार्य के संबंध में उपकर देनदारियों का स्व-मूल्यांकन कर सकते हैं।
- ✓ गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों का समावेशन : सामाजिक सुरक्षा कवरेज की नई परिभाषा शामिल की गई है - 'एग्रीगेटर', 'गिग वर्कर', और 'प्लेटफॉर्म वर्कर'।
- ✓ सामाजिक सुरक्षा निधि : असंगठित, गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों के लिए जीवन, विकलांगता, स्वास्थ्य और वृद्धावस्था लाभों को कवर करने वाली योजनाओं के वित्तपोषण के लिए एक समर्पित निधि प्रस्तावित।
- ✓ आश्रितों की विस्तारित परिभाषा : दादा-दादी तक बढ़ाया गया। महिला कर्मचारियों के आश्रित सास-ससुर भी शामिल।
- ✓ मजदूरी की एक समान परिभाषा : 'मजदूरी' में अब मूल वेतन, महंगाई भत्ता और रिटेनिंग भत्ता शामिल हैं।
- ✓ यात्रा दुर्घटनाएं शामिल : घर और कार्यस्थल के बीच यात्रा में होने वाली दुर्घटनाओं को अब रोजगार-संबंधित माना जाता है।
- ✓ ग्रेचुटी : पात्रता अवधि को 5 वर्ष से घटाकर 1 वर्ष किया है।

की यात्रा को भी तेज गति मिलेगी।

देश के कई श्रम कानून आजादी से पहले और आजादी के बाद के शुरुआती दौर (1930–1950) में बनाए गए थे। उस समय अर्थव्यवस्था और काम की दुनिया असल में बहुत अलग थी। बड़ी अर्थव्यवस्था वाले अधिकतर देशों ने हाल के दशकों में अपने श्रम से जुड़े नियमों को बेहतर और मजबूत किया, वहीं भारत 29 केंद्रीय श्रम

संहिता 4

कामकाजी सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सेवा शर्ते संहिता 2020

यह संहिता 13 केंद्रीय श्रम कानूनों के प्रारंगिक प्रावधानों को शामिल कर, सरलीकरण और युक्तिकरण के बाद तैयार की गई है। यह श्रमिक अधिकार और सुरक्षित कार्य परिस्थितियां सुनिश्चित करती है। इससे आर्थिक विकास और रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। इससे भारत का श्रम बाजार अधिक क्रुशल, निष्पक्ष और भविष्य के लिए तैयार हो जाएगा।



- ✓ एकीकृत पंजीकरण : इलेक्ट्रॉनिक पंजीकरण के लिए 10 कर्मचारियों की एक समान सीमा निर्धारित।
- ✓ खतरनाक काम तक विस्तार : सरकार इस संहिता के प्रावधानों को एक भी कर्मचारी वाले किसी भी प्रतिष्ठान तक बढ़ा सकती है।
- ✓ सरलीकृत अनुपालन : प्रतिष्ठानों के लिए एक लाइसेंस, एक पंजीकरण और एक रिटर्न का ढांचा पेश।
- ✓ प्रवासी श्रमिकों की व्यापक परिभाषा : प्रवासी श्रमिकों की परिभाषा में अब वे श्रमिक शामिल हैं जो सीधे, ठेकेदारों के माध्यम से नियोजित हैं या अपने आप प्रवास करते हैं।
- ✓ स्वास्थ्य : कर्मचारियों के लिए मुफ्त वार्षिक स्वास्थ्य जांच।
- ✓ नियुक्ति पत्र : पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए मजदूरी और सामाजिक सुरक्षा को दर्शाते हुए नियुक्ति पत्र दिए जाएंगे।
- ✓ महिलाओं को रोजगार : महिलाएं सभी प्रकार के प्रतिष्ठानों में और रात के घंटों में सहमति और सुरक्षा उपायों के साथ काम कर सकती हैं।
- ✓ विस्तारित मीडिया कर्मी परिभाषा : 'श्रमजीवी पत्रकार' और 'सिने कर्मकार' में अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और ऑडियो-विजुअल उत्पादन के सभी रूपों में कार्यरत कर्मचारी शामिल।
- ✓ असंगठित श्रमिकों के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस : प्रवासी श्रमिकों सहित असंगठित श्रमिकों के लिए होगा एक राष्ट्रीय डेटाबेस।
- ✓ पीड़ित को मुआवजा : छोट या मृत्यु के मामले में, व्यायालयों द्वारा लगाए गए जुर्माने का कम से कम 50% पीड़ितों या



उनके कानूनी वारिसों को मुआवजे के रूप में भुगतान करने का निर्देश दिया जा सकता है।

- ✓ सुरक्षा समितियां : 500 या उससे अधिक श्रमिकों वाले प्रतिष्ठान नियोक्ता-श्रमिक प्रतिनिधित्व के साथ सुरक्षा समितियों का गठन करेंगे।
- ✓ सामाजिक सुरक्षा निधि : असंगठित श्रमिकों के कल्याण और लाभ वितरण के लिए एक निधि की स्थापना की गई है।

“ श्रम सुधारों से समय पर वेतन, सभी श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, सुरक्षित और सम्मानजनक कार्यस्थल, गिरा और प्लेटफॉर्म वर्कर्स को ज्यादा अधिकार और युवाओं के साथ नारी शक्ति के लाभ भी सुनिश्चित हुए हैं।

-डॉ. मनसुख मांडविया
केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री

कानून बिखरा हुआ था और कई हिस्सों में पुराने नियमों के तहत काम करता रहा। बाधा उत्पन्न करने वाले ये फ्रेमवर्क बदलती इकोनॉमिक सच्चाई और रोजगार के बदलते तरीकों के साथ तालमेल बिठाने में विफल रहे। इससे अनिश्चितता पैदा हुई। मजदूर और इंडस्ट्री दोनों के लिए नियमों का पालन करने का बोझ बढ़ा। चार श्रम कानून को लागू करने से औपनिवेशिक जमाने की संरचना से आगे बढ़ने और

आधुनिक वैश्विक ट्रेंड के साथ तालमेल बिठाने की इस लंबे समय से चली आ रही जरूरत को पूरा किया गया है। ये संहिताएं मिलकर मजदूर और कंपनी दोनों को मजबूत बनाते हैं। एक ऐसा श्रमबल तैयार करते हैं जो सुरक्षित, उत्पादक और काम की बदलती दुनिया के साथ तालमेल बिठाता है, इससे ज्यादा मजबूत, प्रतिस्पर्धात्मक और आत्मनिर्भर देश बनने का रास्ता बनता है। ■

केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय

भारत में अब लगेंगी आरईपीएम की एकीकृत स्वदेशी फैक्ट्री



कैबिनेट के फैसलों पर प्रेस ब्राइफिंग
देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सिंटर्ड रेयर अर्थ परमानेट मैग्नेट मैन्युफैक्चरिंग का भारत में पहला इंटीग्रेटेड इकोसिस्टम बनाने की एक योजना को मंजूरी दी। आरईपीएम का यह इकोसिस्टम भारत को इलेक्ट्रिक व्हीकल, रिन्यूएबल एनर्जी, इलेक्ट्रॉनिक्स, एयरोस्पेस और डिफेंस एप्लीकेशन के क्षेत्र में मैन्युफैक्चरिंग हब बनाएगा। इससे युवाओं के लिए बढ़े पैमाने पर रोजगार पैदा होंगे। इसके अलावा, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पुणे मेट्रो रेल परियोजना चरण-2 और रेलवे की दो मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना को भी दी मंजूरी...

निर्णय : सिंटर्ड रेयर अर्थ परमानेट मैग्नेट मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने वाली 7,280 करोड़ रुपये की परियोजना को स्वीकृति।

प्रभाव : इस विशिष्ट पहल का उद्देश्य भारत में प्रतिवर्ष 6 हजार मीट्रिक टन एकीकृत आरईपीएम विनिर्माण क्षमता स्थापित करना है। यह निर्णय नवीकरणीय ऊर्जा, ई-मोबिलिटी, रक्षा और अंतरिक्ष जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में भारत की राष्ट्रीय क्षमता को और अधिक सुदृढ़ करेगा। उच्च तकनीकी विनिर्माण को प्रोत्साहन मिलेगा जिससे आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। भारत वैश्विक आरईपीएम बाजार में प्रमुख विनिर्माणकर्ता देश के रूप में स्थापित होगा। सिंटर्ड रेयर अर्थ परमानेट मैग्नेट सबसे शक्तिशाली स्थायी चुंबक होते हैं जो नियोडिमियम और सैमरियम जैसी दुर्लभ-पृथ्वी तत्वों के मिश्र धातुओं से बनाए जाते हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों, नवीकरणीय ऊर्जा, औद्योगिक अनुप्रयोगों और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स की तेजी से बढ़ती मांग को देखते हुए भारत में आरईपीएम की खपत 2025 से 2030 में बढ़कर दोगुनी होने की संभावना है। अभी भारत की आरईपीएम की मांग मुख्यतः आयात से पूरी होती है। योजना की कुल अवधि कार्य सौपे जाने की तिथि से 7 वर्ष की होगी।

निर्णय : पुणे मेट्रो रेल परियोजना चरण-2 : खराडी-खडकवासला (लाइन-4) और नल स्टॉप-वारजे-माणिक बाग (लाइन-4ए) को मंजूरी।

प्रभाव : 28 एलिवेटेड स्टेशनों के साथ कुल 31.6 किलोमीटर लंबी लाइन-4 और 4ए, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम पुणे में आईटी केंद्रों, वाणिज्यिक क्षेत्रों, शैक्षणिक संस्थानों और आवासीय समूहों को जोड़ेगी। यह परियोजना 9,857.85 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से पांच वर्षों में पूरी होगी। अनुमानों के अनुसार, लाइन-4 और 4ए पर दैनिक यात्रियों की संख्या 2028 में संयुक्त रूप से 4.09 लाख होने की उम्मीद है जो 2038 में लगभग 7 लाख, 2048 में 9.63 लाख और 2058 में 11.7 लाख से अधिक हो जाएगी। इन कॉरिडोर की मंजूरी के बाद पुणे मेट्रो का नेटवर्क 100 किलोमीटर से अधिक हो जाएगा। लाइन-4 और 4ए के साथ, पुणे को न केवल ज्यादा मेट्रो ट्रैक मिलेंगे, बल्कि तेज, हरित और ज्यादा कनेक्टेड भविष्य भी मिलेगा। यह कॉरिडोर आवाजाही के समय को कम करेगा, ट्रैफिक की अव्यवस्था को सुधारेगा और नागरिकों को एक सुरक्षित, विश्वसनीय एवं किफायती विकल्प प्रदान करेगा।



“**महाराष्ट्र और गुजरात के 4 जिलों को कवर करने वाले दो मल्टीट्रैकिंग प्रोजेक्ट्स पर केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय से रेल इंफ्रास्ट्रक्चर में बढ़ोत्तरी होगी। गतिशीलता, परिचालन दक्षता और सेवा विश्वसनीयता बढ़ेगी। मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक दक्षता में भी सुधार होगा।”**

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री



निर्णय : महाराष्ट्र-गुजरात के 4 जिलों को कवर करने वाली रेलवे की दो मल्टी-ट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी।

प्रभाव : परियोजना की कुल अनुमानित लागत 2,781 करोड़ रुपये है। महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों के 4 जिलों को कवर करने वाली ये दो परियोजनाएं भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 224 किलोमीटर का विस्तार करेंगी। यह कदम द्वारकाधीश मंदिर कनेक्टिविटी और माल वाहक कॉरिडोर को मजबूत करेगा। अनुमोदित मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना से लगभग 585 गांवों तक कनेक्टिविटी बेहतर होगी, जिनकी आबादी लगभग 32 लाख है। बढ़ी हुई लाइन क्षमता भारतीय रेलवे के लिए मोबिलिटी को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगी, जिसके परिणामस्वरूप परिचालन दक्षता और सेवा विश्वसनीयता में सुधार होगा।

परियोजना से 18 एमटीपीए माल ढुलाई की अतिरिक्त क्षमता बढ़ेगी। 3 करोड़ लीटर ईंधन की बचत और 16 करोड़ किग्रा CO₂ में कमी आएगी जो 64 लाख पेड़ लगाने के बराबर है। इस विकास के माध्यम से ये परियोजनाएं स्थानीय लोगों को ‘आत्मनिर्भर’ बनाएंगी, जिससे उनके लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे। इन परियोजनाओं में शामिल हैं -

- देवभूमि द्वारका (ओखा) - कानालूस दोहरीकरण - 141 किमी
- बदलापुर - कर्जत तीसरी और चौथी लाइन - 32 किमी ■



कैबिनेट के फैसलों पर प्रेस बीफिंग देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।



विकसित भारत के लिए आधुनिकतम सुरक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ता राष्ट्र

वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की लक्ष्य की ओर अग्रसर भारत सभी क्षेत्रों में आमूल-चूल परिवर्तन के साथ अथक परिश्रम कर रहा है। किसी भी राष्ट्र के लिए सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण आधार होता है, इसलिए प्रत्येक वर्ष होने वाला डीजीपी कांफ्रेंस बदलते दौर में तकनीक के जरिए पुलिस-प्रशासन को और चुस्त-दुरुस्त करने के साथ-साथ भविष्य की तकनीकों को जमीनी स्तर की पुलिस आवश्यकता के अनुरूप ढालने का बना मंच...

लल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मिशन सुदर्शन चक्र लांच करने का एलान किया, ताकि दुश्मनों के किसी भी हमले से राष्ट्र को सुरक्षित रखा जा सके। इसी तरह घरेलू मोर्चे पर निरंतर सुरक्षा बंदोबस्त को सशक्त किया जा रहा है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 28-30 नवंबर को रायपुर में पुलिस महानिदेशकों/महानिरीक्षकों के 60वें अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन किया और अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की। इस सम्मेलन का विषय था- विकसित भारत: सुरक्षा आयाम। इसका आयोजन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में होना एक विशेष महत्व रखता है क्योंकि भारत ने 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद से पूरी तरह मुक्त होने का लक्ष्य रखा है। इस सम्मेलन में अब तक पुलिस की चुनौतियों से निपटने की प्रगति की समीक्षा हुई तो सुरक्षित भारत के निर्माण के लिए एक दूरदर्शी रोडमैप तैयार किया गया। विशेष रूप से वामपंथी उग्रवाद, आतंकवाद से मुकाबला, आपदा प्रबंधन, महिला सुरक्षा और फोरेंसिक विज्ञान व एआई के उपयोग जैसे विषयों पर प्रमुखता से चर्चा की गई।

विंगत 7 वर्षों में 586 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बनाकर सुरक्षा के घेरे को मजबूत बनाया गया है, इसी का परिणाम है कि 2014 में नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या 126 थी, अब घटकर 11 रह गई है।

सम्मेलन के अंतिम दिन प्रधानमंत्री मोदी ने खासकर युवाओं के बीच पुलिस के प्रति जनता की धारणा बदलने की तत्काल जरूरत पर बल दिया, जिसके लिए दक्षता, संवेदनशीलता और जवाबदेही को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने शहरी पुलिस व्यवस्था को मजबूत करने, पर्यटक पुलिस को फिर से सक्रिय करने और औपनिवेशिक काल के आपराधिक कानूनों के स्थान पर लागू किए गए नए भारतीय न्याय संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने

डीजीपी/आईजीपी कांफ्रेंस की बढ़ी महता

प्रधानमंत्री ने 2014 से डीजीपी सम्मेलन में गहरी दिलचस्पी ली है। पहले की प्रतीकात्मक उपस्थिति के विपरीत, वे सम्मेलन में स्वतंत्र और अनौपचारिक चर्चाओं को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे शीर्ष पुलिस अधिकारियों को देश को प्रभावित करने वाले प्रमुख नीति-निर्धारण और आंतरिक सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर सीधे प्रधानमंत्री को जानकारी देने का अवसर मिलता है। वर्ष 2014 से प्रधानमंत्री मोदी ने इसे दिल्ली के बाहर आयोजित करने की नई शुरुआत की।

- 2014 में गुवाहाटी में हुआ।
- 2015 में धोर्णे, कछ की खाड़ी में हुआ।
- 2016 में राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदरगाबाद में हुआ।
- 2017 में बीएसएफ अकादमी, टेकनपुर में हुआ।
- 2018 में केवड़िया में हुआ।
- 2019 में आईआईएसईआर, पुणे में आयोजित किया गया था।
- 2020 का डीजीपी सम्मेलन कोविड की वजह से वर्दुअली हुआ।
- 2021 में लखनऊ में हुआ।
- 2022 में नई दिल्ली में हुआ।
- 2023 में जयपुर में हुआ।
- 2024 में भुवनेश्वर में हुआ।
- 2025 में रायपुर में हुआ।



“

नशीली दवाओं के दुरुपयोग से निपटने के लिए एक समग्र सरकारी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें प्रवर्तन, पुनर्वास और सामुदायिक स्तर पर हस्तक्षेप एक साथ किया जाए।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

पिछले 40 साल से देश के लिए नासूर बने 3 हॉटस्पॉट-नक्सलवाद, नार्थ-ईस्ट और जम्मू-कश्मीर की समस्या के निराकरण का केंद्र सरकार ने स्थायी समाधान दिया है।

की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने खुफिया ब्यूरो के अधिकारियों को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक प्रदान किए। उन्होंने शहरी पुलिस व्यवस्था में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले तीन शहरों को भी पुरस्कार प्रदान किए। यह सम्मान शहरी पुलिस व्यवस्था में नवाचार और सुधार को प्रोत्साहित करने के लिए पहली बार स्थापित किया गया है।

दरअसल, मानव संसाधन प्रबंधन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की प्राथमिकताओं में रहा है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पूर्व की सरकारों के समय होने वाली पुलिस महानिदेशकों और पुलिस महानिरीक्षकों की

प्रशासनिक बैठकों में प्रधानमंत्री या गृह मंत्री औपचारिकता के लिए उद्घाटन या समापन सत्र में शामिल होते थे। पीएम मोदी ने इसमें बदलाव किया और सभी राज्यों के पुलिस महानिदेशकों की बैठक हो या फिर आईएस-आईपीएस अफसरों के साथ संवाद, उन्होंने या गृह मंत्री अमित शाह ने इन बैठकों में पूरे समय उपस्थित रह कर शीर्ष स्तर से बेहतर समन्वय का ढांचा तैयार किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस वार्षिक सम्मेलन में निरंतर गहरी रुचि दिखाई है और स्पष्ट चर्चाओं को प्रोत्साहित किया है। उन्होंने एक ऐसा महाल तैयार किया है जहां पुलिस व्यवस्था पर नए विचार उभर सकें। ■

सफ्रान एयरक्राफ्ट इंजन सर्विसेज केंद्र का उद्घाटन

एविएशन और शिपिंग सेक्टर को मिलेगी नई गति

भारत का एविएशन और शिपिंग सेक्टर तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में इसके लिए मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल (एमआरओ) सुविधाओं की जरूरत भी बढ़ रही है। इसी दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 नवंबर को हैदराबाद में सफ्रान एयरक्राफ्ट इंजन सर्विसेज इंडिया सुविधा केंद्र का किया उद्घाटन...

देश का 85% मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल (एमआरओ) का काम देश के बाहर होता है, इससे समय और पैसे अधिक खर्च होते हैं। यही नहीं एयरक्राफ्ट को भी लंबे समय तक उड़ान सेवा से बाहर रहना पड़ता है। यह स्थिति भारत जैसे विशाल एविएशन मार्केट के लिए ठीक नहीं है। यही वजह है कि भारत अब शिपिंग के साथ-साथ एविएशन से जुड़े एमआरओ सिस्टम पर भी काम कर रहा है। सफ्रान की ग्लोबल ट्रेनिंग, नॉलेज ट्रांसफर और भारतीय संस्थान के साथ साझेदारी की है। इससे देश में ऐसी वर्कफोर्स तैयार होगी जो आने वाले वर्षों में पूरे एमआरओ इकोसिस्टम को नई गति और दिशा देगी। इस सुविधा से देश के दक्षिण भारत के नौजवानों के लिए रोजगार के अनेक अवसर बनेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट किया कि देश सिर्फ एविएशन एमआरओ तक सीमित नहीं रहना चाहता बल्कि शिपिंग से जुड़े एमआरओ इकोसिस्टम पर भी बहुत बड़े स्केल पर काम कर रहा है।

पीएम मोदी ने कहा कि इस नई सुविधा से भारत को एक ग्लोबल एमआरओ हब के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी। ये एमआरओ सुविधा हाईटेक एयरोस्पेस की दुनिया में युवाओं के लिए नए अवसर भी बनाएंगी। जीएमआर एयरोस्पेस एंड इंडस्ट्रियल पार्क - एसईजेड के भीतर 45,000 वर्ग मीटर में फैला यह अत्याधुनिक सुविधा केंद्र लगभग 1,300 करोड़ रुपये के शुरुआती निवेश से विकसित किया गया है। यह सुविधा केंद्र 2035 तक पूरी तरह से ऑपरेशनल होने के बाद 1,000 से ज्यादा उच्च कुशल भारतीय तकनीशियनों और



“भारत के पास तेज ग्रोथ है, स्थिर सरकार है, रिफॉर्म से जुड़ा माइंडसेट है, बहुत बड़ा यंग टैलेंट पूल है, एक विशाल डोमेस्टिक मार्केट है। सबसे खास बात भारत में निवेश करने वालों के लिए, उनके लिए हम सिर्फ इन्वेस्टर नहीं, बल्कि को-क्रिएटर मानते हैं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

अभियंताओं को रोजगार देगा।

आज भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़े डोमेस्टिक एविएशन मार्केट में शामिल है। भारत में हवाई यात्रा की मांग लगातार बढ़ रही है, इसलिए देश के एयरलाइंस लगातार अपने एक्टिव फ्लीट को बढ़ा रहे हैं। भारत की एयरलाइन कंपनियों ने 1,500 से ज्यादा नए एयरक्राफ्ट के आर्डर दिए हैं। ऐसे में आने वाले समय में एमआरओ का इकोसिस्टम और मजबूत होगा। पीएम मोदी ने सफ्रान की टीम से भारत में एयरक्राफ्ट इंजन और कंपोनेंट डिजाइन की संभावनाओं को भी तलाशने का आग्रह किया है। दरअसल, आज का भारत सिर्फ बड़े सपने नहीं देख रहा, भारत बड़े फैसले ले रहा है और उनसे भी बड़ी उपलब्धि हासिल कर रहा है। ■



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

“एक एकड़-एक सीजन” प्राकृतिक खेती का नया मंत्र

प्राकृतिक खेती...

ग्लोबल हब बनने के रास्ते पर भारत

“नेचुरल फार्मिंग... भारत का अपना स्वदेशी विचार है। ये हमने कहीं से इंपोर्ट नहीं किया है। ये हमारी परंपरा से जन्मा है, हमारे पर्यावरण के अनुकूल है।” तमिलनाडु के कोयंबटूर में 19 नवंबर को साउथ इंडिया नेचुरल फार्मिंग समिट 2025 के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यह शब्द प्राकृतिक खेती के नए युग का संदेश है। इस मंच से पीएम मोदी ने दिया वन एकड़, वन सीजन का मंत्र, ताकि राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन में बढ़े किसानों की भागीदारी...

भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति की आत्मा में कृषि एवं किसान बसे हैं। सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में 17 फीसदी का योगदान ही नहीं बल्कि देश के 60 फीसदी से अधिक लोगों को रोजगार भी देती है। यही वजह है कि बीते 11 साल में केंद्र सरकार ने इस क्षेत्र में खूब काम किया है जिससे भारत कृषि में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। कृषि निर्यात करीब-करीब दोगुना हुआ है। इस साल किसानों को 10 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की मदद दी गई है। केंद्र सरकार की तरफ से राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की शुरुआत के नवंबर, 2025 में एक साल हुए हैं। इस दौरान करीब साढ़े पांच लाख किसान इस मिशन से जुड़ चुके हैं। साउथ इंडिया नेचुरल फार्मिंग समिट 2025 के उद्घाटन समारोह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत, नेचुरल फार्मिंग का ग्लोबल हब बनने के रास्ते पर है। हमारी





**सफलता
का आईना
(आंकड़े जुलाई,
2025 तक)**

24.88

लाख किसान प्रधानमंत्री किसान मानधन
योजना में नामांकित।

78.41 करोड़ आवेदनों का बीमा किया गया
2016 से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में,
1.83 लाख करोड़ रुपये के दावों का भुगतान।

**कृषि एवं किसान
कल्याण का बजट**

21,933

करोड़ रुपये

2013-14

1,37,756

करोड़ रुपये

2025-26

- जंगली जानवरों द्वारा फसल नुकसान और धन की फसलों में जलभराव दोनों पौर्णमासिकीवाई में शामिल। जंगली जानवरों द्वारा फसल नुकसान स्थानीयकृत जोखिम श्रेणी के पांचवें 'एड-ऑन कवर' के रूप में मान्यता। किसान को फसल नुकसान की सूचना 72 घंटे के भीतर फसल बीमा एप पर जियो-टैच फोटो के साथ दर्ज करनी होगी। खरीफ सीजन 2026 से पूरे देश में लागू की जाएगी।

93,000 करोड़ रुपये से अधिक प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में वर्ष 2021-26 तक के लिए आवंटित, 112 सिंचाई परियोजनाएं क्रियान्वित। मानसून पर निर्भरता घटी।

7.71 करोड़ किसानों को 10 लाख करोड़ रुपये का लोन किसान क्रेडिट कार्ड योजना में,
लोन सीमा 5 लाख रुपये की गई।

25.17 करोड़ मृदा खावस्थ्य कार्ड मृदा खावस्थ्य एवं उर्वरता योजना में जारी।
8,272 मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित।

बायोडायर्सिटी एक नया आकार ले रही है, देश के युवा भी अब कृषि को एक मॉडर्न और स्केलेबल अवसर के रूप में देख रहे हैं। इससे देश की खुली इकॉनमी को बहुत बड़ी ताकत मिलने जा रही है।

प्राकृतिक खेती का विस्तार, 21वीं सदी की कृषि की मांग है। बीते कुछ सालों में, खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ने के कारण कृषि से जुड़े क्षेत्र और खेतों में केमिकल्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। केमिकल फर्टिलाइजर और कीटनाशकों के ज्यादा इस्तेमाल के कारण मिट्टी की उर्वरकता गिर रही है और नमी पर असर पड़ रहा है। इन सब के साथ कृषि की लागत भी लगातार बढ़ रही है। इसका समाधान, फसल का विविधिकरण और प्राकृतिक खेती से ही संभव है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर पीएम मोदी ने कहा है कि

हमें प्राकृतिक खेती के रास्ते पर बढ़ना ही होगा। यह हमारा विजय भी है और हमारी जरूरत भी है। प्राकृतिक खेती मौसम में हो रहे बदलाव का सामना करने में मदद करती है। यह हमारी मिट्टी की सेहत को स्वस्थ रख सकती है। इससे लोगों को नुकसान करने वाले केमिकल्स से भी बचाया जा सकता है। नेचुरल फार्मिंग के इस अभियान में राज्य सरकारों और एफपीओ की बहुत बड़ी भूमिका है। बीते कुछ सालों में 10 हजार एफपीओ बने हैं। एफपीओ के सहयोग से हम किसानों के छोटे-छोटे क्लस्टर या समूह बनाएं। वहीं सफाई, प्रोसेसिंग, पैकिंग की सुविधा दें, ऑनलाइन बाजार को सीधे जोड़ें। इससे प्राकृतिक खेती से जुड़े किसानों को लाभ की संभावना और बढ़ेगी।



किसानों के खाते में पहुंचे 4 लाख करोड़ रु.
देश कृषि आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है तो किसानों को समृद्ध बनाने के लिए केंद्र सरकार लगातार कदम उठा रही है। इसी कड़ी में वित्त वर्ष 2018-19 में शुरू पीएम-किसान के तहत 19 नवंबर, 2025 को पीएम मोदी ने 9 करोड़ किसानों के खाते में 21वीं किस्त के तौर पर 18 हजार करोड़ रु. ट्रांसफर की। अब तक इस योजना में छोटे किसानों को 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे बैंक खाते में भेजी जा चुकी है।

किसानों ने बताया कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवा भी ले रहे हैं कृषि प्रशिक्षण

पीएम मोदी ने प्राकृतिक खेती से जुड़े किसानों से भी बातचीत की। किसानों ने दर्शिण भारत के 100 से अधिक प्राकृतिक उत्पाद जिनमें शहद को प्रमुख बताने के साथ ही धान की एक हजार पारंपरिक किस्मों, सफेद चाय सहित चार किस्म की चाय, कले के अपशिष्ट से उत्पाद बनाए जाने, 25 जीआई टैग वाले उत्पाद की जानकारी पीएम मोदी को दी। पीएम मोदी ने स्वच्छ गांव और कुशल पशुधन देखभाल के लिए गुजरात की 'कैटल हॉस्टल' अवधारणा की जानकारी दी। पीएम मोदी ने पूछा कि युवा किसान प्रशिक्षण के लिए आ रहे हैं तो उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में युवा सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। पहले ऐसे व्यक्तियों को सनकी माना जाता था, लेकिन अब वह प्रति माह 2 लाख रुपये कमाते हैं और उन्हें प्रेरणा के रूप में देखा जाता है।

- 1,13,419 परियोजनाओं के लिए 66,310 करोड़ रुपये कृषि अवसंरचना कोष में मंजूर, इन परियोजनाओं ने कृषि क्षेत्र में 1,07,502 करोड़ रुपये का निवेश सफलतापूर्वक जुटाया।
- 1.8 लाख केंद्र वन-स्टॉप शॉप के रूप में प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र स्थापित।
- 52,289 क्लस्टर बनाकर 14.99 लाख हेक्टेयर भूमि को जैविक खेती के अंतर्गत लाई गई परंपरागत कृषि विकास योजना में। 25.30 लाख किसान लाभान्वित।
- 1.79 करोड़ से अधिक किसान और 4,518 एफपीओ ई-नाम पर पंजीकृत, करीब 4.5 लाख करोड़ रु. का व्यापार ई-नाम पर हुआ।
- 41 हुई मेंगा फूट पार्क की संख्या, 2014 में सिर्फ 2 थी।

मल्टी कल्चर कृषि है प्राकृतिक कृषि का मूल दर्शन
दक्षिण भारत में किसान कृषि में नवाचार और भारतीय कृषि के मूल दर्शन को जोड़कर आगे बढ़ रहे हैं। इसमें मल्टी कल्चर कृषि शामिल है। दक्षिण भारत के कई क्षेत्रों जैसे केरल या कर्नाटक के पहाड़ी क्षेत्रों में कई जगह एक ही खेत में नारियल, सुपारी और फलों के पेड़-पौधे लगाए जाते हैं। निचले हिस्से में मसालों और काली मिर्च की खेती होती है। इसे प्रधानमंत्री मोदी प्राकृतिक कृषि का भी मूल दर्शन मानते हैं। खेती के इस मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर ले जाना चाहते हैं। राज्य सरकारों से आग्रह किया है कि इस तरह की प्राकृतिक खेती पर विचार करें कि कैसे इन प्रैक्टिस को देश के अलग-अलग भूभागों में लागू कर सकते हैं।

प्राकृतिक कृषि को बनाना है विज्ञान पर आधारित अनियान, खेत को बनाएं प्रयोगशाला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील... "हमें यह हर हाल में सुनिश्चित करना होगा कि प्राकृतिक कृषि वास्तव में विज्ञान पर आधारित अभियान बने। सभी वैज्ञानिक और संस्थानों से भी आग्रह करुंगा कि नेचुरल फार्मिंग को एग्रीकल्चर करिकुलम का मुख्य हिस्सा बनाएं। आप गांव में जाकर किसानों के खेत को अपनी लैब बनाएं। जब किसान का पारंपरिक ज्ञान, विज्ञान की ताकत और सरकार का समर्थन, तीनों जुड़ जाते हैं तो किसान भी समृद्ध होगा और हमारी धरती मां भी स्वस्थ रहेगी।"



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

विकसित भारत की नई शक्ति ‘परमाणु ऊर्जा’

विकसित भारत के संकल्प को गति देने में परमाणु ऊर्जा की भूमिका लगातार सशक्त होती जा रही है। स्वच्छ, विश्वसनीय, दीर्घकालिक ऊर्जा स्रोत के रूप में इसका विस्तार और स्वदेशी तकनीक, उभरती शोध क्षमता एवं अत्याधुनिक परियोजनाओं को अमल में लाकर भारत आज वैश्विक परमाणु ऊर्जा शक्ति वाले राष्ट्रों की श्रेणी में मजबूती से आगे बढ़ रहा है। इन प्रयासों के साथ भारत सतत, सुरक्षित और आत्मनिर्भर ऊर्जा भविष्य की ओर हो रहा अग्रसर...

विकसित भारत के व्यापक उद्देश्यों, ऊर्जा विश्वसनीयता सुनिश्चित करने और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के लिए भारत सरकार ने एक दीर्घकालिक ऊर्जा परिवर्तन रणनीति के तहत बड़े विकास की रूपरेखा तय की है। इसी के तहत केंद्र की सरकार ने वर्ष 2047 तक 100 गीगावॉट परमाणु ऊर्जा क्षमता का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वदेशी परमाणु प्रौद्योगिकी और सार्वजनिक-निजी सहयोग पर जोर देने के साथ रणनीतिक हस्तक्षेप एवं इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश किया जा रहा है।

ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करने के लिए परमाणु ऊर्जा को एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में मान्यता देते हुए सरकार ने



भारत की परमाणु क्षमता बढ़ाने के लिए सरकारी पहल

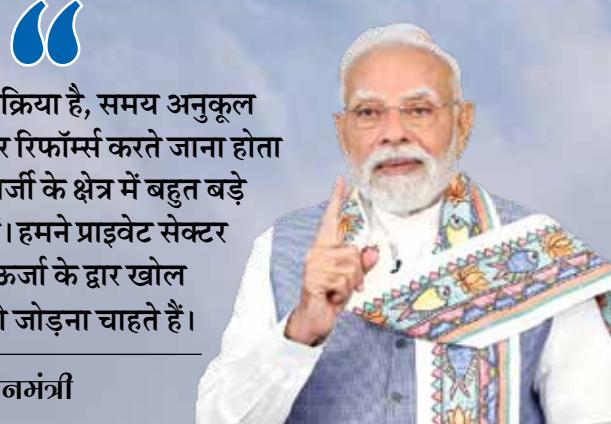
भारत बढ़ती ऊर्जा मांगों को पूरा करने और पर्यावरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से अपनी परमाणु ऊर्जा क्षमता बढ़ा रहा है। सरकार ने 2031-32 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता को मौजूदा 8,780 मेगावाट से बढ़ाकर 22,480 मेगावाट करने के लिए कदम उठाए हैं। इस विस्तार में गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, हरियाणा, कर्नाटक और मध्य प्रदेश में कुल 8,000 मेगावॉट के दस रिएक्टरों का निर्माण और उसे चालू करना शामिल है। इसके अतिरिक्त दस और रिएक्टरों के लिए पूर्व-परियोजना गतिविधियां शुरू हो गई हैं, जिन्हें 2031-32 तक पूरा करने की योजना है। इसके अलावा सरकार ने आंध्र प्रदेश राज्य में श्रीकाकुलम जिले के कोव्वाडा में संयुक्त राज्य अमेरिका के सहयोग से 6 X 1208 मेगावाट परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने के लिए सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

19 सिंतंबर 2024 को एक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में देश ने एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया। देश के सबसे बड़े और तीसरे स्वदेशी परमाणु रिएक्टरों में से एक राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना की यूनिट-7 महत्वपूर्ण स्थिति में पहुंच गई है। इस संयंत्र से नियंत्रित विखंडन श्रृंखला प्रतिक्रिया की शुरुआत हुई। यह स्वदेशी परमाणु रिएक्टरों के निर्माण और संचालन में भारत की बढ़ती क्षमता का प्रतीक है, जो घरेलू प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित किया जा रहा है।

- भारत, वर्ष 2047 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता को 10 गुना से अधिक बढ़ाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है।
- वार्षिक परमाणु विद्युत उत्पादन में 60% की वृद्धि वर्ष-2014-15 में 35,592 मिलियन यूनिट जबकि वर्ष 2024-25 में 56,681 मिलियन यूनिट।
- स्थापित परमाणु क्षमता में 71% की वृद्धि भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड (एनपीसीआईएल) द्वारा संचालित 25 परमाणु रिएक्टरों में 2014 में लगभग 4,780 मेगावाट से बढ़कर वर्ष 2025 में 8,780 मेगावाट हो गई है।

रिफॉर्म एक निरंतर प्रक्रिया है, समय अनुकूल परिस्थिति के अनुसार रिफॉर्म्स करते जाना होता है, हम न्यूक्लियर एनर्जी के क्षेत्र में बहुत बड़े रिफॉर्म लेकर आए हैं। हमने प्राइवेट सेक्टर के लिए भी परमाणु ऊर्जा के द्वारा खोल दिए हैं, हम शक्ति को जोड़ना चाहते हैं।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री



पिछले 11 वर्षों में चालू किए गए नए परमाणु रिएक्टर

■ संयंत्र के नाम क्षमता



विकसित भारत के लिए परमाणु ऊर्जा मिशन की शुरुआत की है। इस पहल का उद्देश्य घरेलू परमाणु क्षमताओं को बढ़ाना, निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना और लघु मॉड्यूलर रिएक्टरों जैसी उन्नत परमाणु प्रौद्योगिकियों की तैनाती में तेजी लाना है। सरकार ने इस पहल के लिए 20 हजार करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं, जिसका लक्ष्य 2033 तक कम से कम पांच स्वदेशी रूप से डिजाइन और परिचालन लघु मॉड्यूलर रिएक्टर विकसित करना है। ■



समानता, सहयोग और समाधान का शिखर सम्मेलन

दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन वैश्विक साझेदारी, सामाजिक न्याय और सतत विकास के नए दौर का प्रतीक बना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के निमंत्रण पर शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए 21 से 23 नवंबर तक वहां रहे। इस दौरान उन्होंने शिखर सम्मेलन के कई सत्रों को संबोधित किया। साथ ही कई वैश्विक नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठक की जिसमें लिए गए कई महत्वपूर्ण निर्णय...



वर्ष 2023 में भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान अफ्रीकी संघ को इसका सदस्य बनाया गया था। इसके बाद पहली बार दक्षिण अफ्रीका में जी-20 शिखर सम्मेलन 21 से 23 नवंबर के बीच आयोजित किया गया जिसमें सदस्य राष्ट्रों ने हिस्सा लिया। इस बार जी-20 शिखर सम्मेलन का विषय ‘एकजुटा, समानता और स्थिरता’ रहा। इसके माध्यम से दक्षिण अफ्रीका ने भारत और ब्राजील में आयोजित पिछले शिखर सम्मेलनों के परिणाम को आगे बढ़ाया है। 12वीं बार जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग ले रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ और ‘एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य’ के अनुरूप देश का दृष्टिकोण रखा।

पहला सत्र

22 नवंबर को शिखर सम्मेलन के पहले सत्र में पीएम मोदी ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका की अध्यक्षता में स्किल्ड माइग्रेशन, टूरिज्म, फूड सिक्योरिटी, एआई, डिजिटल इकोनॉमी, इनोवेशन और महिला सशक्तीकरण जैसे विषयों पर प्रशंसनीय काम हुआ है। पिछले कई दशकों में जी-20 ने ग्लोबल फाइनेंस और ग्लोबल इकोनॉमी ग्रोथ को दिशा दी है। पीएम मोदी ने जी-20 के तहत एक ग्लोबल ट्रेडिशनल नॉलेज रिपोजिटरी बनाने का प्रस्ताव दिया जो इंडियन नॉलेज सिस्टम इनिशिएटिव का आधार बन सकता है। यह एक ऐसा वैश्विक मंच बन सकता है जो मानवता के सामूहिक ज्ञान को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद करेगा। अफ्रीका के विकास और

यंग टैलेंट को सक्षम बनाना पूरी दुनिया के हित में है। यही वजह है कि भारत ने जी-20-अफ्रीका स्किल्स मल्टीप्लायर इनिशिएटिव का प्रस्ताव रखा है। यह अलग-अलग सेक्टर के लिए 'ट्रेन-द-ट्रेनर्स मॉडल' के तहत चल सकता है। पीएम मोदी ने कहा कि सामूहिक लक्ष्य है कि अगले एक दशक में अफ्रीका में दस लाख ट्रेनर तैयार हों। भारत की ओर से जी-20 ग्लोबल हेल्थकेयर रिस्पांस टीम के गठन का प्रस्ताव किया गया है। इसमें जी-20 देशों के प्रशिक्षित मेडिकल विशेषज्ञ हों और वैश्विक स्वास्थ्य संकट या प्राकृतिक आपदा के समय तेजी से तैनाती के लिए तैयार रहे। सभी वैश्विक संस्थाओं में ग्लोबल साउथ की आवाज और बुलंद हो, इसके लिए सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए।

दृष्टिकोण

पीएम मोदी ने कहा कि प्राकृतिक आपदा, मानवता के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसे में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग को और मजबूत करना होगा। इसी सोच के साथ भारत ने जी-20 की अपनी अध्यक्षता के दौरान डिजास्टर रिस्क रिडक्शन वर्किंग ग्रुप की स्थापना की थी। इस ऐजेंडे को दक्षिण अफ्रीका ने भी आगे बढ़ाया है। भारत का यह मानना है कि स्पेस टेक्नोलॉजी से पूरी मानवता को लाभ हो। इसलिए भारत ने जी-20 ओपन सेटेलाइट डेटा पार्टनरशिप का सुझाव दिया है। इससे जी-20 देशों की स्पेस एजेंसियों का सेटेलाइट डेटा और एनालिसिस, ग्लोबल साउथ के देशों के लिए अधिक सुलभ, इंटर-ऑपरेबल और उपयोगी बनाया जा सकेगा।

ग्लोबल ग्रोथ के लिए स्टेनबिलिटी और क्लीन एनर्जी जरूरी है। यह सुनिश्चित करने के लिए क्रिटिकल मिनरल्स का बहुत बड़ा रोल है। लिहाजा भारत ने जी-20 क्रिटिकल मिनरल सर्कुलैरिटी इनिशिएटिव का प्रस्ताव किया है। इसके तहत री-साइकिलिंग, अर्बन माइनिंग और सेकेंड-लाइफ बैटरी जैसे इनोवेशन को बढ़ावा दिया जा सकता है। नई दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत ने संकल्प लिया था कि वर्ष 2030 तक रिन्यूबल एनर्जी को तीन गुना और एनर्जी एफिशिएंसी दर को दोगुना करेंगे। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए विकसित देशों को अफोर्डेबल क्लाइमेट फाइनेंस और टेक्नोलॉजी उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्धता को समर्यादा तरीके से पूरा करना होगा।

पीएम मोदी ने सभी के विकास, प्रगति और कल्याण के लिए भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए जी-20 के समक्ष विचार के लिए छह बिंदू रखे...

1 जी-20 वैश्विक परांपरिक ज्ञान भंडार का निर्माण
यह भावी पीढ़ियों के लाभ के लिए मानवता के सामूहिक ज्ञान का उपयोग करेगा।

2 जी-20 अफ्रीका कौशल गुणक का निर्माण
इस कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीका में युवाओं को कौशल प्रदान करने के लिए दस लाख प्रमाणित प्रशिक्षकों का एक समूह तैयार करना है। इससे स्थानीय क्षमताएं विकसित होंगी और महाद्वीप में दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

3 जी-20 वैश्विक स्वास्थ्य सेवा प्रतिक्रिया दल का निर्माण
इसमें जी-20 के प्रत्येक देश के स्वास्थ्य सेवा विशेषज्ञ शामिल होंगे और इन्हें दुनिया के किसी भी हिस्से में वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए तैनात किया जा सकता है।

4 जी-20 मुक्त उपग्रह डेटा साझेदारी की स्थापना
इस कार्यक्रम के माध्यम से जी-20 अंतरिक्ष एजेंसियों का उपग्रह डेटा विकासशील देशों को कृषि, मत्स्य पालन, आपदा प्रबंधन आदि गतिविधियों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

5 जी-20 क्रिटिकल मिनरल्स सर्कुलैरिटी पहल का निर्माण : यह पहल पुनर्वर्कण, शहरी खनन, सेकेंड-लाइफ बैटरी परियोजनाओं और विभिन्न प्रकार के नवाचारों को बढ़ावा देगी। यह आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा को मजबूत करने और विकास के स्वच्छ मार्ग विकसित करने में मदद करेगी।

6 ड्रग टेरर नेक्सस का मुकाबला करने के लिए जी-20 पहल का निर्माण : यह नशीली दवाओं की तस्करी को रोकेगा और ड्रग-आतंक अर्थव्यवस्था को तोड़ देगा।





'वैश्विक संस्थान' 21वीं सदी की वास्तविकता से कोसां दूर

झबसा (हाँडिया, बाजील और दक्षिण अफ्रीका) केवल तीन देशों का समूह नहीं है, यह तीन महाद्वीपों को जोड़ने वाला, तीन बड़ी लोकतांत्रिक शक्तियों, तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का महत्वपूर्ण मंच है। तीनों देशों ने इस बात पर सहमति जताई है कि वैश्विक संस्थान 21वीं सदी की वास्तविकता और कोसां से दूर है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में तीनों में से कोई भी देश स्थायी सदस्य नहीं है। इससे स्पष्ट है कि वैश्विक संस्थाएं आज की दुनिया का प्रतिनिधित्व नहीं करती। इसलिए झबसा को एक खराम में पूरे विश्व को संदेश देना चाहिए कि संस्थानिक सुधार अब विकल्प नहीं, अनिवार्यता है। इस वर्ष झबसा की अध्यक्षता बाजील के राष्ट्रपति लुइस इग्नासियो लूला दा सिल्वा ने की। बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वर्ष 2021 में भारत की झबसा अध्यक्षता में तीनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की पहली बैठक हुई थी। सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए तीनों देश इसे संस्थागत रूप दे सकते हैं।

आतंकवाद-निरोध पर, प्रधानमंत्री ने मजबूत समन्वय की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि आतंकवाद से लड़ते समय दोहरे मानदंडों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। मानव-केंद्रित विकास सुनिश्चित करने में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने इन तीनों देशों के बीच यूपीआई जैसे डिजिटल सर्वजनिक बुनियादी ढांचे, कोविन जैसे स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म, साइबर सुरक्षा ढांचे और महिलाओं के नेतृत्व में तकनीकी पहलों को साझा करने की सुविधा के लिए एक 'आईबीएसए डिजिटल नवाचार गठबंधन' बनाने का प्रस्ताव रखा।

पीएम मोदी की वैश्विक नेताओं से हुई द्विपक्षीय वार्ता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा, कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी, इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी, जापान की प्रधानमंत्री साने ताकाइची और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज से मुलाकात की।



भारत-दक्षिण अफ्रीका

दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की और व्यापार एवं निवेश, खाद्य सुरक्षा, कौशल विकास, खनन, युवा और लोगों के बीच आपसी संबंधों सहित सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। कृत्रिम हुद्दिमत्ता, डिजिटल सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने दक्षिण अफ्रीकी चीतों को भारत स्थानांतरित करने के लिए राष्ट्रपति रामफोसा का धन्यवाद किया और उन्हें भारत के नेतृत्व वाले इंटरकेशनल बिग कैट अलायंस में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।



फरवरी 2026 में भारत AI Impact Summit की मेजबानी करेगा, जिसकी थीम है: सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय। भारत ने जी-20 देशों को इसमें साझेदारी के लिए आमंत्रित किया है।



भारत-कनाडा

दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने व्यापार-निवेश, रक्षा, शिक्षा, अंतरिक्ष, विज्ञान व प्रौद्योगिकी और ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा की। पौराम कार्नी ने फरवरी 2026 में भारत द्वारा मेजबानी किए जा रहे एआई शिखर सम्मेलन के लिए समर्थन दिया। बड़े लक्ष्य वाले व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीआईपीए) पर बातचीत शुरू करने पर सहमति व्यक्त की। इसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक दोनों देशों के बीच व्यापार को दोगुना करके 50 अरब डॉलर करना है। दोनों नेताओं ने नियमित रूप से उच्च स्तरीय बातचीत के महत्व पर जोर दिया।



भारत-जापान

दोनों नेताओं ने सभ्यतागत जुड़ाव, साझा मूल्य, पारस्परिक सुदृढ़ता, मुक्त एवं खुले इंडो-पैसिफिक के प्रति वचनबद्धता पर आधारित भारत-जापान विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी के महत्व की पुष्टि की। दोनों नेताओं ने क्षेत्रीय व वैश्विक शांति, समृद्धि एवं स्थिरता के लिए भारत-जापान साझेदारी को और गहरा करने की अपनी प्रतिबद्धता पर बल दिया। नेताओं ने 15वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय संबंधों में हुई सतत प्रगति को स्वीकार किया।



भारत-इटली

दोनों देशों ने 'आतंकवाद के वित्तपोषण का मुकाबला करने के लिए भारत-इटली संयुक्त पहल' को अपनाया। इस पहल का उद्देश्य आतंकवाद के विरुद्ध द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करना और फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) व ब्लोबल काउंटर टेरिज्म फोरम (जीसीटीएफ) जैसे बहुपक्षीय मंचों में साझेदारी को बढ़ाना है। दोनों नेताओं ने व्यापार और निवेश, रक्षा, सुरक्षा, अंतरिक्ष, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, शिक्षा और जन से जन संपर्क जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी की प्रगति की समीक्षा की। दोनों नेताओं ने संयुक्त रणनीतिक कार्य योजना 2025-29 की प्रगति पर भी संतोष व्यक्त किया।



भारत-ऑस्ट्रेलिया

दोनों नेताओं ने राजनीतिक एवं रणनीतिक मुद्दों, रक्षा एवं सुरक्षा, व्यापार एवं निवेश, ऊर्जा, महत्वपूर्ण खनिज, प्रौद्योगिकी, नतिशीलता, शिक्षा के साथ लोगों के बीच आपसी संपर्क सहित व्यापक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करने पर चर्चा की। दोनों प्रधानमंत्रियों ने पारस्परिक हित के क्षेत्रीय और वैश्विक विषयों पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया। उन्होंने भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और भी ऊंचाइयों तक ले जाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

जी-20 से भारत का संदेश

- विकास सतत होना चाहिए।
- व्यापार भरोसेमंद होना चाहिए।
- वित्त व्यवस्था निष्पक्ष होनी चाहिए।
- प्रगति सबको साथ लेकर चलने वाली होनी चाहिए।

तीसरा स्तर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिखर सम्मेलन के तीसरे सत्र (विषय - सभी के लिए 'निष्पक्ष और न्यायसंगत भविष्य-महत्वपूर्ण खनिज, उत्कृष्ट कार्य, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस') को संबोधित किया। उन्होंने महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने के तरीके में मौलिक बदलाव का आह्वान किया। इसे 'वित्त केंद्रित' होने की जगह 'मानव केंद्रित',

'राष्ट्रीय' की जगह 'वैश्विक' तथा 'विशिष्ट मॉडल' की जगह 'ओपन सोस' पर आधारित होना चाहिए। एआईसिस्टम मानव जीवन, सुरक्षा और जनविश्वास को प्रभावित करती है, लिहाजा इसे जिम्मेदार बनाना चाहिए। सबसे अहम यह है कि एआई मानव क्षमता को बढ़ाए लेकिन निर्णय लेने की अंतिम जिम्मेदारी हमेशा मनुष्य के पास ही रहे। ■



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

56वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय
फिल्म महोत्सव का समापन

युगों-युगों तक जगमगाती रहेगी सिनेमा की रोशनी



गोवा में आयोजित 56वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (इफ्फी) में कई नई पहल शामिल की गईं जो नवाचार और समावेशिता को दर्शाती हैं। महोत्सव का उद्देश्य उभरते फिल्म निर्माताओं को प्रोत्साहित करना और उन्हें अपने हुनर को प्रदर्शित करने का मंच देना था। युवा प्रतिभाओं को अपनी रचनात्मकता दिखाने, विचार साझा करने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान पाने का अवसर प्रदान किया। गोवा के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी इंडोर स्टेडियम में 28 नवंबर को समाप्त हुए 56वें इफ्फी कार्यक्रम की सिनेमाई रोशनी युगों-युगों तक रहेगी रोशन...

गोवा में 20 से 28 नवंबर 2025 तक भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन किया गया। भारत दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म निर्माण एवं फिल्म देखने वाले दर्शकों का देश है। भारतीय सिनेमा वैश्विक स्तर पर एक मजबूत प्रभाव डाल रहा है और 56वां भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव इसकी महत्वपूर्ण कड़ी है। इफ्फी के नौ दिवसीय फिल्म महोत्सव कार्यक्रम में दमदार कहानियों और जीवंत प्रदर्शन ने सिल्वर स्क्रीन और मंचों को अपनी कला से जगमगाया। इससे दर्शक मन्त्रमुग्ध हो गए और कला के लिए वैश्विक भावना भी देखने को मिली। उभरते कलाकार रेड कार्पेट पर उतरे और शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। साथ ही प्रतिष्ठित तथा नई सिनेमाई प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया।

इफ्फी 2025 के समापन समारोह को संबोधित करते हुए, केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य राज्यमंत्री, डॉ. एल. मुरुगन ने बताया कि इस वर्ष के इफ्फी में विभिन्न राज्यों और गोवा स्थित प्रोडक्शन हाउस की ज्ञानियां तथा सांस्कृतिक प्रदर्शनियां प्रस्तुत की गईं। यहां भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष के महोत्सव में गुरु दत्त, राज खोसला, ऋष्टविक घटक, भूपेन हजारिका, पी. भानुमति, सलिल चौधरी



एक स्वर्णिम गाथा: रजनीकांत के 50 साल के बेमिसाल फिल्मी करियर का उत्सव

भारतीय सिनेमा में 50 वर्ष पूरे करने वाले महान अभिनेता रजनीकांत को समापन समारोह में विशेष रूप से सम्मानित किया गया। प्रतिष्ठित अभिनेता ने इस सम्मान के लिए केंद्र सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। अभिनेता रजनीकांत ने कहा, “जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो ऐसा महसूस होता है कि समय उड़ गया है, क्योंकि मुझे सिनेमा और अभिनय से प्यार है। मैं एक अभिनेता और रजनीकांत के रूप में सौ जन्म लेना चाहूंगा। आपके प्यार और स्नेह के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। यह सम्मान पूरे फिल्म उद्योग- निर्माताओं, निर्देशकों, टेक्नीशियन, डिस्ट्रीब्यूटर, एग्जिबिटर और हर किसी का है।”

‘गोंधल’ को डायरेक्शन के लिए मिला सिल्वर पीकॉक

- संतोष दावखर को मराठी फिल्म ‘गोंधल’ में उनके डायरेक्शन के लिए सिल्वर पीकॉक मिला।
- उबेहमर रियोस को सर्वश्रेष्ठ पुरुष अभिनेता के लिए और जारा सोफिया औस्तान को सर्वश्रेष्ठ महिला अभिनेत्री के लिए सिल्वर पीकॉक पुरस्कार मिला।
- झर्नानी फिल्म निर्माता हेसम फरहमदं और एस्टोनियाई फिल्म निर्माता टोनिस पिल को बेस्ट डेब्यू फीचर फिल्म ऑफ ए डायरेक्टर के लिए संयुक्त विजेता घोषित किया गया।
- एशले मेफेयर द्वारा निर्देशित ‘स्किन ऑफ यूथ’ ने सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म

के लिए प्रतिष्ठित ‘गोल्डन पीकॉक’ पुरस्कार हासिल किया।

- माई फादर्स शैडो के निर्देशक अकिनोला डेविस जुनियर को विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार मिला।
- हिंदी फिल्म केसरी चैप्टर 2 के निर्देशक करण सिंह त्यागी को भारतीय फीचर फिल्म के सर्वश्रेष्ठ नवोदित निर्देशक का पुरस्कार।
- बंदिश बैडिट्स सीजन 2 को सर्वश्रेष्ठ वेब सीरीज (ओटीटी) का पुरस्कार।
- जॉर्वे की फिल्म ‘सोफ हाउस’ को मिला प्रतिष्ठित आईसीएफटी-यूनेस्को गांधी मेडल।

56वां भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव



81 देशों से कुल 240 से अधिक फिल्में प्रदर्शित।

160 फिल्में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में, जिनमें 13 विश्व प्रीमियर शामिल।

80 से अधिक पुरस्कार विजेता फिल्में और 21 आधिकारिक ऑस्कर-नामांकित फिल्में इप्पी 2025 में प्रदर्शित।

■ ‘सिनेमा ऑफ द वर्ल्ड’ श्रेणी के तहत 55 से अधिक फिल्में और 133 अंतरराष्ट्रीय फिल्मों का एक विशेष चयन जो पहले विभिन्न फिल्म उत्सवों में प्रदर्शित हो चुकी हैं।

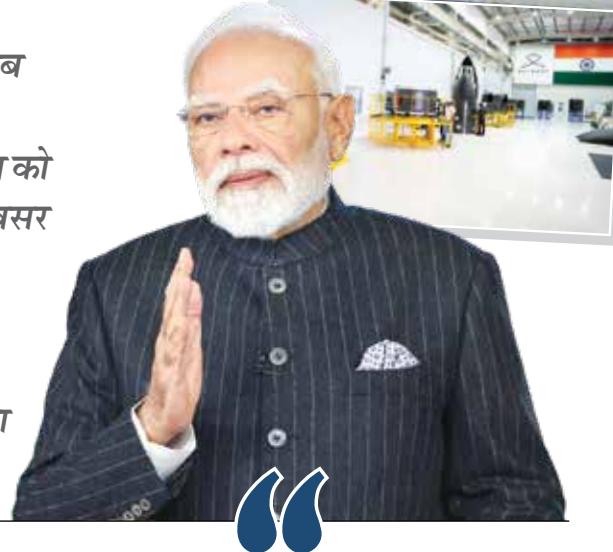
और के. वैकुंठ जैसे महान फिल्म हस्तियों की जन्म शताब्दी मनाई गई। ‘वेव्स फिल्म बाजार’ ने उभरते फिल्म निर्माताओं के लिए 1,050 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया जबकि 125 युवा प्रतिभाओं ने सीएमओटी कार्यक्रम में भाग लिया जो नए रचनाकारों को पोषित करने के लिए इफ्फी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इफ्फी के इतिहास में पहली बार, महिलाओं द्वारा निर्देशित 50 फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

वहीं सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सचिव संजय जाजू ने कहा

कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वेव्स शिखर सम्मेलन में कहा था कि यह ‘आरेंज इकोनॉमी’ के उदय का समय है। जाजू ने कहा कि इफ्फी 2025 ने क्रिएटर्स के लिए मौके पैदा करने और ग्लोबल स्टेज पर भारतीय टैलेंट को गर्व से दिखाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। उन्होंने यह भी कहा कि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजी रचनाकारों को न केवल अपने कौशल और शिल्प को निखारने में मदद करेगा बल्कि प्रौद्योगिकी सीखने में भी सहायता करेगा जो किसी भी क्रिएटिव प्रोडक्शन का एक अभिन्न अंग है। ■

भारत का Gen Z... हर क्षेत्र में दे रहा नया समाधान

वैश्विक उपग्रह प्रक्षेपण पारिस्थितिकी तंत्र में अग्रणी भारत, अब निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी के साथ, अंतरिक्ष क्षेत्र में एक रणनीतिक महाशक्ति के रूप में पहचाना जाने लगा है। अंतरिक्ष को निजी क्षेत्र के लिए खोले जाने से युवाओं को सबसे अधिक अवसर मिल रहा है। वहीं Gen Z... आज हर क्षेत्र में नया समाधान भी दे रहा है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 नवंबर को हैदराबाद में स्काईरूट इन्फिनिटी कैंपस का उद्घाटन किया तो उनके पहले ऑर्बिटल रॉकेट विक्रम-1 का अनावरण भी किया जो दर्शाता है भारत की अंतरिक्ष की विकास यात्रा...



इसरो ने दशकों तक भारत की स्पेस यात्रा को नई उड़ान दी है। क्रेडिबिलिटी, कैपेसिटी और वैल्यू... हर प्रकार से भारत ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भा

रत ने बीते 6-7 वर्षों में ही अपने स्पेस सेक्टर को एक ओपन, को-ऑपरेटिव और इनोवेशन-ड्रिवन इकोसिस्टम में बदल दिया है। भारत के पास अंतरिक्ष क्षेत्र में ऐसी क्षमताएं हैं जो दुनिया के कुछ देशों के पास ही हैं। इसकी एक वजह देश की युवा शक्ति है जो अपने नवाचार, जोखिम लेने की क्षमता और उद्यमशीलता के साथ हर समस्या का समाधान निकाल रही है। जब सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र खोला तो देश के युवा विशेषकर Gen Z इसका लाभ लेने के लिए आगे आए। देश में आज 300 से अधिक अंतरिक्ष स्टार्टअप भारत के अंतरिक्ष भविष्य को नई उमीद दे रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समारोह में कहा कि आज का कार्यक्रम इस बात का प्रतिबिंब है कि आने वाले समय में भारत वैश्विक उपग्रह प्रक्षेपण इको-सिस्टम में कैसे एक अग्रणी के रूप में उभरेगा। भारत की अंतरिक्ष यात्रा सीमित संसाधनों के साथ शुरू हुई थी। साइकिल पर रॉकेट के पुर्जे ढोने से लेकर दुनिया के सबसे विश्वसनीय प्रक्षेपण यान विकसित करने तक, भारत ने साबित कर दिया है कि सपनों की ऊँचाई संसाधनों से नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प से तय होती है। अंतरिक्ष क्षेत्र का विस्तार जरूरी है, क्योंकि यह संचार, कृषि, समुद्री निगरानी, शहरी योजना, मौसम पूर्वानुमान और राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार बन गया है। यहीं कारण है कि भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में ऐतिहासिक सुधार किए गए। सरकार ने एक नई अंतरिक्ष नीति तैयार की और इस क्षेत्र को निजी नवाचार के लिए खोल दिया। स्टार्टअप उद्यम को इसरो की सुविधाएं और तकनीक प्रदान करने के लिए इन-स्पेस की स्थापना की गई। ■

महत्वपूर्ण तथ्य

- स्काईरूट इन्फिनिटी कैम्पस लगभग दो लाख वर्ग फुट क्षेत्र में फैला है। यह बहु-प्रक्षेपण वाहनों के डिजाइन, विकास, एकारण और परीक्षण के लिए हर महीने एक कक्षीय रॉकेट बनाने में सक्षम है।
- स्काईरूट भारत की निजी अंतरिक्ष कंपनी है, जिसकी स्थापना पवन चंदना और भरत ढाका ने की है, जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों के पूर्व-छात्र और इसरो के पूर्व वैज्ञानिक हैं।
- भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए परमाणु क्षेत्र को भी निजी क्षेत्र के लिए खोलने पर विचार कर रहा है।



प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

खेल के मैदान में भारत का परचम बढ़ाया देश का मान



2025

के विश्व मुक्केबाजी
कप के फाइनल में भारतीय
दल की शानदार उपलब्धि

9 स्वर्ण | 6 रजत | 5 कांस्य

सहित कुल 20 पदक
जीते।

कठिन परिश्रम, प्रतिबद्धता और कौशल से भारतीय खिलाड़ियों ने एक बार फिर खेल की दुनिया में अपने देश का नाम ऊंचा कर यह साबित किया है कि भारतीय खिलाड़ियों की प्रतिभा किसी से कम नहीं है। इतना ही नहीं, अपनी सफलता से इन विजेताओं ने उभरते हुए खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का भी काम किया है।

कबड्डी विश्व कप 2025 जीतने पर भारतीय महिला कबड्डी टीम को बधाई देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश का गौरव बढ़ाने के लिए भारतीय महिला कबड्डी टीम को हार्दिक बधाई। खिलाड़ियों ने अद्भुत जज्बा, कौशल और समर्पण दिखाया। उनकी यह जीत अनगिनत युवाओं को कबड्डी अपनाने, बड़ा सपना देखने और ऊंचा लक्ष्य तय करने के लिए प्रेरित करेगी।

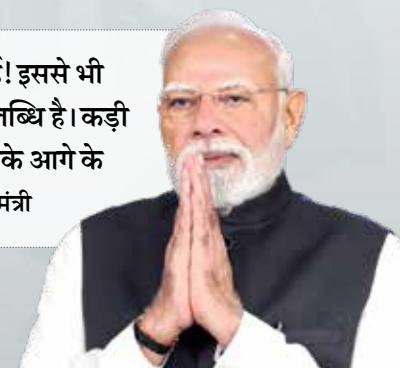
इतना ही नहीं, पीएम मोदी ने विश्व मुक्केबाजी कप फाइनल 2025 में शानदार प्रदर्शन के लिए भी भारतीय एथलीटों को बधाई दी और कहा कि मुक्केबाजों के संकल्प और दृढ़ निश्चय की वजह से यह संभव हुआ।

“महिला क्रिकेट टीम को पहला द्रुष्टिबाधित महिला टी20 विश्व कप जीतकर इतिहास रचने के लिए बधाई! इससे भी ज्यादा तारीफ की बात यह है कि टीम पूरी सीरीज में अजेय रही। यह वास्तव में एक ऐतिहासिक खेल उपलब्धि है। कड़ी मेहनत, टीम वर्क और दृढ़ संकल्प का एक शानदार उदाहरण है। हर खिलाड़ी एक चैंपियन है! टीम को उनके आगे के प्रयासों के लिए मेरी शुभकामनाएं। यह सफलता आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

महिला कबड्डी विश्व कप 2025 से लेकर द्रुष्टिबाधित महिला क्रिकेटरों के टी20 विश्व कप जीतने तक खेल के हर मैदान में भारतीय महिला खिलाड़ियों ने ऐसा परचम लहराया, जिसने हर देशवासी का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। इतना ही नहीं, विश्व मुक्केबाजी कप के फाइनल में भी भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। इस शानदार प्रदर्शन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुशी व्यक्त की। उन्होंने क्रिकेट की विजयी टीम से भी किया संवाद...

भारत को CWG2030 की मेजबानी

भारत को आधिकारिक तौर पर वर्ष 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिल गई है, जिसमें अहमदाबाद को मेजबान शहर घोषित किया गया है। यह घोषणा 26 नवंबर को व्लासगो में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल महासंघ की महासभा में की गई। यह खेल हरेक 4 वर्ष में आयोजित होती है और 20 साल के बाद इन खेलों की मेजबानी के लिए भारत को चुना गया है। घोषणा पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत को 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिलने पर अत्यंत खुश हूं। भारत की जनता और खेल इकोसिस्टम को बधाई। यही हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता और खेल भावना है जिसने भारत को वैश्विक खेल मानचित्र पर मजबूती से स्थापित किया है। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना के साथ, हम इन ऐतिहासिक खेलों को बड़े उत्साह के साथ मनाने को तैयार हैं।



अभिनेता धर्मेंद्र का निधन

भारतीय सिनेमा के एक युग का अंत

जन्म : 8 दिसंबर 1935 ■ मृत्यु : 24 नवंबर 2025

पहली फ़िल्म : 'दिल मी तेरा हम मी तेरे' (1960) ■ सम्मान : पद्म भूषण

फ़िल्म जगत के 'ही-मैन' के नाम से पहचान रखने वाले अभिनेता धर्मेंद्र अब हमारे बीच नहीं रहे। 24 नवंबर को उनका निधन हो गया। उनकी अदाएं, सरलता और फ़िल्मों में दमदार अंदाज को भारत कभी नहीं भूल पाएगा। इस महान कलाकार को राष्ट्र की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...

अपने बेहतरीन अभिनय से 6 दशक तक करोड़ों देशवासियों के दिल को छूने वाले धर्मेंद्र का निधन भारतीय सिनेमा जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। एक सामान्य परिवार से आकर उन्होंने फ़िल्म जगत में अपनी अमिट पहचान बनाई। वे उन चुनिंदा अभिनेताओं में से एक रहे, जिन्होंने जिस किरदार को छुआ, वह जीवंत बन उठा। अपनी इसी कला के माध्यम से उन्होंने हर आयु-वर्ग के करोड़ों दर्शकों का दिल जीता। भारतीय सिनेमा की एक बड़ी हस्ती के तौर पर, वह अपने पीछे एक ऐसी विरासत छोड़ गए हैं जो कलाकारों की नई पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। साथ ही अपने अभिनय से वे सदैव हमारे बीच भी रहेंगे।

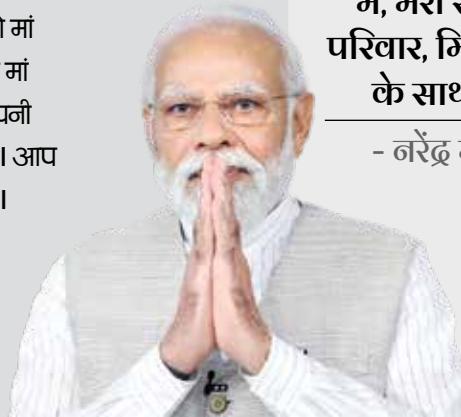
...जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था धर्मेंद्र को फोन

एक बार जब अभिनेता धर्मेंद्र बीमार पड़ गए थे तब उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फोन किया था। इस फोन के बाद धर्मेंद्र ने एक वीडियो में कहा था कि न जाने क्यों, आपसे बहुत प्यार है। पिछले दिनों जब मैं थोड़ा बीमार पड़ गया तो आपने फोन पर मुझसे बात की और कहा कि धर्मेंद्र तुम तो तगड़े हो, मजबूत बने रहो। उन्होंने मुझे काफ़ी हौसला दिया। मेरे अंदर ऊर्जा आ गई, मैं बहुत खुश था। हमारे देश के प्रधानमंत्री ने हमें शुभकामनाएं दी हैं और उन्होंने मेरी सेहत के बारे में मुझसे पूछा है। आपने भारत को मां कहा ही नहीं बल्कि उसे मां समझा भी है। आपने अपनी भारत मां से प्रेम किया है। आप देश को नंबर वन बनाएं।



धर्मेंद्र जी का निधन भारतीय सिनेमा के एक युग का अंत है। वे एक प्रतिष्ठित फ़िल्मी हस्ती और एक अद्भुत अभिनेता थे जिन्होंने अपनी अभिनय से अनगिनत लोगों के दिलों को छुआ। धर्मेंद्र अपनी सादगी, विनम्रता और गर्जोशी के लिए भी जाने जाते थे। इस दृश्यद घड़ी में, मेरी संवेदनाएं उनके परिवार, भित्रों और प्रशंसकों के साथ हैं। ॐ शांति।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री



सुशासन का एक ही मंत्र

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास

सुशासन का मतलब है- जन सरोकार। सामान्य मानव के जीवन को बेहतर बनाने का संस्कार। जीवन को आसान बनाने वाली व्यवस्थाओं और संसाधनों का निर्माण। शासन के केंद्र में सत्ता और सत्ताभाव नहीं, बल्कि सेवाभाव हो। साफ नीयत से, संवेदनशीलता के साथ नीतियों का निर्माण हो। प्रत्येक हकदार को बिना किसी भेदभाव के उसका पूरा हक मिले। सुशासन का यही सिद्धांत आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की पहचान बन चुकी है। सरकार की जवाबदेही बढ़ाने और लोगों में जागरूकता लाने के लिए भारत रत्न से सम्मानित पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती (25 दिसंबर) पर वर्ष 2014 में शुरू हुआ सुशासन दिवस बन गया है देश के जन-जन के भरोसे का प्रतीक...



“हमारी सरकार के लिए सुशासन का अर्थ है-

- सुनवाई, सबकी हो।
- सुअवसर, हर भारतीय को मिले।
- सुलभता, सरकार के हर तंत्र को सुनिश्चित करनी है।
- सुविधा, हर नागरिक तक पहुंचे।
- सुरक्षा, हर देशवासी अनुभव करे।

हमारे लिए सुशासन का एक ही मंत्र है, सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास। - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री